युगल शतक

श्रीमत्पदवाक्यप्रमाणपारावारीण,
वेदमार्गप्रतिष्ठापनाचार्य, निखिलदर्शन समन्वयाचार्य,
सनातनवैदिकधर्मप्रतिष्ठापनसत्संप्रदायपरमाचार्य,
भक्तियोगरसावतार, भगवदनन्त श्रीविभूषित
जगद्गुरु १००८

स्वामी श्री कृपालु जी महाराज

भावार्थ लेखिका:

सुश्री ब्रज कुंजरी देवी

(पी.एच.डी.- हिन्दी)

प्रकाशक:

राधा गोविंद समिति

एच.ए.एफ. (बी) सैक्टर १०,

द्वारका उपनगर, नई दिल्ली-४५

फोन: ५४३३३२८, ५१७५१९६

प्राप्ति स्थान:

जगद्गुरु कृपालु परिषत्

भक्ति धाम ग्राम व पो. आ. मनगढ़ (कुन्डा)

जिला- प्रतापगढ़ (उ.प्र.) पिन कोड: २२९४१७ फोन: ०५३४१-३०२८२, ३०४४२

श्यामा श्याम धाम वृन्दावन, (यू०पी०)

पिन कोड: २८१ १२४ फोन: ०५६५-५४०५३०

रँगीली महल नंदगाँव रोड, बरसाना (यू०पी०)

फोन: ०५६६२-४६२३५

प्रथम संस्करण- शरत् पूर्णिमा १३ अक्टूबर २०००

द्वितीय संस्करण- रामनवमी २१ अप्रैल २००२

सर्वाधिकार सुरक्षित © २००२

इस प्रकाशन का कोई भी हिस्सा पूर्ण या आंशिक रूप से किसी भी रूप में इलैक्ट्रॉनिक, यांत्रिक फोटोग्राफिक अभिलेखन या अन्य किसी अर्थ में प्रतिलिपि अथवा प्रसारित न किया जाय।

अनुक्रमणिका

ध्रुव पंक्ति	कीर्तन नं.	पृष्ठ सं.
अपना बनाया तोहिं कान्हा	१	३
अपनी ओर लखु राधे, राधे राधे राधे	५८	१४४
अवढर दानी राधे, ब्रज रस खानी राधे	८१	२०६
अस कब ह्वैहौं राधे, राधे राधे राधे	५९	१४७
अस मन मोहिनी राधे, राधे राधे राधे	८०	२०४
आजा प्यारी प्यारी प्यारी आजा	६०	१४९
आजा मेरे प्रानन प्यारे	१७	४४
ऊधो कहु नंद कुमार	४९	१२२
एक बात पूछूँ प्यारी	१००	२४७
ऐसी हैं मम श्यामा	८२	२०७
ओरी गोरी जोरी तोरी मोरी	३१	८१
ओली माय थुनु कह कान्ह तुतुराय	३०	७७
कब मिलिहौ नंद कुमार	१८	४६

ध्रुव पंक्ति	कीर्तन नं.	पृष्ठ सं.
करहु कृपा टुक राधे	६१	१५१
कहु माधो सों ऊधो	५०	१२४
कृपा करु कृपा करु	७२	१७३
कान्हा तू ही मेरा अब जाना	२	६
कान्हा मैंने यह जाना,	४	१२
कान्हा ने जुलुम ढाये मैया	२४	६३
कान्हा मैंने अब तोहिं जाना	३	९
कारे करतब तव कारे	२५	६६
काहे चोरा चित मोरा भोरा भारा	५	१५
कैसी माँ तू श्यामा	६२	१५३
चलु हट न लिपट लंपट	३२	८३
चोर सिरमोर काहे चोरा चित मोर	३३	८५
चलो आली देखें	९८	२४३
छुवो जनि गोरा तनु मोरा	३४	८७
छेड़ो नहिं मोहिं छोड़ो मग मम	३५	८९
जा जा जा वो ठगहार	३६	९१
जाना छलबल तव कान्हा	६	१७

अनुक्रमणिका

ध्रुव पंक्ति	कीर्तन नं.	पृष्ठ सं.
जाना तू ही मम कान्हा जाना	७	२०
जाना नहिं कोउ तोहिं कान्हा	१६	४१
जाने तोहिं तू राधे	५१	१२९
जिया नहिं जाय अब राधे	६३	१५५
जिया नहिं जाय अब तुम बिनु राधे	७५	१८१
जीवन धन नंद कुमार	८	२२
जो राधा प्राणाधार	४७	११६
तुझसा दयालु नहिं प्यारे	१०	२७
तुझसा भगोड़ा नहिं कान्हा	३७	९३
तुम मम प्रियतम कान्हा	९	२४
तुम ही मम साहूकार	२२	५४
तू कैसी मातु हमार	६४	१५७
तू तो कह मोरा छोरा भोरा	२६	६८
तोरी मोरी नाहिं बने कान्हा	३९	९७
तू नहिं मोरी मैया	२७	७०
तू ही रहु ब्रज अब मैया	२८	७२
तू ही बस इक अवतारी	११	२९

युगल-शतक

ध्रुव पंक्ति	कीर्तन नं.	पृष्ठ सं.
तू ही मेरा इक श्याम	१५	३८
तू है कोरी ओरी ब्रज गोरी	३८	९५
तोसों न निलज कोउ कान्हा	४०	९९
तोसों नहिं बोलूँ अब भूलेहुँ लम्पट	४१	१०१
तू ही मेरी स्वामिनि राधे	५२	१३१
तू ही गति तू ही मति	५७	१४२
तू ही मेरी है रँगीली महल वारी	७४	१७८
तू ही मेरी तू ही मेरी	७९	२०२
नथवारी पर वारी, वारी वारी वारी	८३	२०९
नंददुलारे प्यारे, प्यारे प्यारे प्यारे	१४	३६
प्यार वार तू का जाने कान्हा	४२	१०४
प्रान प्रान मम कान्हा, कान्हा मेरो	१२	३१
प्रेम अगाधे राधे, राधे राधे राधे	७६	१८३
प्रेम सुधा निधि राधे, राधे राधे राधे	८५	२१४
बलि अलबेली सरकार	९४	२३४
बलिहार ब्रजेन्द्र कुमार	४६	११४
बलिहार बलिहार तिन ब्रजनार	५६	१४०

अनुक्रमणिका

ध्रुव पंक्ति	कीर्तन नं.	पृष्ठ सं.
बलिहार गौर सरकार	९१	२२६
ब्रज रस अंबुधि राधे, राधे मेरी राधे	८४	२१२
बामा बना दे मोहिं श्यामा	६५	१५९
भजु मन राधा राधा राधा	५३	१३४
भले हैं बुरे हैं हैं तेरे, तेरे तेरे तेरे	१९	४७
भूलेहु भूलो जनि राधे	५४	१३६
भोरी भोरी राधा, गोरी गोरी राधा	९०	२२४
भोरी भारी प्यारी, मोहे मन बनवारी	८६	२१६
मम अलबेली सरकार	९३	२३१
मम स्वामिनि श्यामा जू	७१	१७१
मारे जनि मोहिं मोरी मैया	२९	७५
मेरा तन मन धन प्राण तेरा राधे	७३	१७५
मेरी प्यारी जू रँगीली महल वारी	९६	२३८
मेरी बरसाने वारी प्यारी	९५	२३७
मेरी तो हैं जीवन राधे	६६	१६०
मेरे नन्दनन्दन मेरे नन्दनन्दन	२३	५६
मेरो हैं साँचो यार, नट नागर नंद कुमार	४५	११२
मैं तेरी तू मेरी, मेरी राधे मेरी	६७	१६३

युगल-शतक

ध्रुव पंक्ति	कीर्तन नं.	पृष्ठ सं.
मैं हूँ तेरा पिय तू प्यारी	४३	१०७
मोहिं अपनी करु राधे	६८	१६५
मोहिं सोच तव श्यामा,	६९	१६७
रसहुँ सरस रस प्यारी	८७	२१८
रसिकन जीवन राधा	९२	२२९
राधे राधे राधे राधे राधे राधेऽऽऽ	७७	१८६
राधे राधे गोविंद राधे	७८	१८९
रो रो के पुकारुँ तोहिं कान्हा	२०	५०
लूटा तूने मेरा सब कान्हा	४४	१०९
रूप अगाधे राधे, राधे मेरी राधे	८८	२२०
वारी वनवारी पर वारी	४८	११९
वारी वारी वारी छवि राधे	९७	२४०
सदा सुहागिनि श्यामा,	८९	२२२
सुनु दाता नंदकुमार	२१	५२
सुनु सुनु ओ नंदकुमार हौं	१३	३४
सब रोग उपचार वैद्य बताय	५५	१३८
हमरिहुँ सुधि लो राधे	७०	१६९
हाय मोरा पिया बिनु	९९	२४५

श्रीकृष्ण माधुरी

१

अपना बनाया तोहिं कान्हा, कान्हा मेरे कान्हा।
तू अपनी माने या कान्हा,
नहिं माने मोहिं कान्हा, कान्हा मेरे कान्हा।
तू ही मेरा यह रह कान्हा,
भाव नित्य मम कान्हा, कान्हा मेरे कान्हा।
मैं तेरी यह भाव न कान्हा,
चह हौं सपनेहुँ कान्हा, कान्हा मेरे कान्हा।
ब्रह्मलोक तक के सुख कान्हा,
हौं न चहौं टुक कान्हा, कान्हा मेरे कान्हा।
भूलेहुँ मुक्तिहुँ चह नहिं कान्हा,
तुम न मिलहु तहँ कान्हा, कान्हा मेरे कान्हा।
बैकुंठहुँ सुख नहिं चह कान्हा,
तहँ ब्रज रस नहिं कान्हा, कान्हा मेरे कान्हा।
मथुरा द्वारवतिहुँ रस कान्हा,
ब्रज रस सम नहिं कान्हा, कान्हा मेरे कान्हा।

जब भी दो 'कृपालु' मोहिं कान्हा,
ब्रज रस ही दो कान्हा, कान्हा मेरे कान्हा।

भावार्थ—भक्त अपनी आत्मा की आत्मा श्रीकृष्ण के प्रति अपने हृदय के उद्गार प्रकट करते हुए कहता है- हे कन्हैया! मैं तो सदा सदा के लिये तुम्हें अपना बना चुका हूँ। मैं तुमसे यह आशा नहीं रखता कि तुम भी मुझे अपना बनाओ। 'तुम ही मेरे हो' (मधुस्नेह) मेरा यह भाव चिरस्थायी रहे। हे नंदनंदन! 'मैं भी तुम्हारा बनूँ' (घृत स्नेह) इस भाव को तो मैं स्वप्न में भी नहीं चाहता। हे मेरे नाथ! मेरी तुमसे अनुनय है-तुम मुझे स्वप्न में भी कभी सांसारिक सुख (ब्रह्मलोक पर्यन्त) प्रदान न करना। पुनरागति होने के कारण इन लोकों के सुख से आत्मा संतुष्ट नहीं होती। सांसारिक सुख जीव को तुमसे विमुख कर देते हैं। कुन्ती ने कहा था—

विपदः सन्तु नः शश्वत्तत्र तत्र जगद्गुरो।
भवतो दर्शनं यत्स्यादपुनर्भवदर्शनम्॥
जन्मैश्वर्यश्रुतश्रीभिरेधमानमदः पुमान्।
नैवार्हत्यभिधातुं वै त्वामकिंचन गोचरम्॥

हे श्यामसुन्दर! मैं मुक्ति का सुख भी नहीं चाहता कारण मुक्ति में सेवक-सेव्य भाव ही समाप्त हो जाता है। बूँद समुद्र में मिलकर समुद्र ही बन गई तब उस बूँद का पृथक अस्तित्व ही समाप्त हो गया। गोपियाँ कहती हैं—यद्यपि हम स्वीकार करती हैं कि श्रीकृष्ण और ब्रह्म एक ही हैं परन्तु हमें अद्वैत प्रिय नहीं।

मान्यो हम कान्ह ब्रह्म एक,
तऊ हमें भावति न भावना अन्यारी की।
जइहैं बनि बिगरि न बारिधिता बारिधि की,
बूँदता बिलैहै बूँद बिबस बिचारी की

प्रेम का रसास्वादन द्वैत में ही सम्भव है। पुनः भक्त कहता है—हे मेरे प्रेमधन! मुझे तो वैकुण्ठ का सुख भी प्रिय नहीं प्रतीत होता—कारण वहाँ लीला—सौरस्य का अभाव है। ब्रज-रस का आस्वादन वैकुण्ठ-वासी नहीं कर सकते। द्वारिका एवं मथुरा के प्रिय-जन भी ब्रजरस के प्रति उत्कंठित ही बने रहे।

सबै सरस रस द्वारिका, मथुरा अरु ब्रज माहिं।
मधुर, मधुरतर, मधुरतम, रस ब्रज रस सम नाहिं॥

[भक्ति शतक]

अतः हे ब्रजेन्द्र कुमार! हमें तो ब्रजरस की ही लालसा है। तुम अपनी इच्छानुसार जब भी कृपा करो तब हमें ब्रजरस ही प्रदान करना।

२

कान्हा तू ही मेरा अब जाना, जाना जाना जाना।
रसिकन कह तु ही स्वामी मम कान्हा,
मैं हुँ दास यह जाना, जाना जाना जाना।
रसिकन कह तु ही सखा मम कान्हा,
मैं भी सखा यह जाना, जाना जाना जाना।
रसिकन कह तू ही मम सुत कान्हा,
मैं हुँ माता पिता तव जाना, जाना जाना जाना।
रसिकन कह तू ही मेरो पिय कान्हा,
मैं हुँ तेरी प्रेयसि जाना, जाना जाना जाना।
श्रुति कह तु ही तो है अंशी मेरा कान्हा,
मैं हूँ अंश तेरा यह जाना, जाना जाना जाना।
श्रुति कह तु ही माता, पिता, भ्राता कान्हा,
सब नाता तोसों यह जाना, जाना जाना जाना।

श्रुति कह जीवन जीवन कान्हा,
तव तनु जीवन जाना, जाना जाना जाना।
श्रुति कह सब रह तुझमें ही कान्हा,
रह सब में ही तू जाना, जाना जाना जाना।
श्रुति कह जीवन कर्मन कान्हा,
तु ही लिखे फल भी दे जाना, जाना जाना जाना।
श्रुति कह जग में तू रह नित कान्हा,
जग नहिं तोमें रह जाना, जाना जाना जाना।
श्रुति कह जिसको जना दे तु ही कान्हा,
सोइ 'कृपालु' तोहिं जाना, जाना जाना जाना।

भावार्थ—भक्त श्रीकृष्ण के प्रति कहता है–हे श्रीकृष्ण! मैं अब समझ गया कि एकमात्र तुमसे ही मेरा सम्बन्ध है। हे गोविंद! तुम्हारे प्रिय भक्त-जन बताते हैं कि जीवों के एकमात्र स्वामी तुम्हीं हो, जीव तुम्हारा नित्य दास है। तुम्हारे प्रेमी जनों ने ही जगत को इस सत्य से अवगत कराया कि जीव के नित्य सखा एकमात्र तुम्हीं हो। वेद कहता है–

द्वा सुपर्णा सयुजा सखाया

हे प्रभु! तुम्हारे रसिक सन्त ही कहते हैं– तुम जगत्

पिता होकर भी जीव के भावानुसार उसके पुत्र भी बन जाते हो, क्षुद्र जीव को अपने माता पिता बनने का गौरव प्रदान करते हो।

हे नाथ! मैंने तुम्हारे प्रेमी-जनों से ही यह सुना है कि तुम मेरे प्रियतम हो और मैं तुम्हारी प्रेयसी। श्यामसुन्दर! वेद कहता है-तुम मेरे अंशी हो मैं तुम्हारा अंश।

चिन्मात्रं श्री हरेरंशम्।

वेद में तुम्हीं ने तो बताया है-तुम्हीं जीव के माता-पिता, भ्राता आदि हो। मैं अब भली प्रकार से समझ गया कि मेरे समस्त सम्बन्ध एकमात्र तुमसे ही हैं। वेद यह भी कहता है- जीवों को जीवन प्रदान करने वाले एकमात्र तुम ही हो। जीव तो तुम्हारा शरीर ही है।

य आत्मनि तिष्ठति

के अनुसार तुम सबमें रहते हो एवं सब तुममें रहते हैं। हे मेरे कृष्ण! तुमने वेद में यह भी बताया है कि समस्त जीवों के कर्मों का लेखा जोखा भी तुम्हीं रखते हो एवं कर्मानुसार जीवों को समय पर उनके कर्मों का फ़ल

भी तुम्हीं प्रदान करते हो। वेद यह भी कहता है कि जगत में तुम्हारा नित्य निवास है-

ईशावास्यमिदँ् सर्वं यत्किंच जगत्यां जगत्।

आश्चर्य तो यह है कि तुम जगत् में व्याप्त हो परन्तु जगत् तुम्हारा स्पर्श नहीं कर पाता। माया में रहकर भी तुम मायातीत हो। वेद कहता है कि तुम अपनी कृपा द्वारा जिसे अपने को जना दो वही तुम्हें जान सकता है।

यमेवैष वृणुते तेन लभ्यस्तस्यैष आत्मा विवृणुते तनूँ् स्वाम्।

रामायण कहती है-

सोइ जानइ जेहि देहु जनाई।

३

कान्हा मैंने अब तोहिं जाना, जाना जाना जाना।
जानि न सक कोउ बुधि बल कान्हा,
रसिक कृपा यह जाना, जाना जाना जाना।
हारि गये विधि हरि हर कान्हा,

तबहुँ न महिमा जाना, जाना जाना जाना।
शक्ति योगमाया है कान्हा,
कारण मैंने जाना, जाना जाना जाना।
करे असंभव संभव कान्हा,
इहै शक्ति तव जाना, जाना जाना जाना।
हो विरुद्ध कर्मी तुम कान्हा,
याते नहिं कोउ जाना, जाना जाना जाना।
आत्माराम कहत तोहिं कान्हा,
परदारा रत जाना, जाना जाना जाना।
श्रुति कह पूर्णकाम हैं कान्हा,
रास किये जग जाना, जाना जाना जाना।
सोलह सहस्त्र एक सौ कान्हा,
आठ ब्याह किये जाना, जाना जाना जाना।
प्रति नारिन दस दस सुत कान्हा,
तदपि काम नहिं जाना, जाना जाना जाना।
शत शत असुरन मारेहु कान्हा,
तदपि क्रोध नहिं जाना, जाना जाना जाना।
कार्य करे माया का कान्हा,
रहे अकर्ता जाना, जाना जाना जाना।
मन बुधि पर 'कृपालु' कह कान्हा,

याही हौं बुधि जाना, जाना जाना जाना।

भावार्थ—हे श्रीकृष्ण! रसिकों की कृपा से मैंने इस रहस्य को समझ लिया कि तुम्हें अपनी बुद्धि के बल से कोई नहीं जान सकता-

राम अतर्क्य बुद्धि मन बानी। मत हमार अस सुनहु सयानी।

भागवत कहती है—

नाहं न यूयं यदृतां गतिं विदुर्न वामदेवः किमुतापरे सुराः
तन्मायया मोहित बुद्धयस्त्विदं, विनिर्मितं चात्म समं प्रचक्ष्महे।

ब्रह्मा अपनी बुद्धि का बल लगाकर थक गये परन्तु तुम्हारी महिमा का पार नहीं पा सके। शिव एवं महाविष्णु तुम्हारे स्वांश होते हुए भी तुम्हें पूर्ण रूप से जानने में असमर्थ हैं, तुम्हें न जान सकने में तुम्हारी योगमाया ही कारण है। तुम्हारी यह पराशक्ति असम्भव को भी सम्भव कर देती है। तुम कर्तुम्, (करने योग्य) अकर्तुम् (न करने योग्य) एवं अन्यथा कर्तुम् समर्थ (उल्टा करने में समर्थ) हो। हे प्रभु! तुममें नित्य ही विरोधी धर्मों का वास है। इस विरोधाभास

के कारण ही कोई तुम्हें पहचान नहीं पाता। भागवत तुम्हें आत्माराम कहती है किन्तु ब्रज में रहते हुये तुमने पर स्त्रियों के साथ रास-विलास किया। वेद तुम्हें पूर्णकाम कहता है परन्तु तुमने सोलह हजार एक सौ आठ राजकुमारियों के साथ विवाह किया.। तुम्हारी प्रत्येक रानी के दस दस पुत्र उत्पन्न हुए परन्तु तुम काम वासना से अछूते रहे। हे केशव! तुमने सैंकड़ों राक्षसों का वध किया किन्तु क्रोध तुम्हारा स्पर्श नहीं कर सका। तुम अपनी योगमाया शक्ति के द्वारा यद्यपि माया के कार्य करते हुये से प्रतीत होते हो परन्तु वस्तुतः तो सदैव अकर्ता ही रहते हो।

कृपालु कहते हैं-मैंने तो अपनी बुद्धि से यही निर्णय किया कि श्रीकृष्ण मन एवं बुद्धि द्वारा नहीं जाने जा सकते।

४

कान्हा मैंने यह जाना, जाना जाना जाना।
तू ही मम प्रियतम है कान्हा,
वेद पुरान प्रमाना, जाना जाना जाना।

सबै ज़ीव तव प्रेयसि कान्हा,
सब का पिय तू जाना, जाना जाना जाना।
तव उपकार अमित हैं जाना,
उऋण न होइ सक कान्हा, जाना जाना जाना।
सुर दुर्लभ नर तनु श्रुति माना,
तुम दीने मोहिं कान्हा, जाना जाना जाना।
मोहिं मिलायो गुरु ते कान्हा,
गुरु ने दिय मोहिं ज्ञाना, जाना जाना जाना।
गुरु ने कही शरण गहु कान्हा,
तजु बल साधन नाना, जाना जाना जाना।
दिये और गुरु ने मोहिं ज्ञाना,
चाहहु नित सुख कान्हा, जाना जाना जाना।
यद्यपि कर्म, योग अरु ज्ञाना,
तीनिहुँ पथ बुध माना, जाना जाना जाना।
कछु बुध जन औरहु पथ माना,
सबै व्यर्थ बिनु कान्हा, जाना जाना जाना।
जाय 'कृपालु' न माया कान्हा,
कान्ह कृपा बिनु जाना, जाना जाना जाना।

भावार्थ—हे श्रीकृष्ण! मैं यह भली प्रकार से समझ

गया कि एकमात्र तुम ही मेरे प्रियतम हो। इस सत्य को वेदों ने प्रकाशित किया। विश्व के समस्त जीव तुम्हारी प्रेयसी हैं एवं तुम ही उनके प्रियतम हो। मुझे यह ज्ञात है कि तुमने मेरे साथ असंख्य उपकार किये हैं। मैं तुम्हारे किये हुए उपकारों से कभी उऋण नहीं हो सकता। शास्त्र कहते हैं–

बड़े भाग्य मानुष तन पावा। सुर दुर्लभ सद् ग्रंथनि गावा।

[राम चरित मानस]

मानव देह देवताओं के लिये भी दुर्लभ है। तुमने अपनी कृपा से सहज में ही वह मानव देह प्रदान की। मानव शरीर पाकर भी गुरु की प्राप्ति नहीं हो पाती किंतु तुमने अपनी कृपा से ही मुझे गुरु प्रदान किया। तब मुझे गुरु द्वारा ज्ञान प्राप्त हुआ। गुरु ने मुझे तुम्हारी शरणागति का मार्ग दिखाया। गुरु द्वारा ही मुझे यह रहस्य ज्ञात हुआ कि अपने साधन बल से तुम्हें कोई प्राप्त नहीं कर सकता। गुरु ने ही यह ज्ञान दिया–कि प्रेमी को प्रेमास्पद के सुख की ही कामना करनी है–विद्वानों ने तुम्हारी प्राप्ति-हेतु कर्म, योग एवं ज्ञान मार्ग बताये हैं। अन्य शास्त्रावलम्बियों

ने और भी मार्ग तुम्हारी प्राप्ति-हेतु बताये किन्तु तुम्हें छोड़कर कोई भी मार्ग तुम्हारी प्राप्ति नहीं करा सकता। तुम्हारी प्राप्ति में तो तुम्हारी कृपा ही प्रमुख कारण है। कवि के अनुसार यह दुष्कर माया तो मायापति कृष्ण की कृपा से ही जायगी।

५

काहे चोरा चित मोरा भोरा भारा छलिया,
तोरा मैंने क्या किया बुरा बता दे छलिया।
चित तो था सदा का ही साथी मोरा छलिया,
रही मेरी जमा पूँजी चित में ही छलिया।
जो जो किये मैंने सुकृत सदा ते छलिया,
चित में ही वह सबरो धरा था छलिया।
किये जो जो पाप मैंने सदा ही ते छलिया,
चित के ही साथ छिना सोउ सब छलिया।
चित में ही रहे मेरे तीनों गुण छलिया,
सोउ लिया किया मोहिं निर्गुण छलिया।

रहे चित में ही माता, पिता, सुत छलिया,
सोउ गये चित सँग क्या किया रे छलिया।
चित बिनु यह तनु तो है माटी छलिया,
चित सँग गइँ सब इंद्रिहुँ छलिया।
चित तो था एक ही न था अनेक छलिया,
दे दे चित या 'कृपालु' ले ले प्राण छलिया।

भावार्थ—कोई गोपी श्रीकृष्ण को लक्ष्य कर कह रही है-अरे भोले भाले प्रतीत होने वाले नटखट। भला मैंने, तुम्हारा क्या बिगाड़ा था ? जब से जीवात्मा है तब से चित्त भी उसके साथ जुड़ा हुआ है। कर्म संस्कार चित्त में ही एकत्रित रहते हैं। मैंने जो शुभ कर्म किये थे वे चित्त के द्वारा ही किये गये थे। अशुभ कर्म भी चित्त द्वारा ही किये जाते हैं। हे चितचोर! तुमने मेरा चित्त क्या चुराया मेरे शुभ-अशुभ कर्मों की पूंजी ही चुरा ली-बिना चित्त के कर्म भी नहीं बन सकता। वस्तुतः श्रीकृष्ण अत्यन्त ही दयामय हैं, जिस पर कृपा करके उसका चित्त चुराते हैं उसे सदा के लिये कर्म बंधन से मुक्त कर देते हैं। माया के तीनों गुण भी चित्त में ही रहते हैं, जब चित्त चुराया गया तो चित्त के साथ ही चित्त में रहने वाले सतोगुण, रजोगुण,

तमोगुण भी चले गये। जीव निर्गुण माया के गुणों से रहित हो गया। संसारी माता, पिता, पुत्र आदि भी चित्त में ही रहते हैं। चित्त के लुटने पर वे भी जीवात्मा का साथ छोड़ गये। चित्त के बिना शरीर जड़ सा ही है। इन्द्रियाँ मन के आधीन होकर ही कार्य करती हैं। चित्त के चले जाने पर उन्होंने भी शरीर का साथ छोड़ दिया। अब मन इन्द्रिय से रहित शरीर केवल मृत्तिका मात्र ही रह गया। हे छलिया कृष्ण! मन तो एक ही होता है। वह भी तुमने ले लिया अब शरीर की चेष्टायें भी किस प्रकार हों, अब तुम मेरे प्राणों को भी ले लो अन्यथा मेरे चित्त को लौटा दो।

६

जाना छलबल तव कान्हा, कान्हा कान्हा कान्हा।
दुर्वासा तेरे गुरु कान्हा,
मरम बतायो कान्हा, कान्हा कान्हा कान्हा।
वाने कही ब्रह्म तू कान्हा,
मायापति है कान्हा, कान्हा कान्हा कान्हा।

शक्ति योगमाया इक कान्हा,
तव छलबल सोइ कान्हा, कान्हा कान्हा कान्हा।
वाते जो चह सो कर कान्हा,
अति स्वतन्त्र बनि कान्हा, कान्हा कान्हा कान्हा।
जो चाहे नहिं करनो कान्हा,
वाते नहिं कर कान्हा, कान्हा कान्हा कान्हा।
जो उलटो करनो चह कान्हा,
वाही ते कर कान्हा, कान्हा कान्हा कान्हा।
वाते बिनु दृग देखे कान्हा,
सुनै कान बिनु कान्हा, कान्हा कान्हा कान्हा।
गंध ग्रहइ बिनु नासा कान्हा,
परस त्वचा बिनु कान्हा, कान्हा कान्हा कान्हा।
रसना बिनु सब रस ले कान्हा,
मन बिनु सोचै कान्हा, कान्हा कान्हा कान्हा।
सब इंद्रिन विषयन ले कान्हा,
एकहिं इंद्रिन कान्हा, कान्हा कान्हा कान्हा।
इंद्रिन कर्म करे नहिं कान्हा,
सोचि रचै जग कान्हा, कान्हा कान्हा कान्हा।
सोचि 'कृपालु' पाल जग कान्हा,
सोचि प्रलय कर कान्हा, कान्हा कान्हा कान्हा॥

भावार्थ—भक्त रसिकता की शैली में श्यामसुन्दर से कहता है—हे कृष्ण! मैं तुम्हारे छल को समझ गया। तुम्हारे गुरु दुर्वासा ने मुझे तुम्हारा रहस्य—तुम ब्रह्म हो, समझा दिया है। ब्रह्म होने के कारण तुम माया के स्वामी हो। तुम्हारी एक योगमाया शक्ति है उसी के द्वारा अनेक छलयुक्त कार्य तुम करते रहते हो। योगमायाधीश होने के कारण तुम स्वतन्त्रता पूर्वक जो चाहते हो करते हो, जो नहीं करना चाहते हो, नहीं करते। यदि विपरीत कार्य करना चाहते हो तो वह भी योगमाया द्वारा कर लेते हो। इस योगमाया शक्ति द्वारा ही तुम बिना नेत्रों के भी देख लेते हो, बिना कानों के सुनते हो। तुम बिना नासिका ही सूँघने की सामर्थ्य रखते हो। त्वचा के बिना ही स्पर्श कर लेते हो। रसनेन्द्रिय के अभाव में तुम रसास्वादन कर सकते हो। इस योगमाया की शक्ति से बिना मन के ही तुम सोचने का कार्य कर सकते हो। योगमाया शक्ति इतनी विलक्षण है कि इसके द्वारा तुम एक इन्द्रिय से समस्त इन्द्रियों के विषयों को ग्रहण कर सकते हो। योगमाया द्वारा तुम इन्द्रियों की सहायता के बिना केवल संकल्प

मात्र से सृष्टि प्रकट करते हो। संकल्प मात्र से ही विश्व का पालन करते हो। संकल्प से ही सृष्टि का प्रलय कर देते हो।

७

जाना तू ही मम कान्हा जाना, जाना जाना जाना।
तनु के जनकहिं जनकहिं माना,
जीव जनक नहिं जाना, जाना जाना जाना।
तनु की जननि जननि निज माना,
जीव जननि नहिं जाना, जाना जाना जाना।
तनु के भ्रात भ्रात निज माना,
जीव भ्रात नहिं जाना, जाना जाना जाना।
तनु के स्वामिन स्वामिन माना,
जीव स्वामि नहिं जाना, जाना जाना जाना।
तनु के सखन सखन निज माना,
जीव सखहिं नहिं जाना, जाना जाना जाना।
तनु के सुतन सुतन निज माना,
जीव सुतहिं नहिं जाना, जाना जाना जाना।

तनु के पतिन पतिन निज माना,
जीव पतिहिं नहिं जाना, जाना जाना जाना।
तनु को ही निज जीवहिं माना,
निज जीवहिं नहिं जाना, जाना जाना जाना।
तब 'कृपालु' तू ही मम माना,
रसिक कृपा जब जाना, जाना जाना जाना।

भावार्थ—हे श्यामसुन्दर! मैं तुम्हारी कृपा द्वारा इस रहस्य को जान गया कि एकमात्र तुम ही मेरे हो। अभी तक मैंने शरीर के पिता को पिता माना, आत्मा के पिता को नहीं जान सका। शरीर की माँ को ही मैं अपनी माता समझता रहा, आत्मा की माँ तुम ही हो, इस सत्य से तो मैं अपरिचित ही रहा। मैंने शरीर के भाई बन्धुओं को ही अपना माना आत्मा के बंधु तो एकमात्र तुम हो, इसे मैं नहीं समझ सका। शरीर के स्वामी को ही अज्ञान वश मैं अपनी आत्मा का स्वामी मानता रहा परन्तु जीव के तो सच्चे स्वामी तुम ही हो इसे मैं नहीं जान पाया। शरीर के मित्रों को ही मैं अपना समझता रहा, आत्मा के सच्चे सखा तुम हो इसे मैं मायावश भूला रहा। शरीर के पुत्र-पुत्री आदि को ही मैं अपना मानता रहा जीव के वास्तविक पुत्र

तुम हो, यह तो मैंने जाना ही नहीं। मैं शरीर के पति को ही अपना पति मानता रहा। आत्मा के सच्चे पति तो तुम हो यह तो मैंने जाना ही नहीं। मैं शरीर को ही आत्मा समझता रहा अतः आत्मा के स्वरूप से अनभिज्ञ रहा। हे श्रीकृष्ण! जब तुम्हारे प्रेमी जनों की कृपा मुझे प्राप्त हुई तब मैंने समझा कि मेरी आत्मा के सच्चे पिता, माता, भाई, स्वामी, मित्र, पुत्र, पति आदि एकमात्र तुम ही हो।

८

जीवन धन नंद कुमार, तन मन धन प्रानन वार।
कह वेदहु नेति पुकार, सोई है मम भरतार॥
आनँद घन तन सरकार, बह रोम रोम रस धार।
लखि कोटि काम दउँ वार, सोई है मम भरतार॥
जो मोर मुकुट सिर धार, जेहि कारी लट घुँघरार।
जेहि केशर तिलक लिलार, सोई है मम भरतार॥
जो कानन कुंडल धार, दृग कजरारे रतनार।
नासा बेसर छविदार, सोई है मम भरतार॥

जो उर कौस्तुभ मणिधार, पीतांबर छवि छविदार।
जो नटवर भेष सँवार, सोई है मम भरतार॥
जो कनकन कंकन धार, कटि काछनि छवि रिझवार।
जेहि पग नूपुर झनकार,सोई है मम भरतार॥
जो रूप सुधा रस सार,जो निराधार आधार।
ब्रजनार प्राण साकार,सोइ मम 'कृपालु' भरतार॥

भावार्थ—भक्त अपने इष्ट को सम्बोधन करता है–हे मेरे जीवन–सर्वस्व रूप नंदनंदन! मैं तुम पर अपने तन, मन, धन एवं प्राणों को न्यौछावर करता हूँ। जिस तत्व को वेद ने नेति नेति–न इति, न इति कहकर पुकारा वही श्रीकृष्ण मेरा प्राणपति है। श्याम सरकार का दिव्य शरीर आनन्दघन स्वरूप है। उस दिव्य तनु के रोम रोम से आनन्द रस की धारा प्रवाहित होती रहती है। जिसके रूप पर करोड़ों कामदेव का सौन्दर्य फीका पड़ जाता है, वही मेरा प्रियतम है। जिसके सिर पर मोर मुकुट शोभायमान है, जिसके मस्तक पर काली घुँघराली केशराशि क्रीड़ा कर रही है, जिसके ललाट पर केसर का तिलक चमक रहा है, मेरा प्राणप्रिय वही है। जिसके कर्ण कुण्डलों से विभूषित हैं, अरुणिमा युक्त नेत्रों में काजल सँवारा गया है, जिसकी

नासिका में बेसर छवि पा रही है, वही श्यामसुन्दर मेरा प्राणबल्लभ है। जिसका विशाल वक्षस्थल कौस्तुभ मणि से दैदीप्यमान है, अंग दिव्य छवि से युक्त पीताम्बर से आच्छादित है, श्रेष्ठ नट के समान जिन्होंने वेशभूषा धारण की है, वही मेरा प्राणधन है। जिनके कोमल करों में स्वर्ण कंकण धारण कराये गये हैं, सूक्ष्म कटि प्रदेश पर काछनी कसी है जिनके चरण प्रान्त नूपुरों की मधुर झनकार से युक्त हैं, वे ही मेरे प्राणपति हैं। जिनका अलौकिक रूप मानो अमृत के भी सार तत्व से निर्मित है दिव्य रूप सुधा से युक्त होकर भी जो अपनी करुणा से निराधारों के आधार स्वरूप हैं, जो ब्रजगोपियों के साकार प्राण स्वरूप ही हैं वे ही कृपालु कृष्ण मुझ अकिंचन के भी प्राण स्वरूप हैं।

९

तुम मम प्रियतम कान्हा, कान्हा कान्हा कान्हा।
हौं कान्हा अब लौं नहिं जाना,
रहेउ विमुख तव कान्हा, कान्हा कान्हा कान्हा।

तप्यो त्रितापन पापन कान्हा,
पायो जग दुख नाना, कान्हा कान्हा कान्हा।
बाँध्यो आपु आपु कहँ कान्हा,
मकड़ी जाल समाना, कान्हा कान्हा कान्हा।
भोग्यो लख चौरासी कान्हा,
योनि जनमि दुख नाना, कान्हा कान्हा कान्हा।
रसिक जनायेहु तब मैं जाना,
मैं हूँ आत्मा कान्हा, कान्हा कान्हा कान्हा।
आत्मा की आत्मा तू कान्हा
यह भी अब मैं जाना, कान्हा कान्हा कान्हा।
अब तो गह्यो शरण तव कान्हा,
जग मृग जल ज्यों जाना, कान्हा कान्हा कान्हा।
अब लौं किय मनमाना कान्हा,
अब माना मन कान्हा, कान्हा कान्हा कान्हा।
तत्व 'कृपालु' सार यह जाना,
छिन छिन भजु मन कान्हा, कान्हा कान्हा कान्हा।

भावार्थ—भक्त अपने इष्ट श्रीकृष्ण से कहता है—हे मेरे प्राण स्वरूप कृष्ण! अब मैं जान गया कि तुम ही मेरे वास्तविक प्रियतम हो। अभी तक तुमसे विमुख रहने के

कारण माया से मैं स्वयं को शरीर समझता रहा, अतः तुम्हारा मुझसे क्या सम्बन्ध है, यह मैं नहीं जान सका। तुम्हारी सन्मुखता न रहने से मैं पाप करता रहा, परिणाम स्वरूप दैहिक, दैविक एवं भौतिक तापों से तपते हुए संसार में मैंने भाँति-भाँति के दुख भोगे। अपने कर्म जाल में मैंने स्वयं ही स्वयं को फँसा लिया, जिस प्रकार मकड़ी अपने मुख से ही जाला बनाकर इसी में स्वयं फँस जाती है। माया से भ्रमित हुआ मैं चौरासी लाख योनियों में भटकता रहा। जब मुझे तुम्हारे प्रेमी भक्तों का सँग प्राप्त हुआ तब यह रहस्य मेरी समझ में आया कि मैं शरीर नहीं हूँ, तुम्हारा अंश, आत्मा हूँ। मुझ आत्मा की भी आत्मा एकमात्र तुम्हीं हो यह अब मेरी समझ में आया है। जब मैंने स्वयं को आत्मा स्वीकार किया तब तुम्हारी शरण में आया हूँ। अब स्पष्ट प्रतीत होता है कि जगत् मृग-जल के समान ही मिथ्या है। अज्ञानवश अभी तक तुम्हारे सन्मुख न होने के कारण मैं मनमानी करता रहा परन्तु अब तो मेरा मन तुम्हारे चरणों में आ गया, अतः जीवन का सार मेरी समझ में आ गया वह यह कि मन से प्रतिक्षण तुम्हारा स्मरण, भजन ही करना है।

१०

तुझसा दयालु नहिं प्यारे, प्यारे प्यारे प्यारे।
श्रुति कह जगत पिता तु ही प्यारे,
बन्यो यशुमति सुत प्यारे, प्यारे प्यारे प्यारे।
यशुमति गोद हेतु तुम प्यारे,
रोये लोट छिति प्यारे, प्यारे प्यारे प्यारे।
पूतना गरल पिलाया तोहिं प्यारे,
वाउ दीनी गति धनि प्यारे, प्यारे प्यारे प्यारे।
अघासुर, बकासुर असुरन प्यारे,
मारे पुनि तारे सब प्यारे, प्यारे प्यारे प्यारे।
अँगुठाछाप सखन को प्यारे,
बनि गयो घोड़ा प्यारे, प्यारे प्यारे प्यारे।
गोपिन नेकु छाछ पर प्यारे,
नाचे थेइ थेइ प्यारे, प्यारे प्यारे प्यारे।
तुम 'कृपालु' प्रेमिन वश प्यारे,
अब हौं जान्यो प्यारे, प्यारे प्यारे प्यारे॥

भावार्थ—हे मेरे परम प्रेमास्पद श्रीकृष्ण! सर्वत्र खोजने पर भी तुम्हारी जैसी दया करने वाला अन्यत्र प्राप्त नहीं

नहीं हो सकता, वेद तुम्हें जगत पिता कहता है किंतु अपनी भक्त वत्सलता से तुम यशोदा के पुत्र बन गये। हे मेरे प्राण प्रियतम! माता यशोदा की गोद में जाने के लिये तुम पृथ्वी पर लोटकर मचलते हो। यह तुम्हारी अकारण करुणा ही तो है। जब तुम मात्र छै दिवस के ही थे, राक्षसी पूतना ने विषयुक्त स्तन मुख में डालकर तुम्हारे प्राण लेने की चेष्टा की किंतु तुमने उसे अपनी माता मानकर अपना लोक प्रदान किया। तुम्हारी अनुपम कृपा ही तो है यह, तुम्हें धन्य है। तुमने अघासुर, बकासुर आदि राक्षसों को मारकर उनका उद्धार ही तो किया। ग्रामीण गोप सखाओं को प्रसन्न करने हेतु उनको अपनी पीठ पर चढ़ाकर, उनके घोड़े बन गये। ब्रजगोपियों की छछिया भर छाछ प्राप्त करने हेतु नाच नाच कर उन्हें रिझाते हो। हे मेरे प्रेमी प्रियतम! तुम सदैव ही अपने प्रेमियों के वश में रहते हो। तुम्हारी इस भक्त परवशता को मैंने जान लिया।

११

तू ही बस इक अवतारी बलभाय,
और भगवान अवतार कहाय।
तु ही स्वयं भगवान रसिक बताय,
और सब अवतार स्वांश कहाय।
तेरे हैं अनन्त रूप अस श्रुति गाय,
वैसे ही अनन्त नाम श्रुति बतलाय।
ज्ञानिन को तेरा रूप ब्रह्म मन भाय,
योगिन को तू ही परमात्मा लखाय।
भक्तन प्रिय छवि श्यामा श्याम आय,
जाको मन भाय यामें वामें मन लाय।
ब्रह्म में तो शक्ति न्यूनतम प्रकटाय,
याते वाय रसिकन नहिं अपनाय।
ब्रह्म रूप पाके ज्ञानी मुक्त ह्वै जाय,
किन्तु नहिं नाम रूप लीला गुण वाय।
ब्रह्म रूप अगुण अरूप कहाय,
याते यह रसिकन नाहिं सुहाय।
परमात्मा में नाम रूप गुण भाय,
सोउ लीला परिकर रहित बताय।

सब रूप षट ऐश्वर्ययुत आय,
सब सत चित आनँद कहलाय।
सब में ही सब शक्ति वेद बताय,
सबते सरस रसयुत बलभाय।
कृपा आदि गुण में ही अन्तर आय,
याते तू 'कृपालु' जनि मन भरमाय।

भावार्थ—हे श्रीकृष्ण! तुम्हारे अन्य अवतार तो अवतार हैं किंतु तुम उन अवतारों के अवतारी हो अर्थात् तुम्हारे अतिरिक्त जो अवतार हैं वे तुम्हारे स्वांश हैं।

ऐसा रसिक जन कहते हैं। वेद कहता है-तुम्हारे अनन्त नाम, रूप हैं। ज्ञानी जन तुम्हारे ब्रह्म स्वरूप की उपासना करते हैं। योगी जन तुम्हारे परमात्मा स्वरूप में अपने मन को एकाग्र करते हैं। सगुण साकार रूप के उपासक श्यामा-श्याम रूप से तुम्हारी ही अर्चना वंदना करते हैं। हे श्रीकृष्ण! तुम्हारा जो ब्रह्म-स्वरूप है उसमें शक्तियों का विकास अल्प मात्रा में ही होता है, इस कारण प्रेमी-जनों को ब्रह्म का रूप प्रिय नहीं प्रतीत होता। ब्रह्म स्वरूप की उपासना करने वाले ज्ञानी मुक्त होकर ब्रह्म में ऐक्य को प्राप्त कर लेते हैं (सायुज्य मुक्ति) ज्ञानी जन साकार के

रूप, लीला, गुणों आदि का आस्वादन नहीं कर पाते। ब्रह्म का स्वरूप निर्गुण निराकार है अतः भक्तों को यह स्वरूप आनन्द प्रदान नहीं कर पाता। परमात्मा (महाविष्णु) के उपासक योगी वैकुण्ठ को प्राप्त हो जाते हैं किंतु वहाँ भी लीला का रसास्वादन नहीं होता। यद्यपि महाविष्णु नाम, रूप, गुण से युक्त हैं परन्तु लीला एवं परिकर से रहित होने के कारण भक्तों को विशेषतः आकर्षित नहीं कर पाते। ब्रह्म, परमात्मा एवं भगवान सभी ऐश्वर्य, धर्म, यश, श्री, ज्ञान एवं वैराग्य से युक्त हैं, सभी सत्, चित् आनन्दमय हैं। ये सभी सम्पूर्ण शक्तियों से परिपूर्ण हैं। इन समस्त स्वरूपों में श्रीकृष्ण का स्वरूप अत्यधिक आकर्षक है। श्रीकृष्ण अपने प्रियजनों के प्रति अत्यन्त ही कृपालु हैं अतः रसिकों को उनका यह स्वरूप ही आनन्द प्रदान करता है।

१२

प्रान प्रान मम कान्हा, कान्हा मेरो कान्हा।
सब देहन देही करि माना,
प्रान श्रुतिन तव कान्हा, कान्हा मेरो कान्हा।

प्रानन प्रान श्रुतिन पुनि माना,
वेद वेद्य तोहिं कान्हा, कान्हा मेरो क़ान्हा।
तनु जिमि प्रान दास जग जाना,
प्रान दास तिमि कान्हा, कान्हा मेरो कान्हा।
निज दासत्व भुलायेहु प्राना,
पायेहु दुख जग कान्हा, कान्हा मेरो कान्हा।
गुरु ने ज्ञान दिया तब जाना,
मेरो स्वामी कान्हा, कान्हा मेरो कान्हा।
जग सुख विष्ठा सम अब माना,
शरण गही तव कान्हा, कान्हा मेरो कान्हा।
हौं अस पतित पतित नहिं माना,
आपुन कहँ हौं कान्हा, कान्हा मेरो कान्हा।
जग सुख सब मिथ्या बुधि जाना,
तदपि न माना कान्हा, कान्हा मेरो कान्हा।
तत्वसार अब हौं यह जाना,
कृपा याचना कान्हा, कान्हा मेरो कान्हा।
अब तो है 'कृपालु' तोहिं पाना,
जैसे भी हो कान्हा, कान्हा मेरो कान्हा॥

भावार्थ—हे मेरे प्राणों के प्राण कृष्ण! वेद ऐसा कहता

है कि सब शरीरों में प्राण ही प्रमुख है। वेदों द्वारा जानने योग्य तुम उन प्राणों के भी प्राण हो। संसार में ऐसा देखा जाता है कि शरीर का स्वामी प्राण है शरीर प्राणों का दास है, उसी प्रकार प्राण भी तुम्हारा दासत्व करता है। तुम्हारी शक्ति के बिना प्राण भी स्वतन्त्र रूप से कोई चेष्टा करने में असमर्थ है। प्राणों ने जब से अपने धर्म (तुम्हारी सेवा) को भुलाया तभी से प्राणी संसार में नाना प्रकार के कष्ट पा रहे हैं। गुरु द्वारा प्रदत्त ज्ञान से जब जीव यह जान लेता है कि उसके स्वामी एकमात्र तुम ही हो तब उसे सांसारिक सुख (धन, मान आदि) विष्ठा के समान ही प्रतीत होने लगते हैं। संसार से वैराग्य होने पर ही तुम्हारी शरण में जीव आता है। हे मेरे परम पावन प्रभु! मैं तो स्वयं को पतित भी स्वीकार नहीं करता ऐसा विचित्र पतित हूँ मैं। हे श्यामसुन्दर! मेरी बुद्धि संसार के सुखों को असत्य समझती है किंतु मेरी विवशता तो यही है कि मैं अपने मन के वशीभूत होकर संसार में पुनः आसक्त हो जाता हूँ। मेरा वैराग्य श्मशान वैराग्य है। सत्संग द्वारा मैंने यही सार निकाला कि तुम्हारे समक्ष दीन बनकर मैं तुमसे तुम्हारी

कृपा की याचना करूँ। कभी तो तुम अपनी कृपा दृष्टि का अधिकारी मुझे बना ही लोगे। हे मेरे जीवन! मेरे सर्वस्व! जिस किसी भी प्रकार से प्राणों की बाजी लगाकर भी अब तो तुम्हें प्राप्त करने का दृढ़ संकल्प कर लिया है।

१३

सुनु सुनु ओ नंदकुमार,तव माया शक्ति अपार।
विधि हरि हर हूँ गये हार, हौं शरण शरण सरकार॥
कह नेति नेति श्रुति चार, ज्ञानिहुँ नहिं पायो पार।
तव लीला अपरंपार, हौं शरण शरण सरकार॥
तू दीनन को रखवार, अस कह सब संत पुकार।
तू अधम उधारन हार, हौं शरण शरण सरकार॥
तू निर्बल बल रिझवार, तू निराधार आधार।
तू कृपा रूप साकार, हौं शरण शरण सरकार॥
तव नामहिं मम आधार, तू रह नामहिं रिझवार।
दे दे 'कृपालु' कहँ प्यार, हौं शरण शरण सरकार॥

अर्थ—हे नंदनंदन! कुछ मेरी भी पुकार सुनो! तुम्हारी

अपार माया शक्ति से तो सृष्टिकर्ता ब्रह्मा, विष्णु एवं शिव भी पराजित हो गये।

शिव विरंचि कहँ मोहइ, को है बपुरा आन।

मैं क्षुद्र जीव भला उसका सामना किस प्रकार कर सकता हूँ अतः हे मायापति! उससे भयभीत होकर मैंने तुम्हारी शरण ग्रहण की है। चारों वेद तुम्हारी लीला का वर्णन करते हुए अन्त में 'न इति' 'न इति' ही कहते हैं। जब बड़े-बड़े ज्ञानी भी तुम्हारी लीला के अभिप्राय को समझने में असमर्थ ही रहते हैं तब मेरे जैसा एक साधारण जीव तुम्हारी लीलाओं के रहस्य को कैसे जान सकता है? सभी सन्त पुकार-पुकार कर कह रहे हैं– तुम दीनों की रक्षा करते हो। तुम्हें अधमों का उद्धारकर्ता जानकर ही मैं तुम्हारे शरणापन्न हुआ हूँ। हे रसिकशेखर! निर्बलों के एकमात्र बल तुम्हीं हो। निराधारों का आधार तुम्हारे अतिरिक्त दूसरा कौन है? हे गोविंद! तुम्हें कृपा की साकार प्रतिमा जानकर ही मैंने तुम्हारी शरण ग्रहण की है। हे नाथ! तुम अपने नाम में नित्य निवास करते हो अतः मैंने आपके पुनीत नाम का आश्रय लिया है। हे मेरे सर्वश्रेष्ठ स्वामी! मैं तुम्हारी शरण हूँ। मुझे अपना निष्काम प्रेम प्रदान करो।

१४

नंददुलारे प्यारे, प्यारे प्यारे प्यारे।
हमहूँ तो हैं अंश तिहारे,
वेद पुरान पुकारे, प्यारे प्यारे प्यारे।
अंश न हों अंशी ते न्यारे,
जल तरंग जनु प्यारे, प्यारे प्यारे प्यारे।
आत्माहू आत्मा तुम प्यारे,
चारिहुँ वेद पुकारे, प्यारे प्यारे प्यारे।
तेरी माया ते तो हारे,
शिव सनकादिक सारे, प्यारे प्यारे प्यारे।
तेरी अनुकंपा चह सारे,
ब्रह्मादिक भी प्यारे, प्यारे प्यारे प्यारे।
कर्मी, ज्ञानी, योगी सारे,
चहत कृपा तव प्यारे, प्यारे प्यारे प्यारे।
तुम ही हो आधार हमारे,
तुम बिनु हम नहिं प्यारे, प्यारे प्यारे प्यारे।
आत्मा रह भीतर तव प्यारे,
तबहूँ मोहिं बिसारे, प्यारे प्यारे प्यारे।

अब 'कृपालु' अस करु कछु प्यारे,
होयँ न हम तुम न्यारे, प्यारे प्यारे प्यारे।

भावार्थ—हे नन्दलाल! तुम्हारे वेदों ने घोषणा की है कि हम जीवात्मा तुम्हारे ही अंश हैं। गीता में भी तुमने कहा-**ममैवांशो जीवलोके जीवभूतः सनातनः**। हे मेरे प्रियतम! जिस प्रकार जल से तरंग पृथक नहीं हो सकती इसी प्रकार तुम्हारा अंश स्वरूप जीवात्मा तुम अंशी से पृथक होकर अपना अस्तित्व ही खो बैठेगा। मेरे प्राणों के प्राण! तुम मेरी आत्मा की आत्मा हो, ऐसा चारों वेद पुकार पुकारकर कह रहे हैं। हे श्यामसुन्दर! शिव एवं सनकादिक जैसे योगी एवं ब्रह्मचारी महापुरुष भी तुम्हारी माया को जीतने में असमर्थ रहे। (शिव मोहिनी अवतार को देखकर काम विवश हो गये। सनकादिक को वैकुण्ठ के द्वार पर प्रवेश किये जाने से रोकने पर वे क्रोधाभिभूत हो गये।) ब्रह्मा सृष्टिकर्ता हो कर भी तुम्हारी माया से मोहित हो जाते हैं अतः तुम्हारी कृपा की ही याचना करते हैं। कृष्णावतार में वन भोजन के समय ग्वालों की जूठन खाते हुए गोपाल का दर्शन कर ब्रह्मा मोह को प्राप्त हो गये थे। कर्मकाण्डी, ज्ञानी एवं योगी अपनी साधना में सफलता

पाने हेतु तुम्हारी कृपा की ही प्रतीक्षा करते हैं। हे मेरे प्राणपति! हमारे एकमात्र आश्रय तुम ही हो। तुम्हारे बिना हमारा जीवन मृत्यु से भी कष्टप्रद है। हे नाथ! मुझे आश्चर्य तो इस बात का है कि मेरी आत्मा निरन्तर तुममें ही निवास करती है। परन्तु मुझे तुम्हारे सामीप्य का अनुभव नहीं होता। तुमने मुझे क्यों भुला दिया है? हे मेरे परम प्रेमी प्रभु! अब तो ऐसा कुछ उपाय करो जिससे कि अनन्त काल के लिये हमारा तुम्हारा मिलन हो जाय पुनः कभी बिछुड़ना न हो।

१५

तू ही मेरा इक श्याम, मैं भी इक तेरा श्याम,
तेरे अगनित जन श्याम, जय जयति जयति जय श्याम।
तू ही मम माता श्याम, है पिता एक तू श्याम,
हौं तो हूँ तव सुत श्याम, जय जयति जयति जय श्याम।
तू ही मम अंशी श्याम, तव अंश जीव मैं श्याम,
तू विभु मैं अणु हूँ श्याम, जय जयति जयति जय श्याम।
तू ही मम प्रेरक श्याम, तव प्रेर्य जीव मैं श्याम,
तू चेतन चेतन श्याम, जय जयति जयति जय श्याम।

तू ही मम शासक श्याम, तव शास्य जीव मैं श्याम,
तू ही मम आश्रय श्याम, जय जयति जयति जय श्याम।
तू सर्वशक्ति युत श्याम, मैं अल्पशक्ति युत श्याम,
मैं अज्ञ विज्ञ तू श्याम, जय जयति जयति जय श्याम।
तू ही मम स्वामी श्याम, तव दास जीव मैं श्याम,
तू ही मम देही श्याम, जय जयति जयति जय श्याम।
तू ही मम दाता श्याम, मैं तो तव भिक्षुक श्याम,
तू ही गति मति रति श्याम, जय जयति जयति जय श्याम।
तू है मायापति श्याम, माया अधीन मैं श्याम,
तेरे सम तू ही श्याम, जय जयति जयति जय श्याम।
तू दीनबंधु है श्याम, मैं दीन हीन हूँ श्याम,
तू कृपा सिंधु है श्याम, चह कृपा 'कृपालुहुँ' श्याम।

भावार्थ—हे श्यामसुन्दर! मेरे तो एकमात्र तुम ही हो। तुम्हारे अगणित भक्त हैं उनमें से एक मुझे भी समझ लेना। तुम्हारी सदा ही जय हो। हे श्यामसुन्दर मेरी माता एवं पिता एकमात्र तुम ही हो। मैं तुम्हारा पुत्र हूँ। हे नाथ! तुम्हारी सदा ही जय हो। श्यामसुंदर! तुम मेरे अंशी हो मैं तुम्हारा अंश जीव हूँ। हे प्रभु! तुम व्यापक हो मैं अणु स्वरूप हूँ। तुम मेरे मन, बुद्धि आदि को प्रेरणा देने वाले

प्रेरक हो मैं तुम्हारे द्वारा प्रेरित होकर चेष्टा करता हूँ। तुम तो **चेतनश्चेतनानाम** चेतनों के भी चेतन हो। तुम्हारी सदा ही विजय हो। तुम मेरे शासक हो। मैं तुम्हारे द्वारा शासित हूँ। मेरे एकमात्र अवलम्ब तुम ही हो। तुम्हारी सदा ही जय हो।

तुम सर्व शक्ति सम्पन्न हो मैं अल्प शक्तिमान हूँ। मैं तो अत्यन्त अज्ञानी हूँ तुम ज्ञान से परिपूर्ण ईश्वर हो। तुम मेरे स्वामी हो, मैं तुम्हारा दास हूँ। तुम मुझ आत्मा के निवास स्थान हो। तुम-प्रेम भिक्षा देने वाले अद्वितीय दाता हो, मैं तुम्हारे द्वार का भिक्षुक। हे श्यामसुन्दर मेरी गति, मति, रति सब कुछ तुम ही हो तुम तो माया के स्वामी हो मैं माया के आधीन एक साधारण जीव। तुम्हारे समान तो एक तुम ही हो।

निरुपम न उपमा आन''' तुम्हारे जैसा दीनवत्सल अन्य कोई नहीं दिखाई देता। हे कृपा के समुद्र ! मैं तुम्हारी कृपा की याचना करता हूँ।

१६

जाना नहिं कोउ तोहिं कान्हा, कान्हा कान्हा कान्हा।
श्रुति तव वचन सनातन कान्हा,
नेति नेति कह कान्हा, कान्हा कान्हा कान्हा।
श्रुति कह अगनित गुनयुत कान्हा,
कह निर्गुण हूँ कान्हा, कान्हा कान्हा कान्हा।
श्रुति कह अगनित नामहिं कान्हा,
पुनि अनाम कह कान्हा, कान्हा कान्हा कान्हा।
श्रुति कह निराकार है कान्हा,
कह साकारहुँ कान्हा, कान्हा कान्हा कान्हा।
श्रुति कह निर्विशेष है कान्हा,
कह सविशेषहुँ कान्हा, कान्हा कान्हा कान्हा।
श्रुति कह जग भीतर रह कान्हा,
कह जग बाहर कान्हा, कान्हा कान्हा कान्हा।
श्रुति कह जगत रूप है कान्हा,
कह जग ते पर कान्हा, कान्हा कान्हा कान्हा।
श्रुति कह जगत पिता हैं कान्हा,
कह यशुमति सुत कान्हा, कान्हा कान्हा कान्हा।

श्रुति कह अति 'कृपालु' हैं कान्हा,
कह समदर्शिहुँ कान्हा, कान्हा कान्हा कान्हा॥

भावार्थ—हे श्रीकृष्ण! तुम्हें अपने बुद्धिबल से भला कौन जान सका है। वेद अनादि है, तुम्हारे श्रीमुख की ही वाणी है। वह वेद तुम्हारी महिमा का गान करते-करते अन्त में नेति नेति कहकर विश्राम प्राप्त कर लेता है। वेद की वाणी में विरोधाभास है। वह तुम्हें अनन्त दिव्य गुणों (प्रेम, कृपा, रूप) से परिपूर्ण कहकर पुनः निर्गुण (प्रकृति के गुणों से सर्वथा रहित) कहता है। वेद के अनुसार तुम अनन्त नामों से युक्त हो किन्तु पुनः वही वेद तुम्हें अनाम (नाम से रहित) कहता है। वेद तुम्हें निराकार एवं साकार दोनों ही प्रकार का बतलाता है। वेद के अनुसार तुम निर्विशेष एवं सविशेष दोनों ही हो। वेद तुम्हें विश्वरूप भी कहता है एवं विश्व से परे भी बताता है।

वेद कहता है– तुम जगत के भीतर बाहर सब जगह हो। एक स्थान पर वेद तुम्हें विश्वरूप घोषित करता है तथा दूसरे स्थान पर वही वेद चेतावनी देता है कि जगत के प्रपंच का त्यागकर सम्पूर्ण भाव से ईश्वर के शरणापन्न

हो जाना चाहिए। वेद तुम्हें जगत् का पिता कहता है। समय के अनुसार तुम यशोदा के पुत्र भी बन जाते हो। पुनः वेद ईश्वर को समदर्शी एवं न्यायी कहता है परन्तु भक्तों के प्रेम के वशीभूत हो तुम उनके प्रति अत्यन्त कृपालु बन जाते हो।

जेहि अघ बधेउ व्याध जिमि बाली। पुनि सुकंठ सोइ कीन्ह कुचाली।
सोई करतूति विभीषन केरी। सपनेहुँ सो न राम हिय हेरी।

दुर्योधन का श्रीकृष्ण से कोई बैर नहीं था। वह तो केवल पाण्डवों से ही द्वेष करता था। पाण्डव श्रीकृष्ण के शरणागत थे अतः श्रीकृष्ण को कौरवों पर कोप करना पड़ा। भगवान कहते हैं—

हम भक्तन के भक्त हमारे।
सुन अर्जुन प्रतिज्ञा मेरी, यह व्रत टरत न टारे।
देखु विचार भक्ति हित कारण, हाँकत हौं रथ तेरो।
जो भक्तन सों बैर करत हैं, सो है बैरी मेरो।

१७

आजा मेरे प्रानन प्यारे, प्यारे प्यारे प्यारे।
मम कछु साधन बल नहिं प्यारे,
दीन हीन हौं प्यारे, प्यारे प्यारे प्यारे।
तू कह निर्मल मन मोहिं प्यारे,
कृपा पात्र बन प्यारे, प्यारे प्यारे प्यारे।
को भयो विमल कृपा बिनु प्यारे,
नाम बता दे प्यारे, प्यारे प्यारे प्यारे।
मन में तो माया तेरी प्यारे,
को जीता तेहिं प्यारे, प्यारे प्यारे प्यारे।
मन ते तो हारे ज्ञानिहुँ प्यारे,
भरत बने मृग प्यारे, प्यारे प्यारे प्यारे।
तू तो कर प्यार पतित सों प्यारे,
अस कह रसिकन प्यारे, प्यारे प्यारे प्यारे।
परम पतित 'कृपालु' हौं प्यारे,
पावन करु द्रुत प्यारे, प्यारे प्यारे प्यारे॥

भावार्थ—हे प्राणप्रियतम कृष्ण! हमारे नेत्रों के समक्ष

आकर एक बार तो अपनी झलक दिखा दो। हे नाथ। मेरे पास तुम्हें रिझाने के लिये कोई भी गुण, विद्या अथवा धन आदि का साधन नहीं है। तपश्चर्या, ज्ञान आदि साधन बल से भी रहित हूँ। मैं तो अत्यन्त ही दीन हीन हूँ। तुम्हें तो शुद्ध हृदय वाली आत्मा ही प्रिय है। शुद्ध अन्तः करण ही तुम्हारी कृपा का पात्र बन सकता है। हे श्यामसुन्दर! मैं तुमसे यह प्रश्न पूछता हूँ कि तुम्हारी कृपा के बिना क्या कोई पापात्मा कभी पवित्र बन सकी है। यदि ऐसा है तो एक का भी नाम बता दो। मन माया के आधीन है अतः इस मन को जीतना तो अत्यन्त ही कठिन है। बड़े-बड़े ज्ञानी एवं योगी भी इस माया के समक्ष पराजित हो गये। राजर्षि भरत ने राज्य त्यागकर वन में साधना की परन्तु अंतिम समय में मृग-शावक का चिंतन हो जाने से उन्हें मृग का शरीर धारण करने को विवश होना पड़ा। तुम्हारे सन्त तो कहते हैं कि तुम्हारा सहज स्नेह पतितों को ही प्राप्त होता है। मैं तो अत्यन्त ही पतित हूँ अतः मुझे पावन बनाने में आनाकानी न करो। शीघ्रता करो।

१८

कब मिलिहौ नंद कुमार, तुम मातु पिता भरतार।
यह कह तेरी श्रुति चार, अब सुन लो मोर पुकार॥
तव अगनित जन सरकार, हमरे इक तुम आधार।
दुख पाये विविध प्रकार, अब सुन लो मोर पुकार॥
लख चौरासी तनु धार, जनमेउ जग बारंबार।
रह देखत तुम सरकार, अब सुन लो मोर पुकार॥
तव माया तो सरकार, बहिरंगा शक्ति तिहार।
सब जगहिं नचावन हार, अब सुन लो मोर पुकार॥
माया तव बल सरकार, ब्रह्मादि नचावन हार।
का शक्ति 'कृपालु' हमार, अब सुन लो मोर पुकार॥

भावार्थ—भक्त प्रार्थना करते हुए कहता है—हे नन्द के लाड़िले लाल! मेरे जीवन में वह सौभाग्यशाली दिन कब आयेगा जब मैं सदा-सदा के लिये तुम्हें अपना बना लूँगा। चारों वेद पुकार-पुकार कर कह रहे हैं कि तुम ही मेरे माता, पिता एवं पति हो। अत: मेरा करुण क्रन्दन सुनकर आनाकानी न करो। मैं स्वीकार करता हूँ कि तुम्हारे तो सभी जीव हैं—**जीव अनन्त एक भगवन्ता।**

परन्तु मेरे आश्रय-स्थल तो एकमात्र तुम ही हो। मैंने अभी तक माया के कारण तुमसे विमुख होकर अत्यन्त दुख पाये हैं। दैहिक दैविक भौतिक तापों से तप्त हुआ मैं अब तुम्हारे द्वार पर आया हूँ, अब देर न करो। चौरासी लाख शरीर धारण कर असंख्य बार संसार में जन्म लेता रहा। तुम तटस्थ बनकर सब कुछ देखते रहे। अब तो मेरी सुधि लो। तुम्हारी माया बहिरंगा शक्ति होने के कारण सम्पूर्ण जगत पर शासन कर रही है। इस माया से मुझे बचा लो। तुम्हारी शक्ति पाकर तुम्हारी दैवी माया ब्रह्मा को भी नहीं छोड़ती तब फिर हमारे जैसों की तो गणना ही क्या है।

१९

भले हैं बुरे हैं हैं तेरे, तेरे तेरे तेरे।
वचन वेद में है यह तेरे,
सबै जीव सुत तेरे, तेरे तेरे तेरे।
श्रुति कह बिना अनुग्रह तेरे,
जानि न सक सुत तेरे, तेरे तेरे तेरे।

इक ते इक बढ़ि सुत सब तेरे,
परम भक्त हैं तेरे, तेरे तेरे तेरे।
जाने कोउ जनाये तेरे,
अहै हाथ सब तेरे, तेरे तेरे तेरे।
ज्ञान दिये अब रसिकन तेरे
एक श्याम हैं तेरे, तेरे तेरे तेरे।
चरन शरन तब आये तेरे,
सब तजि बनि गये तेरे, तेरे तेरे तेरे।
नाम गुनन गावत अब तेरे,
धरत ध्यान नित तेरे, तेरे तेरे तेरे।
नामहिं रह तू कह जन तेरे,
नाम बना दे तेरे, तेरे तेरे तेरे।
कबहुँक बनि जैहैं हम तेरे
यह आशा बल तेरे, तेरे तेरे तेरे।
हैं 'कृपालु' जो निज जन तेरे,
सोइ प्रेम दे तेरे, तेरे तेरे तेरे॥

भावार्थ—भक्त कहता है–हे श्रीकृष्ण! हम अच्छे या बुरे जैसे भी हैं हैं तो तुम्हारे ही। वेद में तुमने कहा है– **अमृतस्य वै पुत्राः** अर्थात् सभी जीव तुम्हारी सन्तान हैं।

वेद यह भी कहता है कि तुम्हारी अनुकम्पा के बिना तुम्हारा अंश जीव तुम्हें जान नहीं सकता। मैं स्वीकार करता हूँ कि संसार में तुम्हारे जीव तुम्हारे प्रति भक्तिमान हैं। उन भक्तों में सभी एक दूसरे से बढ़कर हैं किंतु इतना भी निश्चित है कि तुम्हारे जनाने से ही किसी ने तुम्हें जाना है।

सोइ जानइ जेहि देहु जनाई।

अत: किसी भी जीव को तुम जैसा चाहो बना सकते हो। तुम्हारे लिये क्या कठिन है। मुझे तो तुम्हारे प्रेमीजनों ने यही बताया है कि एक श्रीकृष्ण ही तुम्हारे हैं। मैंने उन रसिकजनों की बात मानकर सबका आश्रय त्यागकर अब तुम्हारे चरणों की शरण ग्रहण की है। अब तो हम निरन्तर तुम्हारा ही गुणगान करते हैं। मन से भी सतत तुम्हारा ही ध्यान चिंतन करते हैं। तुम्हारे भक्तों के कथनानुसार तुम्हारे नाम में ही तुम्हारा वास है। नाम लेकर जीव तुम्हारी कृपा को प्राप्त कर लेता है। (बाल्मीक इस तथ्य के प्रमाण स्वरूप हैं, ध्रुव प्रह्लाद मीरा ने भी तुम्हें नाम के द्वारा प्राप्त किया)

ध्रुव सगलानि जपेउ हरि नामू, पायेउ अचल अनूपम ठामू।

तुम्हारे नाम के बल पर हमें भी विश्वास है कि कभी हमें भी तुम्हारी कृपा प्राप्त होगी? तुम्हारे अपने प्रेमी जन ही किसी को तुम्हारा प्रेम प्रदान कर सकते हैं।

२०

रो रो के पुकारूँ तोहिं कान्हा, कान्हा कान्हा कान्हा।
मेरो कोइ साधन बल नहिं कान्हा,
तू ही मम बल कान्हा, कान्हा कान्हा कान्हा।
तू तो अकिंचन का ही बस कान्हा,
मैं भी तो अकिंचन कान्हा, कान्हा कान्हा कान्हा।
काहुहिं कर्मयोग बल कान्हा,
विधि निषेध युत कान्हा, कान्हा कान्हा कान्हा।
काहुहिं कठिन योगबल कान्हा,
अष्ट अंग युत कान्हा, कान्हा कान्हा कान्हा।
काहुहिं ज्ञान योग बल कान्हा,
शम दमादि युत कान्हा, कान्हा कान्हा कान्हा।

काहुहिं भक्तियोग बल कान्हा,
श्रुति विधान युत कान्हा, कान्हा कान्हा कान्हा।
हमरे तो बल बस इक कान्हा,
नाम कीर्तन कान्हा, कान्हा कान्हा कान्हा।
निज नामहिं रह तू नित कान्हा,
उर प्रतीति यह कान्हा, कान्हा कान्हा कान्हा।
नाम अधीन रहत तू कान्हा,
गुरु ने बताया कान्हा, कान्हा कान्हा कान्हा।
लो अपनाय कृपालुहिं कान्हा,
तुम 'कृपालु' अति कान्हा, कान्हा कान्हा कान्हा॥

भावार्थ—हे श्रीकृष्ण! मैं तुम्हें नित्य ही रो रोकर बुला रहा हूँ। मुझे अपनी साधना का बल नहीं है। मेरे तो एकमात्र बल तुम ही हो। मैंने सुना है– तुम अकिंचनों के ही परम धन हो मैं भी तो अकिंचन हूँ।

नहिं विद्या नहिं बाहु बल, नहिं खर्चन को दाम।
मो से पतित अपंग की, तुम पत राखो राम।

हे श्रीकृष्ण! किसी साधक को तो वैदिक विधि-निषेध युक्त कर्मकाण्ड का आधार है, किसी को अष्टांग योग पर

विश्वास है। कोई मनुष्य श्रवण, मनन, निदिध्यासन आदि से युक्त ज्ञानयोग के बल से बलवान है। कोई वैधी भक्ति द्वारा तुम्हें प्रसन्न करना चाहता है। हे श्यामसुन्दर! हमें तो एकमात्र तुम्हारे नाम संकीर्तन का ही बल है। हे कृष्ण! मुझे ऐसा दृढ़ विश्वास है कि तुम अपने नाम में सदा सर्वदा वर्तमान रहते हो। मेरे गुरु ने मुझे यह रहस्य बता दिया है कि तुम नाम के आधीन हो। **ब्रह्म राम ते नाम बड़**। हे कृपालु कृष्ण! मुझे भी अब अपना बना लो।

२१

सुनु दाता नंदकुमार, हौं पतितन को सरदार।
तू पतितन सुनत पुकार, चह भीख प्रेम सरकार॥
रिरियात परो तव द्वार, तू प्रेम रूप साकार।
टुक हमरिहुँ ओर निहार, चह भीख प्रेम सरकार॥
जग सुख नहिं चह रिझवार, चह मुक्ति न पाँच प्रकार।
चह नहिं वैकुण्ठ बिहार, चह भीख प्रेम सरकार॥
इक रही पूतना नार, विष प्यायो तोहिं उर धार।
गति दीनी तुम बलिहार, चह भीख प्रेम सरकार॥

हौं जानत तुम मम यार, परखत मोहिं भुजहिं पसार।
तव अति 'कृपालु' दरबार, चह भीख प्रेम सरकार॥

भावार्थ—हे जगत् के एकमात्र दानी श्रीकृष्ण! मैं पतितों का सरताज हूँ। मैंने ऐसा सुना है कि तुम पतितों की पुकार सुनते हो। मुझे तुमसे केवल निष्काम प्रेम की ही भिक्षा चाहिये। हे नन्दनंदन! मैं तुम्हारे द्वार पर पड़ा हुआ गिड़गिड़ा रहा हूँ। तुम तो पवित्र प्रेम की जाग्रत प्रतिमा ही हो। हमारे ऊपर भी अपनी किंचित् कृपा-दृष्टि कर दो। हमें तुम्हारे प्रेम की ही पिपासा है। हे रसिक शिरोमणि! हमें तुमसे संसार के सुख नहीं चाहियें। पाँचों प्रकार की मुक्तियों (सालोक्य, सामीप्य, सार्ष्टि, सारूप्य, एकत्व) की कामना भी मैं तुमसे नहीं करता। मुझे वैकुण्ठ-विलास की भी इच्छा नहीं है। मुझे तो दिव्य प्रेम की ही चाह है। राजा बलि की कन्या-रत्नावली ने जो कृष्णावतार में पूतना बनी, तुम्हें अपने अंक में धारण कर दुग्धपान कराने के बहाने से विष पिलाया, तुमने उसका स्तनपान कर उसे अपनी माता स्वीकार कर लिया। प्रसन्नता पूर्वक तुमने उस विष पिलाने वाली को भी अपना गोलोक प्रदान

कर दिया। वस्तुतः तुम्हारे जैसा उदार दानी-शिरोमणि अन्य कौन होगा? मैं जानता हूँ कि तुम्हीं मेरे सच्चे सखा हो। तुम तो भुजाओं को पसार कर मुझे हृदय से लगा लेने को उत्सुक हो। तुम्हारे दरबार में तो नित्य कृपा की ही वर्षा हो रही है अतः मुझे भी प्रेम-भिक्षा प्रदान करो।

२२

तुम ही मम साहूकार, हम ऋणियाँ नंदकुमार।
तुम्हरे अगनित उपकार, हम मानत तव आभार॥
दिय मानव तनु सरकार, जेहि लहि पहुँचत तव द्वार।
कह सुर दुर्लभ श्रुति चार, हम मानत तव आभार॥
तव अनुकंपा सरकार, गुरु मिले किये उपकार।
दीने मोहिं ज्ञान अपार, हम मानत तव आभार॥
मम उर बस नंदकुमार, दे शक्ति मोहिं सरकार।
दे फल कर्मन अनुसार, हम मानत तव आभार॥
किय प्रकट वेद सरकार, जामें इक भक्ति तिहार।
ढिग मोर 'कृपालु' निहार, हम मानत तव आभार॥

भावार्थ-हे श्रीकृष्ण! तुम मुझे ऋण देने वाले मेरे

साहूकार हो तथा मैं सदैव तुम्हारा ऋणी ही रहूँगा। तुम्हारे असंख्य उपकारों से मैं दबा हुआ हूँ। मैं तुम्हारा आभारी हूँ। जिस शरीर से तुम्हारी प्राप्ति सुलभ है वह देवदुर्लभ मानव-शरीर तुमने मुझे अपनी अकारण करुणा से ही प्रदान किया—

कबहुँक करि करुणा नर देही। देत ईश बिनु हेतु सनेही।

अतः मैं तो तुम्हारे आभार को स्वीकार करता हूँ। तुम्हारी अहैतुकी कृपा से ही मुझे गुरु प्राप्ति हुई, जिन्होंने मुझे अपार ज्ञान प्रदान किया। इसलिये भी मैं तुम्हारा आभारी हूँ। हे श्रीकृष्ण मेरे हृदय में रहकर तुम मेरे इन्द्रिय, मन आदि को तत्कर्म करने की शक्ति प्रदान करते हो। हमारे पूर्वकाल के किये हुये कर्मों का फल भी हमें तुम ही प्रदान करते हो अतः इस कारण से भी हम तुम्हारे आभारी हैं। तुमने प्रलय-काल में लुप्त हुए वेदों को जिनमें तुम्हारी भक्ति का निरूपण किया गया है, पुनः प्रकट किया अतः मैं तुम्हारा आभारी हूँ। अब तो मेरी ओर भी अपना कृपा कटाक्ष करो।

२३

मेरे नँदनन्दन मेरे नँदनन्दन।
अपना बना ले मोहिं मेरे नँदनन्दन।
मेरे नँदनन्दन मेरे नँदनन्दन।
दरस दिखा दे टुक मेरे नँदनन्दन।
मेरे नँदनन्दन मेरे नँदनन्दन।
प्रेम सुधा दे टुक मेरे नँदनन्दन।
मेरे नँदनन्दन मेरे नँदनन्दन।
निज सेवा दे मोहिं मेरे नँदनन्दन।
मेरे नँदनन्दन मेरे नँदनन्दन।
जन सेवा दे मोहिं मेरे नँदनन्दन।
मेरे नँदनन्दन मेरे नँदनन्दन।
तू ही मेरा मैं भी तेरा मेरे नँदनन्दन।
मेरे नँदनन्दन मेरे नँदनन्दन।
भूलो जनि कभु मोहिं मेरे नँदनन्दन।
मेरे नँदनन्दन मेरे नँदनन्दन।
मैं ना भूलूँ कभु तोहिं मेरे नँदनन्दन।
मेरे नँदनन्दन मेरे नँदनन्दन।

मेरे थे हो रहोगे भी मेरे नँदनन्दन।
मेरे नँदनन्दन मेरे नँदनन्दन।
पाछा नहिं छोड़ूँ तेरा मेरे नँदनन्दन।
मेरे नँदनन्दन मेरे नँदनन्दन।
लागी नहिं छूटे अब मेरे नँदनन्दन।
मेरे नँदनन्दन मेरे नँदनन्दन।
जग छूटे तू ना छूटे मेरे नँदनन्दन।
मेरे नँदनन्दन मेरे नँदनन्दन।
उर ते जो जा तो जानूँ मेरे नँदनन्दन।
मेरे नँदनन्दन मेरे नँदनन्दन।
मैं हूँ तेरा तू भी मेरा मेरे नँदनन्दन।
मेरे नँदनन्दन मेरे नँदनन्दन।
उर ते लगा ले मोहिं मेरे नँदनन्दन।
मेरे नँदनन्दन मेरे नँदनन्दन।
प्यारी कहि के बुला ले मेरे नँदनन्दन।
मेरे नँदनन्दन मेरे नँदनन्दन।
जित देखुँ तित तोहिं मेरे नँदनन्दन।
मेरे नँदनन्दन मेरे नँदनन्दन।
रिद्धि सिद्धि माँगूं नहिं मेरे नँदनन्दन।

मेरे नँदनन्दन मेरे नँदनन्दन।
सातों स्वर्ग माँगूं नहिं मेरे नँदनन्दन।
मेरे नँदनन्दन मेरे नँदनन्दन।
पाँचों मुक्ति माँगूं नहिं मेरे नँदनन्दन।
मेरे नँदनन्दन मेरे नँदनन्दन।
शिशु क्रन्दन माँगूं मेरे नँदनन्दन।
मेरे नँदनन्दन मेरे नँदनन्दन।
अष्टयामी सेवा माँगूं मेरे नँदनन्दन।
मेरे नँदनन्दन मेरे नँदनन्दन।
तव रुचि मेरी रुचि मेरे नँदनन्दन।
मेरे नँदनन्दन मेरे नँदनन्दन।
तो पै वारी-वारी जाऊँ मेरे नँदनन्दन।
मेरे नँदनन्दन मेरे नँदनन्दन।
हरि हर मोहन मेरे नँदनन्दन।
मेरे नँदनन्दन मेरे नँदनन्दन।
उमा रमा मोहन मेरे नँदनन्दन।
मेरे नँदनन्दन मेरे नँदनन्दन।
मुक्त जन मोहन मेरे नँदनन्दन।
मेरे नँदनन्दन मेरे नँदनन्दन।

तू ही माता पिता भ्राता मेरे नँदनन्दन।
मेरे नँदनन्दन मेरे नँदनन्दन।
स्वामी सखा सुत पिय मेरे नँदनन्दन।
मेरे नँदनन्दन मेरे नँदनन्दन।
तो पै तन-मन वारूँ मेरे नँदनन्दन।
मेरे नँदनन्दन मेरे नँदनन्दन।
करूँ कोटि वंदन मेरे नँदनन्दन।
मेरे नँदनन्दन मेरे नँदनन्दन।
भलो बुरो जो हूँ तेरो मेरे नँदनन्दन।
मेरे नँदनन्दन मेरे नँदनन्दन।
तेरो है भरोसो भारी मेरे नँदनन्दन।
मेरे नँदनन्दन मेरे नँदनन्दन।
दीन मैं तू दीनबन्धु मेरे नँदनन्दन।
मेरे नँदनन्दन मेरे नँदनन्दन।
तू पतित-पावन मेरे नँदनन्दन।
मेरे नँदनन्दन मेरे नँदनन्दन।
तेरे अगनित तू ही मेरे नँदनन्दन।
मेरे नँदनन्दन मेरे नँदनन्दन।
बिगरी बना दे मेरी मेरे नँदनन्दन।

मेरे नँदनन्दन मेरे नँदनन्दन।
सत चित सुख घन मेरे नँदनन्दन।
मेरे नँदनन्दन मेरे नँदनन्दन।
मदनहुँ मोहन मेरे नँदनन्दन।
मेरे नँदनन्दन मेरे नँदनन्दन।
निज मन मोहन मेरे नँदनन्दन।
मेरे नँदनन्दन मेरे नँदनन्दन।
त्रिभुवन मोहन मेरे नँदनन्दन।
मेरे नँदनन्दन मेरे नँदनन्दन।
मोहिनि मोहन मेरे नँदनन्दन।
मेरे नँदनन्दन मेरे नँदनन्दन।
शिव शुक मोहन मेरे नँदनन्दन।
मेरे नँदनन्दन मेरे नँदनन्दन।
तुझ सा 'कृपालु' नहिं मेरे नँदनन्दन।

भावार्थ—हे मेरे नन्दनन्दन! तुम मुझे सदा सदा के लिये अपना बना लो। एक बार कृपा करके अपनी मनोहर झाँकी का दर्शन मुझे भी करा दो। तुम तो प्रेमामृत के सागर हो। किंचित् प्रेम-कण मुझे भी प्रदान करो। तुम मुझे अपनी सेवा का सौभाग्य कब प्रदान करोगे? यदि

अपनी सेवा न दे सको तो अपने प्रेमी-जनों की सेवा का सौभाग्य ही मुझे दे दो। हे नन्दकुमार! मेरे तो एकमात्र तुम्हीं हो, मैं भी तो एकमात्र तुम्हारा ही हूँ। कृपा करके तुम मेरा विस्मरण न करना। मैं भी कभी तुम्हें न भुलाऊँ। तुम सदा से मेरे थे। वर्तमान में भी एकमात्र तुम ही मेरे हो तथा भविष्य में भी केवल तुम ही मेरे रहोगे। मैं तुम्हारा पीछा नहीं छोड़ूंगा। अब जो लगन तुमसे लग चुकी है उसका छुटाना कठिन है। भले ही सम्पूर्ण विश्व मेरा त्याग कर दे परन्तु मैं तुम्हें नहीं छोड़ूंगा। हे श्यामसुन्दर! यदि तुम मुझसे दूर भागना चाहते हो तो तनिक मेरे हृदय से निकलकर दिखाओ। मैं तुम्हारा हूँ, तुम भी मेरे बनकर दिखा दो। एक बार मुझे अपने हृदय से लगाकर 'प्यारी' कहकर मुझे बुला लो। ऐसा कब होगा जब मैं जिधर दृष्टि डालूँ उधर तुम ही तुम दिखाई दो? हे मेरे प्रभु! मैं तुमसे कभी ऋद्धियों, सिद्धियों की याचना नहीं करता। मैं तुमसे सातों प्रकार के स्वर्ग भी नहीं चाहता। पाँचों प्रकार की मुक्तियाँ भी मुझे नहीं चाहिये। मैं भोले-भाले नवजात शिशु की भाँति रो-रोकर सदा तुम्हें पुकारता रहूँ। अष्ट याम

सेवा मुझे प्रदान करो। मैं सदा तुम्हारी रुचि में ही रुचि रखूँ। अपना तन, मन, प्राण सदा तुम पर न्यौछावर करता रहूँ। हे मेरे नन्दलाल! तुम्हारा रूप तो ब्रह्मा, विष्णु एवं शिव को भी मोहित कर देने वाला है। तुम उमा, रमा के भी मन को मोहित करने वाले हो। संसार बन्धन से जो मुक्त जन हैं उनके भी मन को तुमने लुभाया है। हे प्रभु! अब तो तुम ही मेरे माता, पिता एवं भाई बन्धु हो। तुम ही मेरे स्वामी, सखा, पुत्र एवं प्रियतम हो। मैं अपना तन, मन, धन तुम पर न्यौछावर करता हूँ। मैं करोड़ों बार तुम्हारा वंदन करता हूँ। मैं अच्छा हूँ तो बुरा हूँ तो तुम्हारा ही तो हूँ। मुझे तुम्हारा ही भरोसा है। हे दीनों के एकमात्र बंधु! मैं तो अत्यन्त ही दीन हीन हूँ। तुम पतितों को पावन करने वाले हो। तुम्हारे तो असंख्य प्रिय भक्त हैं किन्तु मेरे तो एकमात्र तुम ही हो। मेरी बिगड़ी को तुम ही बनाने वाले हो। हे नंदनंदन! तुम सत, चित, आनंदघन स्वरूप हो। कामदेव को भी मोहित करने वाले तुम हो। अपने रूप लावण्य पर तुम स्वयं भी मुग्ध हो जाते हो। त्रिभुवन के समस्त चराचर प्राणी तुम्हारे रूप पर मोहित हो जाते हैं। तुम मनमोहिनी राधा के चित्त को भी चुराते हो। सनक

आदि के मन को भी तुमने अपनी चरण-गंध से मधुकर बना लिया। अनन्त गुण गण से विभूषित होते हुए भी तुम अत्यन्त कृपालु हो।

२४

कान्हा ने जुलुम ढाये मैया, मैया मैया मैया।
सखिन सतावत नित प्रति मैया,
तू कह भोरो मैया, मैया मैया मैया।
तोरत लर फोरत घट मैया,
फारत चूनरि मैया, मैया मैया मैया।
कबहुँ दिखाव अँगूठा मैया,
कबहुँ मार दृग मैया, मैया मैया मैया।
कबहुँ कहत मोहिं 'प्यारी' मैया,
कबहुँक 'भाभी' मैया, मैया मैया मैया।
कबहुँ ब्याहु करु मोते मैया,
इमि कहि लिपटत मैया, मैया मैया मैया।
जो हौं कहौं 'कहौं जा मैया,
तो कह 'जा कहु मैया, मैया मैया मैया।

चोरी करत फिरत नित मैया,
दधि माखन चित मैया, मैया मैया मैया।
तू छोटो सो मानत मैया,
बड़ो होत द्रुत मैया, मैया मैया मैया।
कबहुँ पकरि पावूँ जब मैया,
बनि जाय मम पति मैया, मैया मैया मैया।
यह 'कृपालु' मायावी मैया,
मायापति है मैया, मैया मैया मैया॥

भावार्थ—किसी ब्रजगोपी ने बालकृष्ण की चंचलता से खीझकर यशोदा मैया से कहा—अरी यशोदा मैया! तुम्हारे कन्हैया ने तो सारे ब्रज को सिर पर उठा रखा है! नित्य ही तुम्हारा लाला ब्रजगोपियों को छेड़ता रहता है। परन्तु तुम तो उसे अत्यन्त भोला-भाला ही समझती हो। अरी मैया! वह हम सबके गले की माला को तोड़ देता है। जब हम सब सखियाँ जल भरने के लिये यमुना तट पर जाती हैं। तब हमारे घड़े फोड़ देता है। हमारी सिर की चुनरी भी वह फाड़ देता है। हे यशोदे! तुम अपने पुत्र की करतूतों को नहीं जानती हो। कभी तो वह हम सबको अँगूठा

दिखाता है, कभी नेत्रों से कटाक्षपात करता है। कभी 'प्यारी' कहकर तो कभी भाभी कहकर सखियों से हास-परिहास करता है। तुम्हारा लाला देखने में ही छोटा प्रतीत होता है बातें तो बड़ों की सी करता है। कभी तो कहता है कि मेरे साथ अपना विवाह कर लो ऐसा कहकर अत्यन्त रसपूर्ण ढंग से मुझसे लिपट जाता है। यदि मैं उसे भयभीत करने के लिये कहती हूँ कि अभी तुम्हारी मैया से शिकायत करने जा रही हूँ तो निःशंक होकर कहता है—जा जा मैया से कह दे। हे यशोदे! यह कृष्ण हमारे घर के दही माखन तो चुराता ही है हमारे चित्त की भी चोरी करता है। तुम तो अपने पुत्र को छोटा सा बालक ही समझती हो परन्तु यह अत्यन्त शीघ्रता से बड़ा हो जाता है। यदि इसे पकड़कर तुम्हारे पास लाने का विचार करती हूँ तो यह मेरे पति का रूप धारण कर लेता है। यशोदे! तुम्हारा यह नन्हा सा लाल अत्यन्त मायावी है। मायापति होने के कारण यह अपनी माया से बड़ों-बड़ों को भी नचाता रहता है।

२५

कारे करतब तव कारे, कारे कारे कारे।
काउ के हैं तन कारे काउ के हैं मन कारे,
तेरे तन मन दोउ कारे, कारे कारे कारे।
तू तो अभी सात बरस को है कारे,
का रे करे बड़ो हो के कारे, कारे कारे कारे।
तुने जनमत ही जुलुम ढारे कारे,
तजि माता पिता भजे कारे, कारे कारे कारे।
ठगे पुनि नंद यशोमति कारे,
बनि गये तिन सुत कारे, कारे कारे कारे।
छठी के दिनहिं तूने पूतना मारे,
पुनि तिन दीनी गति कारे, कारे कारे कारे।
सखन सतावत दिन महँ कारे,
रात सखिन कहँ कारे, कारे कारे कारे।
मात पिता बंदी गृह कारे,
भोगत रह दुख कारे, कारे कारे कारे।
तू रह रास करत इत कारे,
धनि तो सम सुत कारे, कारे कारे कारे।

दुर्वासाहूँ कह तोहिं कारे,
हैं 'कृपालु' हरि कारे, कारे कारे कारे।

भावार्थ—किसी सखी ने अत्यन्त रसिकता की शैली में श्रीकृष्ण से कहा–हे कृष्ण! तुम्हारी करतूत अत्यन्त काली है। किसी का शरीर काला होता है किसी का मन। तुम्हारे तो तन और मन दोनों ही काले हैं। अरे कृष्ण! अभी तो तू सात वर्ष का ही है जब अभी से तुम्हारा यह हाल है तो तुम बड़े होकर क्या-क्या नहीं करोगे? तुमने जन्म लेते ही अपने माता-पिता (वसुदेव देवकी) के साथ अत्यन्त कपट पूर्ण व्यवहार किया। तुम अपने माता-पिता को त्याग कर जेल से भागकर गोकुल पहुँच गये। गोकुल में जाकर नंद और यशोदा के साथ भी छल किया। पुत्र तो तुम वसुदेव और देवकी के थे परन्तु भोली यशोदा ने तुम्हें अपने उदर से उत्पन्न हुआ जानकर अत्यन्त लाड़ से तुम्हारा पालन-पोषण किया। वृद्धावस्था में पुत्र हुआ, जान बेचारे नंद भी आनन्द मनाने लगे। जन्म के छठे दिन ही तुमने पूतना राक्षसी को मृत्यु के घाट उतार दिया एवं उसको सदा के लिये जन्म-मृत्यु से मुक्त कर दिया। दिन में गोचारण

के समय सखाओं को तंग करते हो। किसी से खेल में हारकर उसका दाँव नहीं देते। किसी से अपनी गायें हँकवाते हो। किसी का कलेवा छीनकर दूसरों को बाँट देते हो। रात्रि में मुरली बजाकर गृह-कार्य में संलग्न ब्रज-ललनाओं के चित्त चुराकर उन्हें वन-वन भटकाते हो। तुम्हारे माता-पिता (वसुदेव, देवकी) ग्यारह वर्ष तक कंस के कारागार में भयानक कष्ट भोगते रहे। तुम ब्रज में रास रचाते रहे। संसार में भी ऐसा कोई पुत्र नहीं होगा जो माता-पिता को दुख में पड़ा देखकर भी चिरकाल तक उनकी कोई चिंता न करे। तुम्हारे गुरु दुर्वासा तो तुम्हें कृपालु ही घोषित करते हैं।

२६

तू तो कह मोरा छोरा भोरा, भोरा भोरा भोरा।
सखि कह सुनु यशुमति तव छोरा,
परम चतुर नहिं भोरा, भोरा भोरा भोरा।
सखिन सतावत नित यह छोरा,
तव सन्मुख रह भोरा, भोरा भोरा भोरा।

सब सों कह हौं ही पिय तोरा,
कैसे कह तू भोरा, भोरा भोरा भोरा।
दृग मिलाय सखियन चित चोरा,
अबहुँ मान तू भोरा, भोरा भोरा भोरा।
काउ घट फोरा काउ लर तोरा,
धनि धनि छोरा भोरा, भोरा भोरा भोरा।
जानत जादू यह सुत तोरा,
बाहर ते बन भोरा, भोरा भोरा भोरा।
कह 'कृपालु' मैया मत मोरा,
सचमुच तव सुत भोरा, भोरा भोरा भोरा।

भावार्थ—कोई ब्रजगोपी यशोदा से कहती है–मैया! तुम तो कहती हो कि तुम्हारा कृष्ण बड़ा भोला-भाला है यह तो अत्यन्त चतुर है। यह कृष्ण रोज ही ब्रज-बालाओं को तंग करता रहता है और तुम्हारे समक्ष भोला भाला बन जाता है। यह सबसे कहता रहता है कि मैं ही तेरा प्रियतम हूँ फिर भी तुम कहती हो कि मेरा पुत्र भोला भाला है। नेत्रों से कटाक्ष पात कर यह सखियों के चित्त को चुराता रहता है। तुम तो कृष्ण की माँ हो अतः उसे भोला ही कहोगी। हे यशोदे! यह कृष्ण किसी के जल के घड़े को फोड़ देता है, किसी के गले

के हार को तोड़ देता है फिर भी तुम उसे भोला भाला कहती हो, ऐसे भोले भाले कृष्ण को धन्य है। यशोदा! तुम्हारा यह पुत्र बड़ा जादूगर है। बाहर से भोला भाला दिखाई देता है। कवि कहते हैं–हे यशोदा! मेरे विचार से तो तुम्हारा पुत्र भोला भाला ही है।

२७

तू नहिं मोरी मैया, मैया मैया मैया।
यशुमति सों अस कहत कन्हैया,
अब न कहौं तोहिँ मैया, मैया मैया मैया।
मोहिं किय कारो गोरो भैया,
किय दुभाँति कत मैया, मैया मैया मैया।
आपु कहत कारो मोहिं भैया,
सखहुँ सिखावत मैया, मैया मैया मैया।
सखन करत हाँसी सँग भैया,
मोहिं रुवावत मैया, मैया मैया मैया।
सब कह गोरो तेरो भैया,
गोरो बाबा मैया, मैया मैया मैया।

पायो परो कतहुँ कह भैया,
मम उर संशय मैया, मैया मैया मैया।
अबहूँ करि दे कारो भैया,
मोहिं गोरो करु मैया, मैया मैया मैया।
जनि रोवहु धरु धीर कन्हैया,
''करि दूँगी,, कह मैया, मैया मैया मैया।
उर 'कृपालु' चिपटाय कन्हैया,
तू मम सुत कह मैया, मैया मैया मैया।

भावार्थ—श्रीकृष्ण माता यशोदा से कहते हैं–अरे मैया! तू मेरी मैया नहीं है। मैं अब तुझसे मैया कहकर नहीं बोलूँगा। तूने बलदाऊ भैया को तो गोरा बना दिया, मुझे काला बनाया यह दो प्रकार का व्यवहार तुमने क्यों किया? अरी मैया! दाऊ भैया स्वयं तो मुझे काला काला कहकर चिढ़ाते ही हैं साथ ही ग्वाल बालों को भी सिखा देते हैं। सारे सखा दाऊ भैया के साथ मिलकर मेरी हँसी उड़ाते हैं मुझे रुलाते हैं। बालकृष्ण पुनः यशोदा से कहते हैं कि ग्वाल बाल मुझसे कहते हैं– तुम्हारे भैया बलदाऊ तो गोरे हैं नंद एवं यशोदा भी गौर वर्ण के हैं, तुम काले कैसे हो गये? दाऊ भैया मुझसे कहते हैं कि तुमको मैया

ने जन्म नहीं दिया है कहीं पड़ा पाया है। दाऊ भैया की बात सुनकर मुझे भी संदेह हो जाता है कि कदाचित् दाऊ भैया ही सत्य कहते हैं। मैं तुम्हारा पुत्र नहीं हूँ। पुनः बालकृष्ण अपनी माता से हठ करते हैं– मैया! तुम दाऊ भैया को अभी-ही काला और मुझे गोरा बना दो। वात्सल्य मयी यशोदा ने अपने लाड़ले की भोली बातें सुनीं और कहने लगीं– मेरे कान्हा! धैर्य धारण करो। रोओ मत। मैं अभी ही दाऊ को काला और तुम्हें गोरा बना दूँगी। यशोदा ने कृष्ण को हृदय से लगा लिया और उन्हें सान्त्वना देने लगीं। यशोदा कहती हैं– हे कन्हैया! तू ही मेरा पुत्र है।

२८

तू ही रहु ब्रज अब मैया, मैया मैया मैया।
अति करि दीनी कन्हैया मैया,
सहि न जाय अब मैया, मैया मैया मैया।
हम जब जाँय यमुन तट मैया,
खरो रहै तहँ मैया, मैया मैया मैया।

काहु फोरे घट मैया, मैया मैया मैया।
छोटो अति खोटो यह मैया,
खोले घूँघट मैया, मैया मैया मैया।
नैनन बान चलावत मैया,
घायल कर सखि मैया, मैया मैया मैया।
कबहुँ बिरावत दशनन मैया,
जीभ दिखावत मैया, मैया मैया मैया।
पुनि कह हौं तेरो पिय मैया,
तू हूँ कह पिय मैया, मैया मैया मैया।
सुनि गारी दारी के मैया,
कह पुनि पुनि दे मैया, मैया मैया मैया।
जो दौरूँ पकरन कहँ मैया,
होय अलक्षित मैया, मैया मैया मैया।
जादूगर 'कृपालु' यह मैया,
हारे हरि हर मैया, मैया मैया मैया॥

भावार्थ—ब्रज गोपियाँ यशोदा को उलाहना दे रही हैं–हे यशोदा! अब तो ब्रज में केवल तुम और तुम्हारा पुत्र कृष्ण ही रहेगा। अरी मैया! कन्हैया ने तो चंचलता की पराकाष्ठा कर दी। अब तक हमने सहन कर लिया अब

की पराकाष्ठा कर दी। अब तक हमने सहन कर लिया अब हमसे सहन नहीं होगा। पुनः गोपियाँ यशोदा से कहती हैं—हम सब जब जल भरने अथवा स्नान करने हेतु यमुना के तट पर जाती हैं तब तुम्हारा नटखट पुत्र पहले से ही वहाँ जाकर खड़ा हो जाता है। जब हम निकट पहुँचती हैं तब वह किसी गोपी के हृदय का हार तोड़ डालता है एवं किसी का जलपूर्ण घट फोड़ देता है। यह है तो छोटा परन्तु अत्यन्त ढीठ है। ब्रजगोपियों के घूँघट खोल देता है। अपने नेत्रों द्वारा रसभरे कटाक्षपात करके सखियों को घायल करता रहता है। किसी को दाँत दिखाकर चिढ़ाता है तो कभी जीभ निकालकर बिराता है। किसी सखी से कहता कि मैं तेरा पति हूँ तू अपने मुख से मुझे अपना प्रियतम कह। यदि कोई गोपी इसे 'दारी के' गाली देती है तो प्रसन्न होकर कहता है कि पुनः गाली दे। यदि कोई सखी इसको पकड़ने को दौड़ती है तो यह तत्काल अदृश्य हो जाता है। मैया! तुम्हारा यह पुत्र तो बड़ा जादूगर है। इससे तो विष्णु एवं शिव भी हार मान गये।

२९

मारे जनि मोहिं मोरी मैया, मैया मैया मैया।
झूठहिं दोष लगायो मोहिं भैया,
मैंने नहिं माटी खायो मैया, मैया मैया मैया।
तू तो कह मैया जैयो जनि बिच गैया,
मारे काउ गैया मैया, मैया मैया मैया।
ला बहोरि गैया कह भैया,
आजु गयो नहिं मैया, मैया मैया मैया।
आजु दौर महँ हार्‍यो भैया,
खीझ्यो औरहुँ मैया, मैया मैया मैया।
चलु ढिग मैया इमि कहि भैया,
मोहिं डरपायेहु मैया, मैया मैया मैया।
पुनि कहि सखन कान कछु भैया,
सखन मिलायो मैया, मैया मैया मैया।
सखन करत सोइ जो कह भैया,
मैं रह इकलो मैया, मैया मैया मैया।
मोहिं रुवावत रह नित भैया,
कारो कहि कहि मैया, मैया मैया मैया।

बात 'कृपालु' कहत जो भैया,
मानि लेति तू मैया, मैया मैया मैया॥

भावार्थ—बालकृष्ण अपनी माता यशोदा से कह रहे हैं–अरी मैया! मुझे मारे मत। तू बलदाऊ की बात का तो विश्वास कर रही है परन्तु तुझे मेरी बात का विश्वास नहीं है। दाऊ भैया ने मेरे ऊपर झूठा दोष लगाया है। मैंने तो मिट्टी खायी ही नहीं है। मैया! तुम मुझसे कहतीं थीं कि गायों के बीच में मत जाना। कभी कोई गाय मार देगी। दाऊ भैया ने मुझसे गायों को एकत्रित करने को कहा मैंने तुम्हारी बात मानी गायों को वन से लौटाने के लिये मैं नहीं गया। खेल में सखाओं के साथ जब दाऊ भैया खेल रहे थे तब दौड़ में वे हार भी गये थे। दाऊ भैया ने मुझसे कहा कि आज मैया के निकट चलो ऐसा कहकर मुझे डराया। सखाओं के कान में भी दाऊ भैया ने कुछ कहकर उन्हें अपने पक्ष में कर लिया। सारे ग्वाल बाल भी वही करते हैं जो बलदाऊ भैया कहते हैं। मैं तो अकेला ही पड़ जाता हूँ। इसके अतिरिक्त दाऊ भैया मुझे काला काला कहकर रुलाते भी हैं। श्यामसुन्दर पुनः माता यशोदा से

कहते हैं कि दाऊ भैया तुमसे जो कुछ भी कहते हैं, तुम उनकी बात का विश्वास कर लेती हो।

३०

ओली माय थुनु कह कान्ह तुतुराय।
दुलु बिनु ग्यान नहिं कभु कोउ पाय॥
हाँ हाँ लाला गुरु ही दे ज्ञान कह माय।
तूने यह कैसे जाना मोय तो बताय॥
आजु रह्यो खेलत सखा सँग माय।
यमुना के तट तहँ ब्रजवासी आय॥
इतने में तहँ दुर्वासा मुनि आय।
पुनि मुनि प्रवचन दिये तहँ माय॥
मुनि ने बताया जीव अज्ञानी आय।
गुरु ज्ञान बिनु अज्ञान नहिं जाय॥
पुनि मुनि कह जीव ब्रह्म अंश आय।
जीव का तो लक्ष्य ब्रह्म प्राप्ति बताय॥
मुनि कह तनु को तो माटी ने बनाय।
पुनि मरि तनु माटी महँ मिलि जाय॥

तनु जासों पले जासों बढ़े सोउ माय।
अन्न जल आदि को भी माटी उपजाय॥
हाँ हाँ लाला ऐसा ही है साँचो कह माय।
कह कान्ह याते वाय गुरु हौं बनाय॥
दुर्वासा तो हैं बड़े गुरु कह माय।
अच्छा किया लिया वाय गुरु जो बनाय॥
मुनि तनु को तो माटी पुतला बताय।
इस पुतले को जीव चेतन नचाय॥
इक बात समझ में नहिं आय माय।
तोसों पूछूँ माय वाय तू ही समुझाय॥
माटी ते बना है तनु माटी पाले वाय।
अंत में भी तनु माटी महँ मिलि जाय॥
पुनि माटी खाने को तू रोके काहे माय।
दूध दही आदि को भी माटी उपजाय॥
लाला की चालाकी को समुझि गई माय।
माय ने कही सुनु सुनु बलभाय॥
बड़े बड़े तरु भी तो माटी उपजाय।
देखु उत लाला हाँ हाँ देखूँ देखूँ माय॥
ऐसे ही जो लाला तू माटी नित खाय।
बड़े बड़े तरु सोइ माटी उपजाय॥

निकलेंगे उदर ते तरु कह माय।
नाक कान मुख ते वे बाहर आय॥
पुनि झूलें झूला डारि सखा समुदाय।
पुनि तू भी रोये कहे माय बचाय॥
भोरो कान्ह मानि गयो कह्यो पुनि माय।
अब न कबहुँ तेरो कान्ह माटी खाय॥
अभी तो तू भोरो भारो छोटो बलभाय।
बड़ा हो 'कृपालु' गुरु मुनि को बनाय॥

भावार्थ—बालगोपाल तुतलाते हुए यशोदा मैया से कहते हैं अरी मैया! मैंने सुना है कि बिना गुरु के ज्ञान प्राप्त नहीं होता। यशोदा ने उत्तर दिया–लाला! ठीक ही है बिना गुरु के ज्ञान प्राप्त नहीं होता किंतु तुमने यह कैसे जाना कि गुरु से ही ज्ञान प्राप्त होता है। बाल गोपाल मैया को उत्तर देते हैं। मैया! आज मैं सखाओं के साथ यमुना किनारे खेल रहा था वहाँ पर कुछ ब्रजवासी आये। उसके पश्चात् दुर्वासा मुनि भी वहाँ आये। दुर्वासा ने उन्हें उपदेश दिया। ऋषि ने ब्रजवासियों से कहा–जीव का अज्ञान गुरु द्वारा दिये हुए ज्ञान से ही जाता है। दुर्वासा मुनि ने अपने उपदेश में बताया कि जीव ब्रह्म का अंश है। इसलिये

जीव का एकमात्र लक्ष्य ईश्वर प्राप्ति ही है। ऋषि ने कहा कि शरीर मिट्टी का ही बना हुआ है। मरने के बाद भी मिट्टी में ही मिल जाता है। अन्न, जल आदि जिससे कि शरीर की वृद्धि एवं पोषण होता है वे भी मिट्टी (पृथ्वी) से ही उत्पन्न होते हैं। माता यशोदा ने कहा–कन्हैया! दुर्वासा मुनि ने ठीक ही कहा है कन्हैया ने माता से कहा मैंने दुर्वासा को अपना गुरु बना लिया है। माता यशोदा बोलीं–दुर्वासा तो बहुत बड़े गुरु हैं, तुमने जो उन्हें अपना गुरु स्वीकार कर लिया। वह उचित ही किया है। कन्हैया माता यशोदा से कहने लगे–चेतन जीव मिट्टी के पुतले शरीर को अपनी इच्छानुसार चलाता है ऐसा मेरे गुरु दुर्वासा ने बताया। मैया! मेरी समझ में एक बात नहीं आती है उस बात को तुम ही समझा दो। बात यह है कि शरीर मिट्टी से ही बना है। मिट्टी से ही उसका पोषण होता है, अन्त में भी मिट्टी में ही मिल जाता है। फिर तुम मुझे मिट्टी खाने से रोकती क्यों हो?

दूध, दही आदि भी तो मिट्टी से ही उत्पन्न होते हैं। माता यशोदा अपने पुत्र की चतुराई को समझकर बोलीं–

लाला! मिट्टी से ही बड़े-बड़े वृक्ष भी उत्पन्न होते हैं। यदि तुम मिट्टी खाओगे तो उस मिट्टी से पेट में बड़े-बड़े वृक्ष उत्पन्न हो जायेंगे। तुम्हारे पेट से, नाक, कान और मुख से भी फिर वे वृक्ष बाहर निकलेंगे। तुम्हारे मनसुखा आदि सखा उन वृक्षों पर झूला डालकर झूलेंगे। फिर तुम रोकर मुझसे कहोगे कि मेरी रक्षा करो। इस प्रकार भोले भाले कन्हैया ने माँ के डराये जाने पर मिट्टी न खाने की बात स्वीकार कर ली। कन्हैया कहने लगे– मैं अब कभी मिट्टी नहीं खाऊँगा यशोदा बोलीं– कन्हैया! अभी तुम छोटे हो जब बड़े हो जाओगे तब दुर्वासा मुनि को अपना गुरु बना लेना।

३१

ओरी गोरी जोरी तोरी मोरी, मोरी मोरी मोरी।
सखि कह तू कारो मैं गोरी,
कस तू जोरी मोरी, मोरी मोरी मोरी।
परम अभागिनि सोई गोरी,
जो हो तोरी जोरी, मोरी मोरी मोरी।

तू लम्पट जानति सब गोरी,
नहिं जानति अस को री, मोरी मोरी मोरी।
ब्रज गोरी घर घर कर चोरी,
को चह बननो जोरी, मोरी मोरी मोरी।
बरबस काहुहिं गर लर तोरी,
काहुहिं दिय घट फोरी, मोरी मोरी मोरी।
काहुहिं तूने बाँह मरोरी,
काहुहिं लिय चित चोरी, मोरी मोरी मोरी।
सब कह हैं द्वै मैया तोरी,
भयो जगत अस को री, मोरी मोरी मोरी।
सब सौंइ कह तू मोरी जोरी,
आव न कोउ ठगोरी, मोरी मोरी मोरी।
कह 'कृपालु' इक याकी जोरी,
मथुरा कुबरी गोरी, मोरी मोरी मोरी।

भावार्थ—श्रीकृष्ण किसी गोपी से कहते हैं- सखी! तेरी मेरी जोड़ी बड़ी अच्छी रहेगी। सखी ने उत्तर दिया- तुम तो काले हो मैं गोरी हूँ, तुम्हारे साथ मेरी जोड़ी नहीं बनेगी। श्रीकृष्ण से आत्मीयता रखने वाली गोपी रसिकता वश कह रही है- जिसका विवाह तुम्हारे साथ होगा वह

तो अत्यन्त भाग्यहीना है। तुम तो ब्रज की प्रत्येक कुमारी एवं विवाहिता से प्रेम करते हो तुम्हारे इस स्वभाव से तो सभी ब्रजांगनायें परिचित हैं फिर तुमसे कौन विवाह करना चाहेगी? तुम अत्यन्त निरंकुश हो। किसी के गले की माला को तोड़ते हो, किसी का जल से भरा घड़ा फोड़ देते हो। किसी की बाँह मरोड़ देते हो। किसी के चित्त को चुरा लेते हो। ब्रजवासी इस बात को जानते हैं कि तुम्हारी दो मातायें (देवकी एवं यशोदा) हैं। संसार में तो ऐसा कहीं भी नहीं देखा गया। प्रत्येक ब्रज-गोपी से तुम कहते फिरते हो कि तू मेरी जोड़ी की है, तुम्हारे छल में अब कोई नहीं फँसेगी। कृपालु कहते हैं कि मथुरा में कुब्जा ही इनकी अच्छी जोड़ी बन सकती है।

३२

चलु हट न लिपट लंपट, दउँ हेला जो नटखट।
आवे लठ लै पति झट, लठ खाय शीश झटपट॥
तू काहुहिं फोरे घट, तू काहुहिं चोरे पट।
जब पकरन चह नटखट, है जाय अलक्षित झट॥

छुपि जाय लतन नटखट, इकली लखि गूजरि नट।
कह देहु दान दधि झट, न तु फोरउँ तव दधि घट॥
पुनि इकली लखि नटखट, कह मानु मोहिं पिय झट।
नहिं बोलूँ तो झटपट, भाजै लै चूनरि पट॥
अब लौं रह बचि नटखट, अब पावहु फल लंपट।
मैया पै जावूँ झट, मारे 'कृपालु' तोहिं नट॥

भावार्थ—श्रीकृष्ण के अटपटे व्यवहार से खीझकर कोई गोपी कहती है-अरे लम्पट दूर हट। मुझसे मत लिपटना। यदि मैं अभी जोर से आवाज लगाऊँगी तो मेरा पति लाठी लेकर आ जायगा तुम्हारे सिर पर लाठी पड़ेगी। तुम किसी का घड़ा फोड़ते हो, किसी के वस्त्र चुराते हो। जब वह तुम्हें पकड़ना चाहती है, तब अदृश्य हो जाते हो। लताओं में शीघ्रता से छिप जाना तो तुम्हारे बायें हाथ का खेल है। हे नटखट! किसी गूजरी को एकान्त में पाते ही उससे दधि का दान माँगने लग जाते हो। यदि वह मना करती है तो उसका दही का घड़ा फोड़ने को तैयार हो जाते हो। किसी ब्रज-गोपी को अकेला पाकर उससे प्रेम-प्रस्ताव रखते हो, यदि वह उत्तर में मौन हो जाती है तो उसकी चुनरी लेकर भाग जाते हो। गोपी क़हती है-हे

चंचल कृष्ण! अब तक तो मैंने कुछ नहीं कहा परन्तु अब तुम्हें अपने कर्म का फल भोगना ही पड़ेगा। अब मैं माता यशोदा से तुम्हारी करतूतें बताऊँगी, तब वे तुम्हें अवश्य ही दण्ड देंगी।

३३

चोर सिरमोर काहे चोरा चित मोर।
दे दे दे दे चित न सता रे चितचोर।।
सखी ने प्रशंसा कीनी भूरि भूरि तोर।
वाने कही तू है रूप रस सिरमोर।।
यमुना नहाने के बहाने गई भोर।
तहँ देखा तोहिं ठढ़ो नंद किशोर।।
तेरे रोम रोम रस चुवे था अथोर।
पी रही थी तभी तूने देखा दृग कोर।।
लिय दृग कोर ते ही पिया चितचोर।
मैं तो भइ प्रेम रस मदिरा विभोर।।
बरबस तूने लिया मोरा सब छोर।
अब पुनि पुनि उठे उर पीर घोर।।

तू ही तू ही दीखे जित देखूँ चहुँ ओर।
कैसा ये लगाया रोग उर बरजोर।।
पग भूले गति कैसे जावूँ निज पोर।
नित का 'कृपालु' ते ले अब नाता जोर।।

भावार्थ—कोई गोपी श्रीकृष्ण के नटखटपने से खीझकर कहती है-अरे चोरों के शिरोमणि! तुमने मेरा चित्त क्यों चुराया? अरे चितचोर! मेरे चित्त को वापस कर दे। मुझे अधिक न सता। मेरी सखी ने मुझसे तेरी प्रशंसा की थी। वह तेरे रूप-रस में डूबी हुई थी अतः उसकी बातों में आकर मैं भी तुझे देखने के लिये प्रातःकाल होते ही स्नान के बहाने से यमुना के तट पर पहुँच गई। मैंने उस स्थान पर तुझे खड़ा हुआ पाया। हे चंचल! तेरे प्रत्येक रोम से रस टपक रहा था। मैं उस रस का पान कर रही थी। उसी समय अचानक तूने कटाक्षपात किया। तब मैंने तेरी दृष्टि से भी उसी रस का पान किया। उस दृष्टि को देखते ही मैं प्रेम-रस मदिरा से मत्त हो उठी। तूने मेरा तन, मन, प्राण (मेरा सर्वस्व) ही मुझसे छीन लिया। अब तो असह्य पीड़ा ने मेरे हृदय को घेर लिया है। जिधर दृष्टि

डालती हूँ-तू ही तू दिखाई देता है। अचानक मुझे यह प्रेम-रोग लग गया है। अब तो मेरे पैर घर की तरफ चलना ही नहीं चाहते। कवि कहता है- हे सखि! यह सम्बन्ध तो सदा के लिये हो गया।

३४

छुवो जनि गोरा तनु मोरा, मोरा मोरा मोरा।
अति बदनाम नाम है तोरा,
नाम बड़ो है मोरा, मोरा मोरा मोरा।
अति कारो कारो तनु तोरा,
अति गोरा तनु मोरा, मोरा मोरा मोरा।
भयो ब्याहु नहिं अब लौं तोरा,
भयो ब्याहु नहिं मोरा, मोरा मोरा मोरा।
कहि हैं सब ब्रज वासी तोरा,
नात अवशि है मोरा, मोरा मोरा मोरा।
कछू नाहिं बिगरेगो तोरा,
ब्याहु न कर कोउ मोरा, मोरा मोरा मोरा।
द्वै मैया द्वै बाबा तोरा,
निष्कलंक कुल मोरा, मोरा मोरा मोरा।

चोरी करन व्यसन है तोरा,
हो अपयश बड़ मोरा, मोरा मोरा मोरा।
जार शिखामणि पद है तोरा,
हौं चह पति रह मोरा, मोरा मोरा मोरा।
मदिरा प्रेम मत्त मन तोरा,
अति भोरा मन मोरा, मोरा मोरा मोरा।
जानति कारो करतब तोरा,
सखिन जूह सब मोरा, मोरा मोरा मोरा।
प्यार दूर ही ते चह तोरा,
यह 'कृपालु' मन मोरा, मोरा मोरा मोरा॥

भावार्थ—किसी गोपी ने श्रीकृष्ण से कहा—हे श्यामसुन्दर! मुझे मत छूना। मेरा रँग गोरा है और तुम काले हो। सम्पूर्ण ब्रज में तुम्हारी बदनामी है। मेरे माता पिता का नाम बड़ा है। तुम्हारा अभी तक विवाह नहीं हुआ है मेरा भी विवाह नहीं हुआ है। इस प्रकार से यदि ब्रज में किसी ने मुझे तुम्हारे साथ देख लिया तो मेरी बदनामी होगी। तुम्हारा तो कुछ नहीं बिगड़ेगा परन्तु मेरा विवाह होना कठिन हो जायगा। तुम्हारे तो दो पिता एवं दो मातायें हैं परन्तु मेरा कुल तो पवित्र है। तुम तो चोरी

करने में बड़े प्रवीण हो परन्तु तुम्हारे साथ रहने से मेरी तो निंदा होगीं। मैं तो ऐसे पति की कामना करती हूँ जो केवल मुझसे ही प्रेम करे किंतु तुम तो सभी ब्रज-गोपियों से प्रेम करते हो। तुम्हारा मन प्रेम-रस-मदिरा से उन्मत्त रहता है—मैं अत्यन्त भोली भाली हूँ। मेरी सखियाँ तुम्हारी चोरी जारी की सारी करतूतें जानती हैं। मेरा मन तो तुम्हारे साथ दूर से ही प्रेम करना चाहता है।

३५

छेड़ो नहिं मोहिं छोड़ो मग मम नटखट।
मोहिं नहिं ऐसी वैसी जानो तुम नटखट॥
अब लौं मिली हैं तोहिं भोरी भारी नटखट।
मैं तो ललिता हूँ लाड़िली की सखि नटखट॥
वा दिना की सुधि कहा भूलि गई नटखट।
जा दिना थे मेरी हा हा खाये तुम नटखट॥
पुनि करें मान जब मानिनि नटखट।
पुनि मेरे पग परेगो निपट नटखट॥
मेरी राधारानी के तो तेरे जैसे नटखट।
महल बुहारी देने आवें नित नटखट॥

लट्ठ गँवार ग्वार सँग रह नटखट।
तू का जाने प्रीति रीति अटपट नटखट॥
प्रीति रीति सीखु तब प्रीति चहु नटखट।
बरबस प्रीति नहिं मिला करे नटखट॥
प्रीति की जगद्गुरु लाड़िली नटखट।
सेवा करि शिष्य बनि सीखु प्रीति नटखट॥
यदि नहिं माने मनमानी करे नटखट।
काउ दिन होय तेरो बुरो हाल नटखट॥
ऊखल बधावूँ पिटवावूँ तोहिं नटखट।
चेत जा अबहुँ तू 'कृपालु' नट नटखट॥

भावार्थ—श्रीराधा की सखी ललिता ने चंचल कृष्ण से कहा- हे कृष्ण! मेरा मार्ग छोड़ दो। मुझे तुम्हारी चंचलता प्रिय नहीं है। मुझे कोई साधारण ब्रजांगना न समझना अभी तक तो तुम्हें भोली भाली ब्रजबालायें ही मिली हैं मैं राधा की प्यारी सखी ललिता हूँ। अरे नटखट! उस दिन की बात तुम भूल गये जब मेरे पैरों पर गिरकर मुझसे क्षमा याचना कर रहे थे। अरे कृष्ण! मेरी सखी राधा के महल में तो तुम्हारे जैसे कितने ही झाड़ू लगाने आते हैं। तुम्हारा सँग ग्रामीण ग्वालों का है। तुम प्रेम करना क्या जानो?

क्या तुम्हारी जबरदस्ती से तुम्हें कोई प्रेम-दान देगी ? प्रेम की आचार्या तो श्रीराधा ही हैं। उनकी सेवा कर उनके शिष्य बनकर ही तुम प्रीति की रीति सीख सकते हो। यदि मेरी बात न मानकर सबके साथ मनमानी करोगे तो तुम्हें पश्चाताप करना पड़ेगा। अब भी तुम सावधान हो जाओ, नहीं तो माता यशोदा से तुम्हारी शिकायत करूँगी। वे तुम्हें ऊखल से बाँधकर साँटी से पीटेंगीं।

३६

जा जा जा वो ठगहार, तोहिं जानि गई ब्रजनार।
तू कपटिन को सरदार, भइ भूल बनायो यार॥
त्रेता में लिय अवतार, बनि दशरथ राजकुमार।
छुपि तरुवर बालिहिं मार, भइ भूल बनायो यार॥
लिय पुनि वामन अवतार, गये भिक्षुक बनि बलि द्वार।
लूट्यो बलि उर छल धार, भइ भूल बनायो यार॥
सब सोइं कह करु मोहिं प्यार, पुनि कह कहु तू मोहिं यार।
तू निलज निपट बट मार, भइ भूल बनायो यार॥

काहुहिं तोरत गर हार, काहुहिं सिर चुनरि उतार।
काहुहिं दृग बानन मार, भइ भूल बनायो यार॥
भोरी भारी ब्रजनार, तू लंपट निपट गमार।
तबहूँ 'कृपालु' बलिहार, भइ भूल बनायो यार॥

भावार्थ—किसी सखी ने श्यामसुंदर से कहा—अरे ठगों के सरदार! जाओ मेरे साथ बात न करना। तुमसे सारी गोपियाँ परिचित हैं। तुम तो कपटियों के शिरोमणि हो। मुझसे बहुत बड़ी गलती हो गई, जो मेरा प्रेम तुमसे जुड़ गया। जब त्रेता युग में अवतार लेकर तुम राजा दशरथ के पुत्र बने तब तुमने वृक्ष की ओट में छिपकर बाली का वध किया। पुनः जब तुमने वामन अवतार लिया तब तुम राजा बलि के द्वार पर वामन रूप धारण कर दान माँगने के लिये गये। तुमने अत्यन्त कपट पूर्वक उसका सर्वस्व हरण कर छलपूर्ण वचनों से उसे अपने धर्म से विचलित करना चाहा उसने फिर भी अपना मस्तक तुम्हारे सामने झुका दिया किंतु तुमने इन्द्र को उसकी सम्पत्ति प्रदान कर उसे पाताल भेज दिया। मुझसे तो भूल हो चुकी जो तुमसे मैंने अपना सम्बंध जोड़ा। तुम प्रत्येक गोपी से ही कहते फिरते

हो कि तू मुझसे प्रेम कर। उससे यह भी कहते हो कि तू अपने मुख से मुझे अपना प्रियतम कह। तुम तो अत्यन्त ही निर्लज्ज हो मैंने व्यर्थ ही तुम्हें अपना प्रियतम बनाया। अरे ढीठ! तुम किसी के वक्ष पर पड़ा हार तोड़ डालते हो किसी के सिर की ओढ़नी उतार देते हो। किसी को नेत्रों के बाणों से घायल करते हो। ब्रजगोपियाँ तो अत्यन्त ही भोली भाली हैं, तुम अत्यन्त गँवार और लम्पट हो। आश्चर्य तो यह है कि फिर भी ये अत्यन्त सरल गोपियाँ तुम पर बलिहार जाती हैं।

३७

तुझसा भगोड़ा नहिं कान्हा, कान्हा कान्हा कान्हा।
प्रथम भज्यो निज धाम ते कान्हा,
आया मम जग कान्हा, कान्हा कान्हा कान्हा।
किसी ने टिकाया नहिं निज घर कान्हा,
आया बंदीगृह कान्हा, कान्हा कान्हा कान्हा।
कंस भय बंदीगृहहुँ ते भागा कान्हा,
आया गोकुल भजि कान्हा, कान्हा कान्हा कान्हा।

गोकुल ते असुरन भय कान्हा,
आया भजि नँदगाँव कान्हा, कान्हा कान्हा कान्हा।
नँदगाँवहुँ भजि मधुपुरि कान्हा,
तहँहुँ न रहि पाया कान्हा, कान्हा कान्हा कान्हा।
जरासन्ध भय भागा कान्हा,
आया तू द्वारवती कान्हा, कान्हा कान्हा कान्हा।
द्वारिका ते भागा तू 'कृपालु' जब कान्हा,
गया पुनि निज धाम कान्हा, कान्हा कान्हा कान्हा।

भावार्थ—एक ब्रजगोपी श्रीकृष्ण से कहती है-अरे कृष्ण! तेरे जैसा डरपोक और भागने वाला तो मैंने न कहीं देखा न सुना। पहले तो गोलोक धाम से भागकर तुम मृत्युलोक में आये। मृत्युलोक में तुम्हें कौन पूछता? अतः कंस के कारागार में तुम प्रकट हुए। कंस के भय से भयभीत हुए तुम वहाँ से भी भागकर गोकुल आ गये। गोकुल में कंस के भेजे हुए दैत्य आते ही रहते थे अतः उनसे डरकर तुम नंदगाँव आ गये। नंदगाँव में भी तुम नहीं टिक सके तो मथुरा भाग आये। मथुरा में भी तुम स्थिर नहीं रहे। जरासंध के भय से भागकर द्वारिका पहुँचे। अन्त में द्वारिका से भी पुनः अपने निज धाम को पधार गये।

३८

तू है को री ओरी ब्रज गोरी, गोरी गोरी गोरी।
वारौं रति छवि लखि छवि तोरी,
एतिक सुन्दरि गोरी, गोरी गोरी गोरी।
तोरी सुंदरता सम तोरी,
लग सुंदरता गोरी, गोरी गोरी गोरी।
लखतहिं तूने मम चित चोरी,
जादूगरनी गोरी, गोरी गोरी गोरी।
काकी है गोरी तू छोरी,
कौन गाम रह गोरी, गोरी गोरी गोरी।
मैं हूँ भानुभूप की छोरी,
बरसाने की गोरी, गोरी गोरी गोरी।
नाम बता टुक लखु मम ओरी,
नाम राधिका गोरी, गोरी गोरी गोरी।
मोरी तोरी बनि जाय जोरी,
जो माने तू गोरी, गोरी गोरी गोरी।
हौं तो बनन चहौं पिय तोरी,
सदा सदा को गोरी, गोरी गोरी गोरी।

तूने हूँ तो मम चित चोरी,
भूली तनु सुधि गोरी, गोरी गोरी गोरी।
युग युग जिय 'कृपालु' दोउ जोरी,
पिय हरि प्यारी गोरी, गोरी गोरी गोरी॥

भावार्थ—श्रीकृष्ण ने प्रथम बार श्रीराधा का दर्शन किया उनके रूप पर मुग्ध हुए वे उनसे उनका परिचय पूछ रहे हैं। हे ब्रजसुन्दरी! तुम कौन हो? तुम्हारी शोभा को देखकर तो मैं रति की सुन्दरता को भी न्यौछावर कर सकता हूँ। हे गौरवर्ण वाली सुन्दरी! तुम इतनी अधिक सुंदर हो कि तुम्हारे सौन्दर्य की उपमा तुम्हारे ही सौन्दर्य से की जा सकती है। हे ब्रजगोरी! तुमने अपने प्रथम दर्शन में ही– अपने रूप का जादू मुझ पर डाल दिया है। वस्तुतः तुम तो जादूगरनी ही प्रतीत होती हो। तुम किसकी पुत्री हो? किस ग्राम में वास करती हो? श्रीराधा ने उत्तर दिया। मैं वृषभानु की पुत्री हूँ और बरसाना ग्राम में रहती हूँ। पुनः श्रीकृष्ण ने राधा से कहा–तनिक मेरी ओर देखकर अपना नाम तो बताओ। श्रीराधा ने कहा–मेरा नाम राधा है। श्रीकृष्ण ने राधा से पुनः कहा–यदि तुम्हें मेरी बात स्वीकार हो तो मैं तुम्हारे साथ अपना

विवाह करना चाहता हूँ। मेरी तुम्हारी जोड़ी बड़ी सुन्दर प्रतीत होगी। श्रीराधा कहती हैं–मैं तो सदा के लिये ही तुम्हारी बनना चाहती हूँ। तुमने भी मेरा चित्त चुरा लिया है। मैं अपनी सारी सुध बुध भूल चुकी हूँ। कवि युगल जोड़ी को आशीर्वाद देते हुए कहते हैं कि यह प्रिया–प्रियतम की जोड़ी अमर रहे।

३९

तोरी मोरी नाहिं बने कान्हा, जा जा जा जा कान्हा।
जैसे मधुकर नित नये कान्हा,
कुसुमन रस ले कान्हा, जा जा जा जा कान्हा।
ऐसेहिं तोहूँ नित ही कान्हा,
नई नई चह कान्हा, जा जा जा जा कान्हा।
तू तो कह श्रुति महँ यह कान्हा,
रति अनन्य करु कान्हा, जा जा जा जा कान्हा।
पर उपदेश कुशल तू कान्हा,
आपुन हित नहिं कान्हा, जा जा जा जा कान्हा।
मैंने नहिं जाना तोहिं कान्हा,
मैं थी भोरी कान्हा, जा जा जा जा कान्हा।

सखिन बतायेहु जब मोहिं कान्हा,
दिये तोहिं तजि कान्हा, जा जा जा जा कान्हा।
जग महँ सबै चहत यह कान्हा,
मम पिय रह मम कान्हा, जा जा जा जा कान्हा।
तोहिं काहू को डर नहिं कान्हा,
लोकहुँ वेदहुँ कान्हा, जा जा जा जा कान्हा।
याते जो मनभावे कान्हा,
करत सोइ तू कान्हा, जा जा जा जा कान्हा।
अब नहिं दाल गले तव कान्हा,
जाहु अनत कहुँ कान्हा, जा जा जा जा कान्हा।
सखि है अति 'कृपालु' यह कान्हा,
करु न रोष तू कान्हा, जा जा जा जा कान्हा॥

भावार्थ—कोई ब्रजगोपी श्रीकृष्ण से कहती है-जा जा। तेरे साथ मेरा मन कभी मेल नहीं खा सकता। जिस प्रकार भ्रमर प्रत्येक पुष्प पर जाकर उसका रस लेकर उड़ जाता है, उसी प्रकार तुम भी नित्य ही नवीन नवीन ब्रज बालाओं से प्रेम करते हो। पुनः उनका त्यागकर किसी अन्य गोपी से सम्बन्ध जोड़ लेते हो। वेद में तो तुम दूसरों को उपदेश देते हो कि मुझसे अनन्य प्रेम करो किन्तु स्वयं तो किसी एक ही गोपी से प्रेम नहीं करते। हे कृष्ण! तुम

दूसरों को ही उपदेश देने में कुशल हो। स्वयं तो उस उपदेश का पालन नहीं करते। मैं अत्यन्त भोली थी अतः तुम्हारा यह जाल समझ नहीं सकी। सखियों द्वारा तुम्हारे इस सहस्य को जानकर मैंने अब तुम्हारा त्याग कर दिया है। संसार में तो सब यही चाहते हैं कि मेरा पति केवल मुझसे ही प्रेम करे। तुम तो लोक-वेद से परे अत्यन्त स्वतंत्र हो तुम्हें भला किसका भय है ? अतः तुम मनमाना आचरण करते हो। हे कृष्ण ! अब मेरे साथ तुम्हारी चतुराई नहीं चलेगी। कहीं किसी अन्य भोली भाली गोपी के पास जाकर उसे अपने वाग्जाल में फँसाना। 'कृपालु' अपने शब्दों में सखी से कहते हैं- हे सखी ! तू इन पर क्रोध न कर। ये कृपा परवश होकर ही समस्त जीवों को प्रेमदान देते हैं।

४०

तोसों न निलज कोउ कान्हा, कान्हा कान्हा कान्हा।
लाजहुँ जासु लजावत कान्हा,
ऐसोहि है तू कान्हा, कान्हा कान्हा कान्हा।

छेड़त रहत सखिन नित कान्हा,
पावत गारी कान्हा, कान्हा कान्हा कान्हा।
सुनि गारी "दारी के" कान्हा,
मुसकुराय तू कान्हा, कान्हा कान्हा कान्हा।
ब्रजनारिन घर-घर घुसि कान्हा,
चोरत माखन कान्हा, कान्हा कान्हा कान्हा।
सखन खवावत माखन कान्हा,
आपु खात पुनि कान्हा, कान्हा कान्हा कान्हा।
जो बरजे सखि तो तू कान्हा,
फोरत मटुकिहुँ कान्हा, कान्हा कान्हा कान्हा।
जो भाजै सखि पकरन कान्हा,
पकरि न पावे कान्हा, कान्हा कान्हा कान्हा।
कभू पकरि पावे जो कान्हा,
बनि जाय वा पति क़ान्हा, कान्हा कान्हा कान्हा।
वाय दिखाय अँगूठा कान्हा,
मुख बिराय तू कान्हा, कान्हा कान्हा कान्हा।
पुनि 'कृपालु' यह कह तू कान्हा,
आउँ कालि पुनि कान्हा, कान्हा कान्हा कान्हा॥

भावार्थ—हे कृष्ण! तुम्हारे जैसा, निर्लज्ज और कोई

नहीं होगा तुम्हें देखकर तो लज्जा भी लज्जित होती है। प्रतिदिन तुम किसी न किसी सखी को छेड़ते ही रहते हो परिणाम स्वरूप गाली खाते हो। 'दारी के' गाली सुनकर तुम मुस्कराते रहते हो। अरे कन्हैया! ब्रज गोपियों के घरों में घुसकर चुरा चुराकर मक्खन खाते हो। स्वयं ही नहीं खाते साथ में सखाओं के समूह को भी खिला पिलाकर संतुष्ट रखते हो। यदि किसी सखी ने मक्खन चुराने से मना किया तो फिर उसकी मटुकी भी फोड़ते हो। यदि कोई सखी पकड़ने को दौड़ती है तो तुम उसकी पकड़ में भी नहीं आते हो। यदि किसी सखी ने कभी पकड़ भी लिया तो तुरन्त उसके पति का रूप धारण कर लेते हो। उस सखी को तुम अँगूठा दिखाकर मुँह बिराते हो। जाते समय पुनः यह चेतावनी भी देते जाते हो कि कल चोरी करने पुनः तेरे घर आऊँगा।

४१

तोसों नहिं बोलूँ अब भूलेहुँ लम्पट,
मोते न लिपट चलु हट हट लम्पट।

खोलो न घुँघट पट छुवो जनि लम्पट,
जानि गइ तोहिं पहिचानि गइ लम्पट।
"तू ही मेरी प्यारी,, सब ते ही कह लम्पट,
इक छोड़त इक पकड़त लम्पट।
झूठ ही तेरा खाना पीना सोना लम्पट,
झूठ का ही अवतार जानि परे लम्पट।
मारे दृग बान तान नैनन लम्पट,
लागे जाय उर पट जाने कैसे लम्पट।
सब की तू सौहैं खाय कहे नित लम्पट,
तोसों ही करूँगो ब्याहु बोले झूठ लम्पट।
तूने किया सिद्ध वशीकार सिद्धि लम्पट,
याते जो भी देखे सोइ मोहे झट लम्पट।
नारी जाति ही न मोहे तोहिं लखि लम्पट,
योगीराज शिव धारे नारी तनु लम्पट।
नारी बनि दंडक वन मुनि लम्पट,
आये येहि ब्रज मोहे तोहिं लखि लम्पट।
नारी तनु धरि अग्नि पुत्र जन लम्पट,
तोहिं लखि मारे गये मौत बिनु लम्पट।
बड़े-बड़े ऋषि मुनि मोहे काम लम्पट,
सोऊ गयो काम ते 'कृपालु' लखि लम्पट।

भावार्थ—कोई ब्रजगोपी श्रीकृष्ण से कहती है–हे लम्पट कृष्ण! मैं अब भूलकर भी तुझसे बात नहीं करूँगी। तुम मुझसे मत लिपटो। दूर हटो। मेरे घूँघट को मत खोलो। मुझे स्पर्श भी मत करना। मैंने तुम्हें जान लिया। भली प्रकार से पहचान लिया। तुम सब गोपियों से यही कहते हो कि एकमात्र तू ही मुझे सबसे अधिक प्रिय है। इस प्रकार एक को छोड़कर दूसरी से प्रेम-व्यवहार जोड़ते हो। तुम्हारा खाना, पीना, सोना, सब ही झूठा है। मुझे तो ऐसा प्रतीत होता है कि तुम झूठ के ही अवतार हो। हे लम्पट! अपने नेत्रों से चितवन के बाण चलाते हो। मुझे आश्चर्य होता है कि वे हृदय पर प्रहार कैसे करते हैं। श्यामसुन्दर की चितवन को तो गोपी के नेत्र देखते हैं। प्रभाव हृदय पर पड़ता है। निरन्तर सभी की सौगन्ध खाते रहते हो। प्रत्येक ब्रज-बाला से कहते फिरते हो कि मैं तुझसे ही विवाह करूँगा। इस प्रकार सबसे झूठ बोलते हो। हे लम्पट! मुझे तो ऐसा प्रतीत होता है कि तुमने वशीकार सिद्धि को सिद्ध कर लिया है। अतः जो भी कोई ब्रजांगना तुम्हें देखती है, वह मोहित हो जाती है। अरे

कृष्ण! तुम्हें देखकर केवल स्त्रियाँ ही मोहित नहीं होती योगेश्वर शिव भी तुम्हारे रास में सम्मिलित होने के लिये नर से नारी बन गये। दंडकवन के ऋषि भी गोपी बनकर ब्रजमंडल में आये और तुम्हें देखकर मोहित हो गये। अग्निपुत्र भी गोपी रूप धारण कर ब्रज में तुम्हारी छवि को निहारकर अपना सर्वस्व न्यौछावर कर बैठे। हे श्रीकृष्ण! जिस कामदेव ने बड़े-बड़े ऋषि-मुनियों को मोहित कर लिया वह भी तुम्हें देखकर बेकाम हो गया।

४२

प्यार वार तू का जाने कान्हा, कान्हा कान्हा कान्हा।
देनो प्यार रसिक जन माना,
लेनो जाना कान्हा, कान्हा कान्हा कान्हा।
तूने चोरी करनो जाना,
दधि माखन पट कान्हा, कान्हा कान्हा कान्हा।
सब कहुँ दुख देनो ही जाना,
सुख देना नहिं कान्हा, कान्हा कान्हा कान्हा।

तूने झूठ बोलनो जाना,
मैया हूँ ते कान्हा, कान्हा कान्हा कान्हा।
तूने बात बनानो जाना,
सखन सखिन सों कान्हा, कान्हा कान्हा कान्हा।
तूने आँखि मारनो जाना,
छोटा खोटा कान्हा, कान्हा कान्हा कान्हा।
लूटि लूटि दधि खाना जाना,
लखि इकली सखि कान्हा, कान्हा कान्हा कान्हा।
मुरली बजानो तूने जाना,
मोहे शिव शुक कान्हा, कान्हा कान्हा कान्हा।
स्वार्थ सिद्ध करनो भी जाना,
निज माया ते कान्हा, कान्हा कान्हा कान्हा।
सखि सँग नर्तन तूने जाना,
रात रात भर कान्हा, कान्हा कान्हा कान्हा।
हमने तो 'कृपालु' यह जाना,
भक्तवश्य तू कान्हा, कान्हा कान्हा कान्हा॥

भावार्थ—कोई ब्रजगोपी श्रीकृष्ण से कह रही है- अरे कन्हैया! तुम प्यार करना क्या जानो तुम्हारे रसिक-जन ही कहतें हैं कि देना प्यार है। तुम तो सबसे लेते ही

हो। घनानंद कहते हैं—**तुम कौन सी पाटी पढ़े हो लला, मन लेहु पै देहु छटांक नहीं**। कन्हैया! तुमने ब्रज गोपियों के घरों में अपने शैशव से ही दही, मक्खन एवं वस्त्रों की चोरी की। तुमने कभी किसी को सुख नहीं दिया। सबको दुख ही दुख दिया। अरे कृष्ण! बचपन से ही तुम्हारी झूठ बोलने की आदत है। अपनी मैया यशोदा से भी तुम कभी सच नहीं बोले। हे कन्हैया! अपने मित्र ग्वाल बालों से, जो तुम्हें प्राणों से भी अधिक प्रेम करते हैं उनसे भी तुम झूठी मूठी बातें बनाते रहते हो। सखियों से भी झूठ बोलते हो। अरे छोटे से कन्हैया! तुम बड़े ही खोटे हो। ब्रजबालाओं को अपने नेत्रों से घायल करते रहते हो। यदि कोई गोपी मार्ग में अकेली ही मिली तो उसका दही लूटकर खा लेते हो। अपनी मुरली बजाकर शिव शुक जैसे परमहंसों को भी मोहित कर लेते हो। अपनी योगमाया द्वारा अपने स्वजन (यशोदा आदि) को भी मोहित कर स्वार्थ सिद्ध करने में तुम बहुत चतुर हो। रात्रि में वृन्दावन के सुन्दर कुंजों में सखियों के साथ नृत्य करने में तो तुम अत्यन्त ही प्रवीण हो। अन्त में भक्त कवि अपना मत प्रकट करते हुए कहते

हैं कि हे कृष्ण! अपनी समस्त लीलायें तुम एकमात्र भक्त वत्सलता के कारण ही करते हो। भक्तों के नाना प्रकार के भावों की पूर्ति ही तुम्हारी लीलाओं द्वारा होती है। माखन चोरी, चीर हरण, दधि लूटना, मुरली बजाना, रास करना आदि सभी लीलायें भक्तों की इच्छा पूर्ण करने के लिये ही की गई क्योंकि श्री कृष्ण भक्तवश्य हैं।

४३

मैं हूँ तेरा पिय तू प्यारी, प्यारी प्यारी प्यारी।
लँगर न मैं कोइ ऐरी गैरी नारी,
जा जा जा जार बनवारी, प्यारी प्यारी प्यारी।
ब्रह्म नपुंसक कह श्रुति चारी,
कोउ न बने तव प्यारी, प्यारी प्यारी प्यारी।
तेरे मात पिता सुत नारी,
कोउ नहिं कह श्रुति चारी, प्यारी प्यारी प्यारी।
तू का जाने रति रस नारी,
तू ग्वारिया अनारी, प्यारी प्यारी प्यारी।
जहँ कहुँ लख तू सुन्दर नारी,
कह तू ही मम प्यारी, प्यारी प्यारी प्यारी।

तनु कारी करतूतिहुँ कारी,
जानति सब ब्रज नारी, प्यारी प्यारी प्यारी।
मीठी बोल मोर ज्यों प्यारी,
खाय सर्प विषधारी, प्यारी प्यारी प्यारी।
त्यों तव बोल सरस अति प्यारी,
उर अति कपट बिहारी, प्यारी प्यारी प्यारी।
तो को दे ब्रजनारी सारी,
'दारी के' कहि गारी, प्यारी प्यारी प्यारी।
तबहुँ 'कृपालु' कहत तू प्यारी,
पुनि दे मीठी गारी, प्यारी प्यारी प्यारी।

भावार्थ—श्रीकृष्ण ने बेधड़क होकर किसी गोपी से कहा- मैं तेरा प्रियतम हूँ तू मेरी प्रेयसी है। गोपी ने श्रीकृष्ण की रसपूर्ण शब्दावली सुनकर उत्तर दिया-अरे नटखट! मैं कोई ऐसी वैसी स्त्री नहीं हूँ। तुम तो पराई स्त्रियों से प्रेम करते फिरते हो। मेरे निकट से चले जाओ। चारों वेद कहते हैं कि ब्रह्म तो न स्त्री है न पुरुष वह तो नपुंसक है। फिर नपुंसक की स्त्री बनना कौन स्वीकार करेगा? चारों वेद यह भी कहते हैं कि तुम्हारे न तो कोई माता-पिता हैं न ही पुत्र अथवा स्त्री। तुम स्त्रियों की प्रेम-पिपासा को कैसे पूर्ण कर सकते हो? तुम तो गायों को चराना ही

जानते हो। जहाँ कहीं भी किसी सुन्दर स्त्री को देखते हो तुम्हें लोभ उत्पन्न हो जाता है और उससे कहने लगते हो कि बस तू ही तो मेरी प्रेयसी है। हे कृष्ण! तुम्हारा शरीर तो काला है ही करतब भी काले ही हैं। सभी ब्रज-गोपियाँ तुमसे भली भाँति परिचित हैं। हे श्यामसुन्दर! तुम्हारी वाणी तो मोर की वाणी जैसी मधुर है परन्तु हृदय कुटिल है। मोर का आहार विष से युक्त सर्प ही तो होता है। इसी प्रकार से तुम्हारा भी हाल है। मुख से तो मधुर वचन बोलते हो परन्तु हृदय अत्यन्त कपट से परिपूर्ण है। समस्त ब्रजगोपियाँ तुम्हें 'दारी के' कहकर गाली देती हैं परन्तु तुम्हारे ऊपर उनकी गालियों का कोई प्रभाव नहीं पड़ता अपितु उत्तर में कहते हो कि मुझे तेरी गाली बहुत मीठी लगती है। पुनः दे।

४४

लूटा तूने मेरा सब कान्हा, कान्हा कान्हा कान्हा।
मैं तो जानी भोरा भारा छोरा तोहिँ कान्हा,
तू तो निकला ठग कान्हा, कान्हा कान्हा कान्हा।

मैं तो गोरी अति भोरी भारी हती कान्हा,
कहा जानूँ तोरा छल कान्हा, कान्हा कान्हा कान्हा।
प्रथम मिलाया तूने नैनन कान्हा,
पुनि घुसि गयो उर कान्हा, कान्हा कान्हा कान्हा।
नैनन गति लखि श्रवनहुँ कान्हा,
जाय मिले तोहिँ कान्हा, कान्हा कान्हा कान्हा।
नैनन श्रवनन गति लखि कान्हा,
नासा भइ तव कान्हा, कान्हा कान्हा कान्हा।
दृग, श्रुति, नासा गति लखि कान्हा,
त्वचा भई तव कान्हा, कान्हा कान्हा कान्हा।
चारिहुँ मिली भगत लखि कान्हा,
रसनाहूँ गइ कान्हा, कान्हा कान्हा कान्हा।
पंच एक मत लखि मन कान्हा,
तोसों मिलि गयो कान्हा, कान्हा कान्हा कान्हा।
सब शासित गति लखि मति कान्हा,
भइ प्रपन्न तव कान्हा, कान्हा कान्हा कान्हा।
अब जब तेरे सब भये कान्हा,
प्रानहुँ ले ले कान्हा, कान्हा कान्हा कान्हा।
तनु बिनु प्रान न रहि सक कान्हा,
कह 'कृपालु' श्रुति कान्हा, कान्हा कान्हा कान्हा।

भावार्थ—किसी गोपी ने श्रीकृष्ण से कहा– हे कृष्ण! तुमने मेरा सर्वस्व हरण कर लिया। मैंने तो तुम्हें अत्यन्त भोला भाला समझा था परन्तु तुम तो पूरे ठग निकले। कन्हैया! मैं तो अत्यन्त ही भोली भाली थी। तुम्हारे छल को समझ नहीं सकी। तुमने पहले मेरे नेत्रों को अपनी भोली भाली छवि दिखाकर अपने वश में कर लिया। फिर नेत्रों के द्वार से ही हृदय में प्रवेश पा गये, नेत्रों की दशा देखकर मेरी नासिका भी तुम्हारे ही पक्ष में हो गई। जब त्वचा ने नेत्रों और नासिका को तुमसे मिलते देखा तो वह भी तुम्हारी ही बन गई। इन चारों को एक ही पक्ष में हुआ जानकर रसनेन्द्रिय ने भी मेरा साथ छोड़ दिया। पाँचों इन्द्रियों को एक साथ तुमसे मिला हुआ देखकर मन भी मुझे छोड़कर तुमसे जा मिला। समस्त इन्द्रियों का शासन करने वाली बुद्धि ने जब यह दशा देखी तो वह भी तुम्हारे शरणागत हो गई। अब जब सभी ने मेरा साथ छोड़ दिया तो प्राणों को भी तुम ही सम्भाल लो। शरीर बिना प्राणों के जीवित नहीं रहेगा ऐसा तो तुम्हारा वेद ही कहता है।

४५

मेरो है साँचो यार, नट नागर नंद कुमार,
छवि कोटि काम बलिहार, सोई मम प्राणाधार।
जो कनक मुकुट सिर धार, तनु नील जलद अनुहार,
जेहि वेद न पायो पार, सोई मम प्राणाधार।
जो हरि हरहूँ भरतार, लखि उमा रमा बलिहार,
जो बन्यो भृत्य ब्रजनार, सोई मम प्राणाधार।
जो प्रेम सुधा रस सार, जेहि छवि लखि छवि बलिहार,
जो ललित त्रिभंगी यार, सोई मम प्राणाधार।
जो यशुमति सुत रिझवार, जो जीवन धन ब्रजनार,
जो नट वपु भेष सँवार, सोई मम प्राणाधार।
जो रसिक प्राण साकार, जेहि लगि बनि गये शिव नार,
जेहि महिमा अपरंपार, सोई 'कृपालु' सरकार॥

भावार्थ—भक्त कहता है–श्रेष्ठ नट के समान चतुर श्रीकृष्ण ही मेरे सच्चे मित्र हैं। उनकी शोभा को निहारकर करोड़ों कामदेव बलिहार जाते हैं। वे ही श्रीकृष्ण मेरे प्राणों के एकमात्र अवलम्ब हैं। जिनके सिर पर स्वर्ण का मुकुट

है। शरीर का वर्ण नीले बादलों के समान है। जिसकी महिमा का गायन करने में वेद भी असमर्थता का अनुभव करते हैं वे ही मेरे प्राणों के आश्रय हैं। जो श्रीकृष्ण महाविष्णु एवं शिव के भी स्वामी हैं। जिनकी मनोहर रूप-राशि पार्वती और महालक्ष्मी को भी लुभाने वाली है। जो ब्रजनारियों का खरीदा हुआ गुलाम बना है वही नंदनंदन श्रीकृष्ण मेरे प्राणों के प्राण हैं। जो प्रेमामृत के भी सार स्वरूप हैं; जिसकी शोभा पर शोभा भी स्वयं को निछावर करती है, जो तीन स्थानों (ग्रीवा, कटि एवं चरण) से टेढ़े हैं, वे ही श्रीकृष्ण मेरे एकमात्र जीवन सर्वस्व हैं। जो यशोदा के प्रेम के कारण उनके पुत्र बन गये हैं, जो ब्रजगोपियों के जीवन-धन हैं, सुन्दर नट के समान जिन्होंने वेशभूषा धारण की है वे ही एकमात्र मेरे प्राणों के आधार हैं। रसिकों के प्राण स्वरूप श्रीकृष्ण जिनके रास-रस का आस्वादन करने के लिये शिव शिवानी बन गये, जिनकी महिमा का पार शिव, शुक आदि भी नहीं पा सके वे ही मेरे प्राण स्वरूप हैं।

४६

बलिहार ब्रजेन्द्र कुमार, तव अस्तुति कर श्रुति चार।
मानी विधि हरि हर हार, तव महिमा अपरंपार॥
तू पूर्ण ब्रह्म साकार, तू चित सुख घन तन धार।
तू दिव्य प्रेम अवतार, तव महिमा अपरंपार॥
तू सब जग सर्जन हार, तू सब जग पालन हार।
तू ही कर जग संहार, तव महिमा अपरंपार॥
तू त्रिभुवन मोहन हार, तू मदनहुँ मोहन हार।
तू निज मन मोहन हार, तव महिमा अपरंपार॥
तू दीनन को रखवार, तू पतितन की पतवार।
तू निराधार आधार, तव महिमा अपरंपार॥
तू भक्त वश्य सरकार, तू व्यापक जगत मझार।
तू अग जग प्राणाधार, तव महिमा अपरंपार॥
तू प्रेम सुधा रस सार, तू करुणा को भंडार।
तू ब्रज वनितनि रिझवार, तव महिमा अपरंपार॥
तू शरणागत रखवार, तू सब उर जाननि हार।
तू ब्रज रस सिंधु अपार, तू ही 'कृपालु' सरकार॥

भावार्थ—भक्त अपने इष्ट पर बलिहार जाते हुए

कहता है—हे ब्रजराज कुमार! चारों वेद तुम्हारी स्तुति करते हैं। तुमसे सृष्टि कर्ता ब्रह्मा, सृष्टि का पालन करने वाले विष्णु एवं सृष्टिसंहार करने वाले शिव भी पराजय स्वीकार करते हैं। तुम परिपूर्णतम साकार ब्रह्म हो। तुम चिदानन्दमय हो। तुम्हारा शरीर सुख-समूह-स्वरूप है।

चिदानन्दमय देह तुम्हारी।

तुम दिव्य प्रेम के ही अवतार हो। तुम्हारी महिमा अवर्णनीय है। तुम अनन्त कोटि ब्रह्माण्डों की रचना करने वाले हो। तुम से ही सम्पूर्ण सृष्टि का पालन होता है। जगत के संहारकर्ता भी एकमात्र तुम ही हो। तुम्हारी महिमा अतुलनीय है। तुम अपनी अलौकिक रूप-माधुरी से त्रिभुवन को भी मोहित कर लेते हो। जगत् को मोहित करने वाले कामदेव को भी अपने रूप-लावण्य से तुमने मोहित कर लिया। आश्चर्य तो यह है कि अपने रूप को दर्पण में निहारकर तुम स्वयं भी मोहित हो जाते हो। हे श्रीकृष्ण! दीनों के रक्षक तो एकमात्र तुम ही हो। पतितजनों को भव-सिन्धु से पार करने के लिये तुम पतवार-स्वरूप हो। निराधारों के आधार एकमात्र तुम ही हो। तुम्हारी

महिमा का पार किसी ने भी नहीं पाया-

नारद से शुक व्यास रटें पचि हारे तऊ पुनि पार न पायो।

हे नाथ! आप सदा ही अपने भक्तों के वश में रहते हो। तुम संसार में सर्वत्र व्यापक हो। तुम जड़-चेतन सभी के प्राणों के अवलम्ब हो। तुम्हारी महिमा का वर्णन करने में कौन समर्थ हो सकता है? तुम प्रेमामृत के सार स्वरूप हो। अगणित दिव्य गुणों से मंडित होकर भी तुम्हारा हृदय करुणा से परिपूर्ण है। हे श्रीकृष्ण! तुम ब्रजयुवतियों को आनन्द प्रदान करने वाले हो। तुम्हारी महिमा का गायन करने में सभी असमर्थ हैं। हे नाथ! तुम अपने चरणों का आश्रय लेने वाले शरणागत भक्तों की रक्षा करने में सदैव तत्पर रहते हो। तुम सर्वान्तर्यामी हो। ब्रज-रस के अपार समुद्र हो। तुम ही हमारे स्वामी हो।

४७

जो राधा प्राणाधार, जो जीवन धन ब्रज नार।
जो पूर्ण ब्रह्म साकार, सोइ मम पिय नंदकुमार॥
जो ब्रज बनितन मनहार, जो जीव जीवनाधार।
जो है कुब्जा को यार, सोइ मम पिय नंदकुमार॥

जो सत चित सुखघन सार, चितघन सुखघन तन धार।
बह रोम रोम रस धार, सोइ मम पिय नंदकुमार॥
जो वृंदाविपिन मझार, सँग लै कोटिन ब्रजनार।
कर नित नव रास बिहार, सोइ मम पिय नंदकुमार॥
जो दीनन को रखवार, जो पतितन को पतवार।
जो निराधार आधार, सोइ मम पिय नंदकुमार॥
जो प्रेम रूप रस सार, लखि कोटि काम बलिहार।
छवि निज मन मोहनहार, सोइ मम पिय नंदकुमार॥
जो मोर मुकुट सिर धार, लटकारी अति घुँघुरार।
भल मृगमद तिलक लिलार, सोइ मम पिय नंदकुमार॥
जो कानन कुण्डल धार, नासा बेसर छविदार।
दृग चितवनि जादू डार, सोइ मम पिय नंदकुमार॥
जो दोउ कर कंकण धार, अँगुरिन मुँदरिन छविदार।
गल भल दुकूल रिझवार, सोइ मम पिय नंदकुमार॥
जो गल वनमाला धार, भल मणिन मोतियन हार।
छवि गुंजमाल बलिहार, सोइ मम पिय नंदकुमार॥
जो तनु पीतांबर धार, कटि मणि किंकिणि छविदार।
पग नूपुर धुनि झनकार, सोई 'कृपालु' मम यार॥

भावार्थ—भक्त कहता है–जो श्री राधा के प्राणों के

प्राण हैं, जो ब्रजबनिताओं के जीवन-स्वरूप हैं, जो चिदानंदमय सुख समूह हैं, जिनका दिव्य शरीर भी ज्ञान एवं सुख का घनीभूत रूप है, जिनके प्रत्येक रोम से रस की धारा प्रवाहित होती रहती है, वे ही नंदनंदन मेरे प्रियतम हैं। जो वृन्दावन के मध्य करोड़ों ब्रज-युवतियों को साथ लेकर नवीन रास विहार करते रहते हैं, वे ही नंदपुत्र कृष्ण मेरे एकमात्र प्रियतम हैं। दीन-जन ही जिनकी कृपा के विशेष पात्र हैं, पतितों का उद्धार करने के लिये जो पतवार की ही भाँति हैं। निराधारों के आधार रूप वे ही श्रीकृष्ण मेरे प्रियतम हैं। जो अलौकिक प्रेम, रूप एवं रस के सार स्वरूप हैं। जिनकी अतुलनीय सौन्दर्य राशि को देखकर करोड़ों कामदेव भी बलिहार जाते हैं, जिनकी शोभा उनके ही मन को मोहित करने वाली है, वे ही नंदनंदन श्री कृष्ण मेरे प्रियतम हैं। जो मस्तक पर मोर पंख का मुकुट धारण करते हैं, जिनकी केशराशि, अत्यन्त काली एवं घुंघराली है, जिनके ललाट पर सुन्दर कस्तूरी का तिलक लगा हुआ है, वे ही श्रीकृष्ण मेरे प्रियतम हैं। जो कानों में सुन्दर कुंडल धारण करते हैं, जिनकी नासिका बुलाक से

सुशोभित है, जिनके नेत्रों की चितवन अपने भक्तों पर जादू करती है, वे ही नंदकुमार मेरे प्रियतम हैं। जिनके दोनों कर कंकणों से छविमान हैं, हाथ की उंगलियां अँगूठियों से सुन्दर प्रतीत हो रही हैं, जिनके गले का पीताम्बर भक्तों के मन को आकर्षित करता रहता है, वे ही श्रीकृष्ण मेरे एकमात्र प्रियतम हैं। जिनके कण्ठ में वनमाला है, अनेक प्रकार के मणियों एवं मोतियों के हार भी मनोहर लग रहे हैं, गुंजमाल की शोभा पर तो मैं बलिहार जाता हूँ ये ही मेरे प्रियतम हैं। जिनके अंगों पर पीताम्बर फहरा रहा है, सूक्ष्म कटि मणिजटित किंकिणी से दीप्तिमती हो उठी है, चरणों में नूपुर की धुनि झंकृत हो रही है ऐंसे श्रीकृष्ण ही मेरे एकमात्र प्रियतम हैं।

४८

वारी वनवारी पर वारी, वारी वारी वारी।
चिदघन आनँदघन तनु वारी,
प्यारी प्यारी छवि पर वारी, वारी वारी वारी।

अलसी पुष्प रंग तनु वारी,
लखि लखि प्यारी वारी, वारी वारी वारी।
कोटि अनंग लजावनि वारी,
अंग अंग छवि वारी, वारी वारी वारी।
घुँघुरारी कारी लट वारी,
लखि को जो नहिं वारी, वारी वारी वारी।
मोर मुकुट पियरो पट वारी,
छवि पर शिव शुक वारी, वारी वारी वारी।
मुरि मुरि मृदु मुसुकनि छवि वारी,
लखि अगनित रति वारी, वारी वारी वारी।
श्रवन कनक कुंडल छवि वारी
शोभा बेसर वारी, वारी वारी वारी।
कर कनकन कंकन छवि वारी
दुति कौस्तुभ मणि वारी, वारी वारी वारी।
उर दुकूल पीतांबर वारी
कटि छवि काछनि वारी, वारी वारी वारी।
किंकिनि रतन जटित छवि वारी
छवि नूपुर पग वारी, वारी वारी वारी।
पद नखमणि दमकनि दुति वारी
गइ 'कृपालु' हौं वारी, वारी वारी वारी।

भावार्थ—भक्त श्रीकृष्ण के दिव्य रूप पर मुग्ध होकर कहता है–मैं वन में विचरण करने वाले चिदानन्द घन राशि स्वरूपधारी श्रीकृष्ण पर बलिहार जाता हूँ। अलसी पुष्प के वर्ण जैसी जिनके शरीर की कान्ति है, जिनकी शोभा निराली है, मैं उन पर अपने को निछावर करता हूँ। जिनके प्रत्येक अंग की शोभा करोड़ों कामदेवों के सौन्दर्य को लज्जित करती है, मैं उन पर अपना सर्वस्व निछावर करता हूँ। जिनकी घुँघराली काली अलकावली को निरखकर ऐसा कौन वज्र-हृदय है, जो स्वयं को निछावर न कर दे। श्रीकृष्ण के मयूर पंखयुक्त मुकुट की लटक एवं पीले वस्त्र की दिव्य शोभा पर शिव एवं शुक जैसे योगी एवं परमहंस बलिहार जाते हैं। मुड़ मुड़कर मधुर मुस्कराना देखकर असंख्य रति निछावर की जा सकती हैं। कानों के स्वर्ण कुण्डलों एवं नासिका की बुलाक की छवि अति अद्भुत है करों के स्वर्णिम कंकणों की शोभा भी न्यारी है। कण्ठ में कौस्तुभ मणि दीप्तमान है। वक्ष का पीत वस्त्र लहरा रहा है। कमर में काछनी कसी है। मैं इस छवि पर बलिहार जाता हूँ। कमर में रत्नों से जड़ी हुई करधनी तथा चरणों के नूपुरों की शोभा पर मैं स्वयं को

निछावर करता हूँ। चरणों के नख मणि की चमक पर 'कृपालु' बलिहार जाते हैं।

४९

ऊधो कहु नंद कुमार, हम सब भोरी ब्रजनार,
मम सँग किय रास बिहार, मम सँग रह मम भरतार।
मम रोम रोम मम यार, मम नैनन नंदकुमार,
हम लख पियमय संसार, मम सँग रह मम भरतार।
हम चाहत वाय बिसार, बिसरत नहिं हम गइँ हार,
कहु कछु याको उपचार, सँग तजत नाहिं भरतार।
वे मथुरा करहिं बिहार, रह सुखी सदा सरकार,
नहिं चह हम कछु ब्रजनार, मम सँग रह मम भरतार।
हम ब्रज रस पीवन हार, तव नीरस योग विचार,
हम प्रेम योग उर धार, मम सँग रह मम भरतार।
ऊधो दो योग बिसार, गहु तुमहुँ शरण ब्रजनार,
लहु प्रेम सुधा रस सार, लो मत 'कृपालु' उर धार।

भावार्थ—ब्रजगोपियाँ उद्धव से कहती हैं-हे उद्धव अपने मित्र श्रीकृष्ण से जाकर कहना कि हम सब ब्रजांगनायें

अत्यन्त ही भोली भाली हैं। मेरे प्रियतम श्रीकृष्ण–जिन्होंने वृन्दावन में अनेक रात्रियाँ मेरे साथ रास-विलास में व्यतीत की थीं–वे सदैव ही मेरे साथ रहते हैं। मेरे रोम रोम में मेरा प्रियतम रमा हुआ है। मेरे नेत्रों में नंदनंदन निवास करते हैं। हम ब्रजगोपियों को सम्पूर्ण संसार ही अपने प्रियतम से परिपूर्ण दिखाई देता है। मेरा सहचर कृष्ण तो प्रतिपल मेरे साथ ही रहता है। हे उद्धव! यद्यपि हम गोपियाँ चाहती हैं कि कुछ काल के लिये श्रीकृष्ण को भुला दें परन्तु वह हमें एक क्षण को भी नहीं भूलते। यह हमारी विवशता है। उद्धव! क्या तुम्हारे पास कोई ऐसा उपाय है जिससे हम श्यामसुन्दर को भुला दें? वे तो एक क्षण को भी हमारा साथ नहीं छोड़ते। वे भले ही सदैव मथुरा की स्त्रियों के साथ विहार करते रहें। हमें तो उनके सुख से ही सुख की अनुभूति होती है। हमें उनसे किसी प्रकार की अपेक्षा नहीं है। हमारा प्रियतम तो नित्य ही हमारे साथ है। हम ब्रज-गोपियाँ ब्रजरस की ही लालसा रखती हैं। जिस योग मार्ग का उपदेश तुमने हमें दिया है, वह तो अत्यन्त ही शुष्क है। हमने तो हृदय में श्रीकृष्ण के प्रेम

को ही धारण किया है। हे उद्धव! हम तुम्हें तुम्हारे हित की बात बताती हैं—तुम भी योग मार्ग का त्यागकर ब्रजदेवियों के शरणागत होकर उनसे प्रेमामृत के सार को ग्रहण कर लो।

५०

कहु माधो सों ऊधो, ऊधो ऊधो ऊधो।
हमहिं योग नहिँ चाहिय ऊधो,
हम अति सूधी ऊधो, ऊधो ऊधो ऊधो।
प्रथम भोग दिये वाने ऊधो,
सरस रास रस ऊधो, ऊधो ऊधो ऊधो।
अब मोहिं योग सिखावन ऊधो,
पठयो ठग तोहिं ऊधो, ऊधो ऊधो ऊधो।
चित लै गयो हमारो ऊधो,
बरबस निज सँग ऊधो, ऊधो ऊधो ऊधो।
चित्तवृत्ति रोकन हित ऊधो,
होत योग पथ ऊधो, ऊधो ऊधो ऊधो।
याते जाय मधुपुरी ऊधो,
लावहु मम चित ऊधो, ऊधो ऊधो ऊधो।

एक बात औरहु सुनु ऊधो,
नित्य युक्त हम ऊधो, ऊधो ऊधो ऊधो।
साधन सिद्धि देत हैं ऊधो,
सिद्धि न साधन ऊधो, ऊधो ऊधो ऊधो।
तुमहिं बनायो बुद्धू ऊधो,
तुमहूँ बनि गये ऊधो, ऊधो ऊधो ऊधो।
वे बिहरें कुबरी सँग ऊधो,
योग उनहिं चह ऊधो, ऊधो ऊधो ऊधो।
हम 'कृपालु' नहिं कछु चह ऊधो,
मम पिय मम सँग ऊधो, ऊधो ऊधो ऊधो॥

भावार्थ—ब्रजगोपियाँ उद्धव से कहती हैं—हे उद्धव! श्रीकृष्ण से जाकर कहना—हमें योग की आवश्यकता नहीं है। हम तो अत्यन्त ही भोली भाली हैं। हे उद्धव! प्रथम तो तुम्हारे मित्र श्रीकृष्ण ने हमें अत्यन्त ही सरस रास-रस प्रदान किया। अब वे कपटी कृष्ण तुम्हें भेजकर हमें योग की शिक्षा देना चाहते हैं। हमारे चित्त को वे चुराकर अपने साथ ले गये। योगमार्ग तो चित्तवृत्तियों के निरोध का ही मार्ग है। अब हमारा चित्त ही हमारे पास नहीं है तो हम निरोध किसका करेंगी? अतः प्रथम तो तुम मथुरा जाकर

करें। उद्धव! हम यदि वियुक्त होते तो योग धारणा के द्वारा ईश्वर से युक्त होने का प्रयत्न करते, हम तो सदैव ही श्रीकृष्ण से युक्त हैं। साधना से सिद्धि प्राप्त होती है न कि सिद्धि से साधना। तुम्हारे मित्र ने यहाँ भेजकर तुम्हारे साथ छल किया है। तुम उनके छलपूर्ण व्यवहार को समझ नहीं सके। श्रीकृष्ण मथुरा में कुब्जा के साथ भोग-रत हैं अतः योग की आवश्यकता तो इस समय उनको ही है। हे उद्धव! हम श्रीकृष्ण से या तुमसे कोई भी अपेक्षा नहीं रखतीं। हमारा प्रियतम तो निरन्तर ही हमारे साथ-साथ रहता है।

श्रीराधा माधुरी

५१

जाने तोहिं तू राधे, राधे मेरी राधे।
कोटि शारदाहूँ नहिं राधे,
जानि सकैं तोहिं राधे, राधे मेरी राधे।
विधि हरि हर हूँ हारे राधे,
जाने नहिं तोहिं राधे, राधे मेरी राधे।
श्यामहुँ नहिं जाने तोहिं राधे,
अगनित तनु धरि राधे, राधे मेरी राधे।
बनीं ऋचन नारी तव राधे,
दासिन दासी राधे, राधे मेरी राधे।
पुनि वे ऋचन जान कस राधे,
तुम्हरी महिमा राधे, राधे मेरी राधे।
साँचु कहूँ तो तुमहूँ राधे,
पाव अंत नहिं राधे, राधे मेरी राधे।
तुम्हरी कृपा कोर ते राधे,
जाने कोउ तोहिं राधे, राधे मेरी राधे।
कृपा चहत जो तुम्हरी राधे,
पाव कृपा सोइ राधे, राधे मेरी राधे।

सब पर कृपा यदपि श्री राधे,
रहत सदा तव राधे, राधे मेरी राधे।
चाह 'कृपालु' बढ़ै जब राधे,
पाव कृपा तब राधे, राधे मेरी राधे॥

भावार्थ—भक्त अपनी स्वामिनी श्रीराधा के प्रति कहता है–हे श्रीराधे! तुम्हें तुम्हारे अतिरिक्त दूसरा और कौन जान सकता है। करोड़ों सरस्वती भी अपने बुद्धि-बल से तुम्हें जानने में असमर्थ ही सिद्ध होंगी। ब्रह्मा, विष्णु एवं शिव भी तुम्हारी महिमा का ओर छोर नहीं पा सके। तुम्हारे प्रियतम श्यामसुंदर अनेक रूप धारण कर भी तुम्हारे मर्म को नहीं पा सके। वेद की ऋचाओं ने गोपी रूप धारण कर तुम्हारी दासियों का दासत्व स्वीकार किया अतः वे ऋचायें भी तुम्हारी गरिमा का ज्ञान कैसे प्राप्त कर सकती थीं? सत्य तो यह है कि तुम स्वयं भी अपनी लीला का आदि अंत नहीं पा सकती हो। हे राधे! तुम्हारी किंचित् कृपा-दृष्टि के बल से ही कोई तुम्हें किंचित् समझ सका है। जो तुम्हारी कृपा के लिये सदैव लालायित रहता है वही तुम्हारी कृपा को प्राप्त करने का वास्तविक अधिकारी है। यद्यपि तुम तो समान रूप से सभी पर कृपा

करती हो किंतु जब साधक उस कृपा को प्राप्त करने के लिये विशेष रूप से उत्कंठित होता है तभी वह तुम्हारे कृपा-कटाक्ष का अनुभव प्राप्त करता है।

५२

तू ही मेरी स्वामिनि राधे, राधे राधे राधे।
तेरा मेरा नाता तो सनातन राधे,
तेरी श्रुति अस कह राधे, राधे राधे राधे।
मैं हूँ तेरा सुत तू है माता मेरी राधे,
कह अस रसिकन राधे, राधे राधे राधे।
जगहुँ में माता पाले पोसे सुत राधे,
तूने क्यों भुलाया मोहिं राधे, राधे राधे राधे।
यदि कहु तूने क्यों भुलाया मोहिं राधे,
यामें दोषी तेरी माया राधे, राधे राधे राधे।
श्रुति कह तोको तू ही जाने इक राधे,
पुनि कैसे जानें हम राधे, राधे राधे राधे।
जग का खिलौना दै के तूने मोहिं राधे,
या में भरमाया मोहिं राधे, राधे राधे राधे।

अँगुठा पियत बीते युग-युग राधे,
भूखा रोये तेरा सुत राधे, राधे राधे राधे।
सब पूछें मोते को है माता तेरी राधे,
कितै गइ रोता तजि राधे, राधे राधे राधे।
मैं तो सच ही बताऊँ मेरी माता राधे,
जो है सब उर पुर राधे, राधे राधे राधे।
सुना नहिं जाये तेरा अपयश राधे,
अब तो लगा ले उर राधे, राधे राधे राधे।
मन को शरण करवा ले तू ही राधे,
हारा मैं 'कृपालु' याय राधे, राधे राधे राधे।

भावार्थ—श्रीराधा कृपा प्राप्त संत अपनी भावमयी वाणी से अपनी स्वामिनी का गुणगान करते हैं-हे श्रीराधे! तुम ही तो एकमात्र मेरी स्वामिनी हो। तुम्हारा वेद ही इस सत्य की घोषणा कर रहा है। मैं तुम्हारा पुत्र हूँ एवं तुम मेरी माता हो। ऐसा रसिक जन कहते हैं। संसार में तो माता पुत्र का पालन-पोषण करती है, तुम मुझे क्यों भूल गई हो? यदि तुम मुझसे पूछती हो कि मैं तुम्हें क्यों भूल गया हूँ तो इसमें तो दोष तुम्हारी माया का ही है। वेद कहता है-तुम को तो स्वयं तुम ही जानती हो, फिर भला हम तुम्हें कैसे जान

सकते हैं। हे माँ राधे! तुमने संसार के खिलौने (माया की सामग्री) देकर मुझे भ्रमित कर दिया। संसार में भटकते हुए युग पर युग व्यतीत हो गये परन्तु तुमने मेरी सुधि नहीं ली। अँगूठा पीते ही पीते काल समाप्त हो रहा है मुझे तुम्हारे अमृतोपम स्तनपान करने का तो अवसर ही प्राप्त नहीं हुआ। अपने पुत्र को भूखा रोते हुए देखकर तुम्हें दया क्यों नहीं आती? मुझे बिलखता देखकर जगत पूछता है– तेरी माता कौन है? जो तुझे रोता छोड़कर चली गई। मैं भी यथार्थ ही कहता हूँ कि मेरी माँ तो जगज्जननी है जो सभी के हृदय में रहती है। मुझे अपने रोने की भी चिंता नहीं है परन्तु जगत में तुम्हारी निंदा हो यह मुझसे सहन नहीं होगा। अब तो मुझे हृदय से लगा लो। हे श्रीराधे! मेरा मन तो अत्यन्त ही हठी है, इसे तुम अपनी शक्ति से ही अपनी शरण में ले लो। मैं तो अपनी समस्त शक्ति लगाकर भी इसे तुम्हारे शरणागत नहीं कर सका।

५३

भजु मन राधा राधा राधा, राधा राधा राधा।
रसना नित रस पिवु बिनु बाधा,
नाम सुधा रस राधा, राधा राधा राधा।
श्रवन सुनहु नित लीला राधा,
अगनित गुन गन राधा, राधा राधा राधा।
त्वचा सुमिरु नित चरनन राधा,
जेहि हरिहूँ अवराधा, राधा राधा राधा।
नैनन ध्यान नित्य छवि राधा,
लखहु जितै तित राधा, राधा राधा राधा।
नासा ध्यान करहु नित राधा,
दिव्य गंध तनु राधा, राधा राधा राधा।
मन धरु ध्यान रैन दिन राधा,
जेहि छवि सम छवि राधा, राधा राधा राधा।
बुधि प्रतीति दृढ़ इक दिन राधा,
अपनैहैं मोहिं राधा, राधा, राधा राधा।
प्रेम अकाम रहे नित राधा,
सुख मानहु सुख राधा, राधा राधा राधा।

चहहु 'कृपालु' कृपा जो राधा,
कृष्णहुँ भजु सँग राधा, राधा राधा राधा।

भावार्थ—अरे मेरे मन! निरन्तर श्रीराधा का ही सेवन कर। जिह्वा से अनवरत राधा नामामृत का पान कर। नाम-स्मरण करने में भला क्या विघ्न उपस्थित हो सकता है? श्रीराधा अनन्त दिव्य गुण-गणों से विभूषित हैं अत: कानों से निरन्तर उनकी लीला का श्रवण कर उनके गुणानुवाद सुन। कोमल स्पर्श की कामना जब उत्पन्न हो तो श्रीराधा के कमलोपम चरणों का स्मरण कर। श्रीकृष्ण भी इन चरणों की आराधना करते हैं। नेत्रों से पल-पल श्रीराधा की दिव्य मूर्ति का ध्यान कर दसों दिशाओं में उनका ही दर्शन कर। नासिका से श्रीराधा के दिव्य-वपु के सुवास को ग्रहण कर। हे मेरे चंचल मन! तू श्री राधा के निरुपम सौन्दर्य का ही चिंतन कर। श्रीराधा के समान तो श्रीराधा ही हैं। बुद्धि में ऐसी दृढ़ता रहे कि एक दिन मैं अवश्य ही उनकी कृपा को प्राप्त करूँगा।

श्रीराधा के प्रति जो प्रीति हो, उसमें अपने स्वार्थ की गंध न हो। श्रीराधा के हितार्थ ही, उनके सुख में सुख मानते हुए उनके प्रति निष्काम प्रेम की भावना स्थिर करनी

है। यदि श्री राधा की कृपा प्राप्त करनी है तो उनके प्रियतम कृष्ण की भी भक्ति करनी होगी।

५४

भूलेहु भूलो जनि राधे, राधे राधे राधे।
मैं तो तेरी मायावश भूल्यो,
मैं भी तेरी तु ही मेरी राधे, राधे राधे राधे।
तेरी माया एक अविद्या राधे,
रज तम गुण युत राधे, राधे राधे राधे।
तेरी माया दूजी विद्या राधे,
युक्त सत्व गुण राधे, राधे राधे राधे।
ज्ञानिन योगिन साधन राधे,
जाय अविद्या राधे, राधे राधे राधे।
बिनु तेरी अनुकंपा राधे,
जाय न विद्या राधे, राधे राधे राधे।
जा पर कृपा करहु तुम राधे,
दोउ माया जाय राधे, राधे राधे राधे।
याते वेद शास्त्र कह राधे,
साधनबल तजु राधे, राधे राधे राधे।

चरण शरण गहु रानी राधे,
भाजै माया राधे, राधे राधे राधे।
मन पुकार क्रंदन करि राधे,
आवेंगी भजि राधे, राधे राधे राधे।
श्वास श्वास जपु राधे राधे,
उर 'कृपालु' धरि राधे, राधे राधे राधे॥

भावार्थ—हे श्रीराधे! तुम मुझे न भुलाना। तुम्हारी माया की आधीनता स्वीकार करने के कारण मैं यह भूल गया कि मैं तुम्हारा हूँ तुम ही मेरी हो। यद्यपि तुम्हारे लिये तो सम्पूर्ण सृष्टि ही है परन्तु मेरी तो एकमात्र तुम ही हो। हे श्रीराधे! तुम्हारी एक माया तो अविद्या है, जो रजोगुण एवं तमोगुण से युक्त है। दूसरी माया विद्या है, जो सत्वगुण से युक्त है। ज्ञानी एवं योगी अपने साधन-बल से अविद्या-माया को नष्ट कर देते हैं। विद्या माया तो श्रीराधा की कृपा से ही नष्ट होती है। हे श्रीराधे! जिस पर तुम कृपा करती हो, उसकी दोनों माया नष्ट हो जाती हैं। इसीलिये वेद शास्त्र साधन-बल का परित्याग करने को कहते हैं। जो अपने साधन का आश्रय छोड़कर श्रीराधा के चरण-कमलों के शरणागत हो जाता है, उसकी माया नष्ट हो

जाती है। हे मेरे मन! यदि तू करुण–क्रन्दन पूर्वक श्रीराधा का आह्वान करता है तो अत्यन्त कोमल–हृदया श्रीराधा शीघ्रता पूर्वक दौड़ती हुई तेरे समक्ष आ जायेंगी। अतः तू श्वास प्रति श्वास से राधा नाम का जप कर साथ ही हृदय में श्रीराधा की दिव्य छवि को धारण कर।

५५

सब रोग उपचार वैद्य बताय,
प्रेम रोग ही है जो असाध्य कहलाय।
एक रोग काम क्रोध आदि बतलाय,
जिनते हैं हारे योगी ज्ञानी श्रुति गाय।
काम क्रोध आदि रोग मानस कहाय,
जाकों कृष्ण भक्ति निर्मूल नसाय।
एक रोग तो शरीर ते ही उपजाय,
याको औषधि बल वैद्य भगाय।
एक रोग और कर्मजन्य जन पाय,
वाउ भोग करि जन मुक्त ह्वै जाय।

प्रेमरोग की जो औषधि करवाय,
बाढ़ै छिन छिन यह ऐसी है बलाय।
यदपि जगद्गुरु श्यामा श्याम आय,
दोउ ज्ञान आनँदमय भी सदाय।
दोनों सर्व समरथ सर्वशक्ति भाय,
तिनहुँ 'कृपालु' यह रोग सताय।

भावार्थ—सभी रोग वैद्य द्वारा उपाय बताये जाने से शान्त हो जाते हैं। एक प्रेम-रोग ही ऐसा है जिसका शान्त करने का कहीं कोई उपाय नहीं है। काम, क्रोध आदि मानसिक रोगों से तो योगी एवं ज्ञानी भी पराजित हो जाते हैं, वेद ऐसा ही कहता है। इन मानसिक रोगों को कृष्ण-भक्ति ही जड़ से उखाड़ फेंकती है। शारीरिक-रोगों को सांसारिक-वैद्य औषधि के बल से नष्ट कर देते हैं। कर्मों के फल स्वरूप जो रोग प्राप्त होते हैं, वे भोगने से ही नष्ट होते हैं। प्रेम-रोग का कोई उपचार नहीं है। यह तो एक बार जिसे लग जाता है फिर क्षण-क्षण वृद्धि को ही प्राप्त होता है। यद्यपि श्रीराधाकृष्ण जगद्गुरु हैं। ये दोनों सच्चिदानन्दमय भी हैं। ये दोनों सर्वसमर्थ एवं सर्वशक्तिमान भी हैं फिर भी ये प्रेम-रोग से पीड़ित रहते हैं।

५६

बलिहार बलिहार तिन ब्रजनार,
जिनके अधीन रहे हरि साकार।
जो था जग का अनादि पिता भरतार,
सोइ बना ब्रज शिशु नंद कुमार।
जाके डर डरे डर श्रुतिन उचार,
सोइ डरे मैया कर साँटिहिं निहार।
जाकी माया ने नचाया सारा संसार,
सोइ नाचे बूढ़ी यशुमति कर तार।
जिन माया विधि हरि हर गये हार,
सोइ नाचे गोपी छाछ पर बलिहार।
जिन नाम के प्रताप मिले मुक्ति चार,
सोइ बँध्यो उखल दृगन जलधार।
जिन आगे माँगैं भीख ज्ञानी योगी झार,
सोइ गोपी आगे माँगे भीख दे दे प्यार।
प्यार के हैं वश हरि बस यह सार,
जानि लेहु जो 'कृपालु' जाननिहार।

भावार्थ—कवि कहता है कि मैं उन ब्रजगोपियों पर

बलिहार जाता हूँ जिन्होंने अपने प्रेम के बल पर ब्रह्म के साकार स्वरूप श्रीकृष्ण को अपने आश्रित कर लिया है। जो श्रीकृष्ण अनादिकाल से ही जगत के पिता एवं पति हैं वही यशोदा एवं नंद के वात्सल्य-प्रेम-वश ब्रज में साधारण शिशु की भाँति ही क्रीड़ा कर रहा है। वेद जिस ईश्वर के भय से भय को भयभीत हुआ बताता है वही पूर्णतम ब्रह्म कृष्ण ब्रज में माता यशोदा के हाथ की साँटी को देखकर भय से काँप रहा है। जिसकी माया से सम्पूर्ण संसार भ्रमित होकर उसके संकेत के अनुसार ही चेष्टा करता है वही ब्रह्म वृद्धा यशोदा के हाथ की ताली पर नाचता है। जिसकी माया ने ब्रह्मा, विष्णु एवं शिव को भी पराजित कर दिया, वही साकार ब्रह्म किसी ब्रज-गोपी द्वारा दिये गये छाछ के लोभ से उसके संकेत पर नृत्य कर रहा है। इस प्रेम की बलिहारी है। जिसके नाम की यह महिमा है कि वह चारों प्रकार की मुक्तियाँ प्रदान कर देता है। वह स्वयं नेत्रों में जल भरकर यशोदा द्वारा ऊखल में बँधा खड़ा है। जिनके समक्ष ज्ञानियों एवं योगियों के समूह कृपा की याचना करते हैं, वे ही श्रीकृष्ण ब्रजांगनाओं से प्रेम की याचना

करते हैं। सम्पूर्ण ज्ञान-विज्ञान का सार यही है- कि प्रेम के द्वारा ही श्रीहरि को प्राप्त किया जा सकता है। जो भी कोई इस रहस्य को जानना चाहे वह जान सकता है। तुलसी दासजी ने रामचरितमानस में भी कहा—

रामहिं केवल प्रेम पियारा, जानि लेहु जो जाननिहारा।

५७

तू ही गति तू ही मति तू ही रति राधे,
मो सो पतितन को न और ठौर राधे।
माता पिता भ्राता सुत तिय पति राधे,
बनते हितैषी पर स्वारथी हैं राधे।
स्वार्थ बिनु कोउ काउ देखे भी न राधे,
बोलें सब मीठी बोल उर विष राधे।
सुनते हैं सात स्वर्ग लोक सुख राधे,
सोउ काल कर्म गुण आधीन राधे।
उनते भी आगे विधि हरि हर राधे,
वे भी तो हैं कृपा के भिखारी तेरे राधे।

उनके भी ऊपर महाविष्णु राधे,
वे भी महाविष्णु तेरी अंश कला राधे।
श्रुति कह सबते परे हैं ब्रह्म राधे,
जाको रूप निराकार साकार राधे।
साकार ब्रह्म को तो जानो तुम राधे,
तेरी चाकरी को तरसत नित राधे।
उनते भी आगे तेरी ब्रज गोपी राधे,
तुम दोनों की 'कृपालु' कृपा एक राधे।

भावार्थ—भक्त अपनी इष्टदेवी श्रीराधा से कहता है- हे श्रीराधे! तुम ही तो मेरी एकमात्र गति हो, तुम ही मेरी बुद्धि प्रदात्री हो एवं तुम ही मेरे प्रेम की आश्रय हो। राधे! मेरे जैसे पतित के लिये तुम्हें छोड़कर और दूसरा कोई स्थान नहीं है। यद्यपि संसार में माता-पिता भाई बन्धु पुत्र एवं पति-पत्नी आदि के अनेक सम्बन्ध हैं। ये सब प्रकट में तो हितैषी प्रतीत होते हैं किन्तु सबके हृदय में स्वार्थ छिपा रहता है। बिना स्वार्थ के कोई किसी की ओर देखना भी पसन्द नहीं करता। शिष्टाचार-वश सभी अत्यन्त मधुर वाणी बोलते हैं परन्तु हृदय में सभी के विष घुला हुआ है। सुनने में आता है कि सात स्वर्ग लोक सुख से परिपूर्ण हैं।

परन्तु वे लोक काल, कर्म एवं गुणों पर निर्भर हैं। अर्थात् स्वर्ग लोक का सुख क्षणिक है। शुभ-कर्मों से ही प्राप्त होता है तथा वहाँ भी माया के तीन गुण–सत्व, रज एवं तम विद्यमान हैं। **स्वर्गहु स्वल्प अंत दुखदायी**। स्वर्ग लोक से ऊपर ब्रह्मा, विष्णु एवं शिव के लोक हैं। वे भी तुम्हारी कृपा पर ही निर्भर हैं। इन सबसे श्रेष्ठ महाविष्णु हैं, वे महाविष्णु भी तुम्हारे अंश स्वरूप हैं। वेद के अनुसार सर्वोच्च पद ब्रह्म का है, जिसके निराकार एवं साकार दो रूप हैं–साकार ब्रह्म श्रीकृष्ण से तो तुम परिचित ही हो, वे तुम्हारी सेवा को सदा लालायित रहते हैं। उन साकार ब्रह्म से भी उच्च स्थान तुम्हारी ब्रज गोपियों का है। ब्रजगोपियों की कृपा तुम्हारी ही कृपा है।

५८

अपनी ओर लखु राधे, राधे राधे राधे।
हौं तो विमुख सदा ते राधे,
जानूँ नहिं तोहिं राधे, राधे राधे राधे।

तेरी माया ने मोहिं राधे,
बहुत सताया राधे, राधे राधे राधे।
लख चौरासी तनु धरि राधे,
अति दुख पाया राधे, राधे राधे राधे।
काऊ ने न बताया राधे,
तेरी जीवन राधे, राधे राधे राधे।
अगनित जनम पाप किये राधे,
निशि दिन छिन छिन राधे, राधे राधे राधे।
स्वर्गहु सुख भोगे सब राधे,
सब झूठे सुख राधे, राधे राधे राधे।
गुरु ने मरम बतायो राधे,
तेरी स्वामिनि राधे, राधे राधे राधे।
पै लखि पायो नहिं तोहिं राधे,
भई निराशा राधे, राधे राधे राधे।
तब गुरु ने समुझाया राधे,
राधे नामहिं राधे, राधे राधे राधे।
लै अवलंब नाम को राधे,
अब भये निर्भय राधे, राधे राधे राधे।
कबहूँ तो 'कृपालु' छवि राधे,
दिखैरहौ तुम राधे, राधे राधे राधे॥

भावार्थ—भक्त प्रार्थना करते हुए कहता है–हे श्रीराधे! मेरी ओर न देखकर अपनी ओर ही देखो। मैं तो मायाधीन होने के कारण सदा से ही तुमसे विमुख हूँ। भला मैं तुम्हें जानने में समर्थ कैसे हो सकता हूँ। हे श्रीराधे! मैं तुम्हारी माया द्वारा बहुत पीड़ित किया गया हूँ। इसी माया के कारण मैंने चौरासी लाख शरीर धारण किये। मैंने अभी तक अत्यन्त दुख ही दुःख पाये हैं। मुझे यह किसी ने नहीं बताया कि मुझे जीवन प्रदान करने वाली एकमात्र तुम्हीं हो। तुमसे विमुख होकर अनन्त जन्मों में मैंने निरन्तर पाप ही पाप किये। स्वर्ग के सुख भी मैंने भोगे हैं वे सब भी मिथ्या ही हैं। गुरु द्वारा मुझे यह ज्ञात हुआ कि तुम ही मेरी स्वामिनी हो। अभी तक मैंने कहीं तुम्हारी एक झलक भी नहीं पाई। अतः निराश हो गया। गुरु ने इस रहस्य का उद्घाटन किया कि श्रीराधा का नाम ही उनका निवासस्थान है। अब गुरु की कृपा से तुम्हारे नाम का आश्रय लेकर हम निर्भय हो गये हैं। हे श्रीराधे! मुझे विश्वास है कि कभी तुम अपनी मनमोहिनी रूप सुधा का पान हमें भी कराओगी।

५९

अस कब ह्वैहौं राधे, राधे राधे राधे।
तुम्हरोइ ध्यान धरे उर राधे,
गावुँ नित राधे राधे, राधे राधे राधे।
गहवर मंजु कुंज बिच राधे,
लतन लिपटि रोउँ राधे, राधे राधे राधे।
जहँ तू रास करन चह राधे,
देउँ बुहारी राधे, राधे राधे राधे।
आयसु पावूँ जब तब राधे,
बनूँ पहरुआ राधे, राधे राधे राधे।
आवन देउँ न श्यामहुँ राधे,
देखि मान तव राधे, राधे राधे राधे।
सोवत जागत तव छवि राधे,
भूलूँ नहिं पल राधे, राधे राधे राधे।
सात्विक भाव आठहूँ राधे,
प्रकट होंय तनु राधे, राधे राधे राधे।
बनि जाय तोरिहिं इच्छा राधे,
मोरिहुँ इच्छा राधे, राधे राधे राधे।

पतितन प्यार करति तू राधे,
परम पतित मैं राधे, राधे राधे राधे।
अब 'कृपालु' की सुधि लो राधे,
करहु कृपा द्रुत राधे, राधे राधे राधे।

भावार्थ—भक्त कहता है–हे श्रीराधे! मेरे जीवन में वे दिन कब आयेंगे जब मैं निरन्तर मन से तुम्हारी छवि का ध्यान करूँगा? मेरी वाणी अन्य मिथ्या वार्ताओं का त्यागकर कब केवल तुम्हारे नामों का ही गायन करेगी? हे श्री राधे! कब मुझ पर तुम्हारी इस प्रकार की कृपा होगी जब मैं गह्वर-वन की सुन्दर कुंजों की लताओं का आलिंगन कर अश्रुपात करूँगा? जहाँ जहाँ तुम रास करने पधारोगी वहाँ पर सोहनी-सेवी करूँगी। जब कभी तुम आज्ञा प्रदान करोगी कुंज भवन के द्वार पर पहरा दूँगी। हे मानिनी! जब तुम्हारी रुचि ऐसी पाऊँगी कि तुम प्रियतम से मान करो, तब मैं उन्हें, द्वार से प्रवेश भी नहीं करने दूँगी। जाग्रत, स्वप्न एवं सुषुप्ति में एक पल को भी तुम्हारी मनोहर मूर्ति मेरे हृदय से न्यारी न हो। जब तुम मुझे अपना प्रेम प्रदान कर दोगी तब मेरे शरीर में आठों सात्विक भाव (स्तम्भ, स्वेद, रोमांच आदि) उदय होने लगेंगे। हे राधे!

मेरा ऐसा सौभाग्य कब होगा जब तुम्हारी इच्छा ही मेरी इच्छा बन जायगी। तुम तो पतितों पर ही कृपा करती हो, मैं तो अत्यन्त ही पतित हूँ अतः अब मेरी दशा पर भी ध्यान देकर शीघ्रातिशीघ्र कृपा-दृष्टि करो।

६०

आजा प्यारी प्यारी प्यारी आजा, आजा आज़ा आजा।
उर में तो रह नित मन को भी भा जा,
सन्मुख छवि दिखरा जा, आजा आजा आजा।
जित देखुँ तू ही दीखे दृगन समा जा,
तन मन प्रानन छा जा, आजा आजा आजा।
काउ गोपी ते गोपी प्रेम दिला जा,
ब्रज रस बूँद पिला जा, आजा आजा आजा।
इक बार मेरी कहि मोहिं बुला जा,
प्यारी मोहिं अपनी बना जा, आजा आजा आजा।
अपनी बना के निज संग लिवा जा,
मोहिं तजि प्यारी पुनि ना जा, आजा आजा आजा।

काउ सों बताऊँ नहिं चोरी चोरी आजा,
आके प्रीति रीति समुझा जा, आजा आजा आजा।
तू ही मेरी गति यह उर में बिठा जा,
उर बैठी माया को भगा जा, आजा आजा आजा।
मेरे उर विरह की आग लगा जा,
भाग 'कृपालु' जगा जा, आजा आजा आजा॥

भावार्थ—हे श्री राधे! मेरे नेत्रों के समक्ष प्रकट होकर मुझे अपना दिव्य-दर्शन प्रदान करो प्रत्येक प्राणी के हृदय में तो तुम्हारा नित्य निवास है ही परन्तु बाहर प्रकट होकर भी मेरे नेत्रों को सफल कर दो। मेरे नेत्रों में तुम इस प्रकार से छा जाओ कि जिस दिशा में भी मेरी दृष्टि जाय, केवल तुम्हारा ही दर्शन करूँ। मेरे तन, मन एवं प्राणों में समा जाओ। किसी ब्रजगोपी द्वारा मुझे प्रेम प्रदान करा दो। ब्रज-रस की केवल एक बूंद ही मुझे पिला दो। राधे! केवल एक बार ही सही मुझे अपनी कहकर अपने निकट बुलाओ। हे प्यारी राधे! मुझे अपनी बना लो। एक बार मुझे अपनी बनाकर पुनः अपने साथ ही ले चलो। मुझे त्यागकर फिर कहीं न जाना। मैं तुम्हारी रहस्य लीला की चर्चा किसी अन्य से नहीं करूँगी। अतः एक बार आकर

प्रेम-मार्ग का रहस्य समझा दो। तुम्हारे अतिरिक्त मेरे लिये कहीं अन्यत्र स्थान नहीं है। मेरे हृदय में यह विश्वास कब दृढ़ होगा? मेरे हृदय से माया को सदा के लिये दूर कर दो। अपने विरह की ज्वाला मेरे हृदय में जला दो। मेरे सोते हुए भाग्य को जगा दो।

६१

करहु कृपा टुक राधे, राधे मेरी राधे।
तुम्हरी कृपा कोर ते राधे,
बनि जैहौं तव राधे, राधे मेरी राधे।
सिर धरि पैर भजे तब राधे,
माया तेरी राधे, राधे मेरी राधे।
त्रिगुण, त्रिताप, त्रिकर्महुँ राधे,
छू मंतर हों राधे, राधे मेरी राधे।
पंचक्लेश रह लेश न राधे,
पंचकोष जर राधे, राधे मेरी राधे।
राग द्वेष सब जग सों राधे,
रह लवलेश न राधे, राधे मेरी राधे।

विद्या और अविद्या राधे,
दुहुँन जाँय भजि राधे, राधे मेरी राधे।
बनि जाँय इंद्रिय मन बुधि राधे,
दासी तेरी राधे, राधे मेरी राधे।
लखहिं 'कृपालुहिं' ज्ञानी राधे,
घूरि घूरि के राधे, राधे मेरी राधे॥

भावार्थ—भक्त श्रीराधा से प्रार्थना करता है—हे श्रीराधे! किंचित् कृपा-दृष्टि मुझ पर भी करो। तुम्हारे कृपा-कटाक्ष के प्रसाद से कभी मैं भी तुम्हारी बन जाऊँगी। हे राधे! जब तुम्हारी अनुकूलता मुझे प्राप्त हो जायगी तब माया सिर पर पैर रखकर भाग खड़ी होगी। तब तो माया के तीनों गुण, दैहिक, दैविक एवं भौतिक ताप तथा संचित, प्रारब्ध और क्रियमाण कर्म भी तुरन्त ही मेरा पीछा छोड़ देंगे। अविद्या, अस्मिता आदि पंचक्लेश एवं अन्नमय, प्राणमय मनोमय आदि कोष भी भस्म हो जायेंगे। उस समय जगत के प्रति मेरा रागद्वेष भी समाप्त हो जायगा। तुम्हारी कृपा-कोर के प्राप्त होते ही विद्या-अविद्या माया भी सदा के लिये मुझसे दूर हो जायगी। मेरी समस्त इन्द्रियाँ, मन, एवं बुद्धि तुम्हारी सेवा में लग जायेंगी। जब मैं इस

प्रकार की स्थिति को प्राप्त हो जाऊँगा तब ज्ञानी-जन आश्चर्य-पूर्ण दृष्टि से मुझे देखेंगे। (ज्ञानियों को अपनी साधना मात्र से यह स्थिति प्राप्त नहीं होती)।

६२

कैसी माँ तू श्यामा, श्यामा मेरी श्यामा।
हौं हौं तेरा ही सुत श्यामा,
यह कह तव श्रुति श्यामा, श्यामा मेरी श्यामा।
पुनि कत मोहिं भुलायेहु श्यामा,
माँ करुणामयी श्यामा, श्यामा मेरी श्यामा।
विष्ठा विषय खात नित श्यामा,
भ्रमत जगत नित श्यामा, श्यामा मेरी श्यामा।
लख चौरासी तनु धरि श्यामा,
लह्यो दुसह दुख श्यामा, श्यामा मेरी श्यामा।
तव दासी माया ने श्यामा,
हर्‌यो ज्ञान मम श्यामा, श्यामा मेरी श्यामा।
तनु को 'मैं' माना मैं श्यामा,
भूल्यो तुम मम श्यामा, श्यामा मेरी श्यामा।

जग सुख है मृग जल ज्यों श्यामा,
यह नहिं माना श्यामा, श्यामा मेरी श्यामा।
गुरु की कृपा भई जब श्यामा,
तब जाना अब श्यामा, श्यामा मेरी श्यामा।
मैं हूँ अंश तिहारोइ श्यामा,
तू मम अंशी श्यामा, श्यामा मेरी श्यामा।
अब 'कृपालु' नहिं छोड़ूँ श्यामा,
पाछा तोरा श्यामा, श्यामा मेरी श्यामा।

भावार्थ—भक्त श्रीराधा को प्रेमपूर्ण उपालम्भ देता हुआ कहता है–हे श्रीराधे! तुम तो जगज्जननी कहलाती हो परन्तु मुझे आश्चर्य होता है तुम कैसी माँ हो? तुम्हारा वेद कहता है– मैं तुम्हारा पुत्र हूँ। पुनः हे करुणामयी माँ श्यामा! तुमने मुझे किस प्रकार भुला दिया। हे राधे! मैं कब से विषयों की विष्ठा को खाता हुआ संसार में भटक रहा हूँ। हे राधे! मैंने चौरासी लाख शरीर धारण कर असहनीय दुःखों को सहन किया है। तुम्हारी दासी माया ने मेरा समस्त ज्ञान नष्ट कर दिया। मैंने शरीर को आत्मा मानकर शरीर के ही विषयों का संग्रह करने में अपना अमूल्य जीवन नष्ट कर दिया। मैं आत्मा के स्वरूप को

भूल गया। आत्मा की आत्मा तुम हो और तुम्हारे द्वारा ही मुझे सच्चा सुख प्राप्त होगा इसका ज्ञान विस्मृत हो गया। मैंने सांसारिक सुखों की नश्वरता को नहीं जाना। मृगतृष्णा के समान मेरी प्यास कभी शान्त नहीं हुई। जब गुरु की कृपा मुझे प्राप्त हुई तब मैं जान सका कि आत्मा की सर्वस्व तो एकमात्र तुम ही हो। हे राधे! मैं तुम्हारा अंश हूँ, तुम मेरी अंशी हो। अब जब मैंने तुम्हें अपना समझ लिया तो कदापि तुम्हारा पीछा नहीं छोड़ सकता।

६३

जिया नहिं जाय अब राधे, राधे राधे राधे।
तुम बिनु युग युग बीते राधे,
पाये अति दुख राधे, राधे राधे राधे।
रसिकन मोहिं समुझायेहु राधे,
तव जग नहिं, तव राधे, राधे राधे राधे।
यह भी रसिक जनायेहु राधे,
रहति नाम मधि राधे, राधे राधे राधे।
तब ते लेत नाम तव राधे,
पावत रस नहिं राधे, राधे राधे राधे।

तू तो है रस अम्बुधि राधे,
वैसेहि नामहुँ राधे, राधे राधे राधे।
करत नाम अपराधन राधे,
कारण गुरु कह राधे, राधे राधे राधे।
एक बार दिखला दे राधे,
टुक निज झाँकी राधे, राधे राधे राधे।
रस का चसका लगि जाय राधे,
मन न जाय जग राधे, राधे राधे राधे।
यदपि न हौं अधिकारी राधे,
तदपि कृपा चह राधे, राधे राधे राधे।
तू 'कृपालु' कह रसिकन राधे,
यह प्रतीति उर राधे, राधे राधे राधे।

भावार्थ—हे श्रीराधे! अब तुमसे रहित होकर जीवन धारण करना मेरे लिये भार स्वरूप है। तुमसे दूर रहते हुए युग पर युग व्यतीत हो गये और मैं भाँति भाँति के दु:ख सहता रहा। रसिकों के सँग से मुझे यह ज्ञात हुआ कि संसार मेरा नहीं है, मेरी तो एकमात्र तुम ही हो। रसिकों ने मुझे यह भी बताया कि तुम अपने नाम में नित्य निवास करती हो। मैंने इस बात का विश्वास कर तुम्हारा नाम

गाना प्रारम्भ कर दिया किंतु नाम के रस का आस्वादन नहीं कर पाता। तुम तो रस की समुद्र हो नाम भी तुम्हारे समान ही है। इसका कारण गुरु ने बताया–'नामापराध नाम के सुख से वंचित रखता है' यदि तुम कृपा करके एक बार अपनी झलक दिखा दो तो मेरे मन को तुम्हारे रूप-रस का स्वाद प्राप्त हो जाये तो पुनः यह जगत के विषयों से विरक्त हो जाये। यद्यपि मैं तुम्हारे दर्शनों का अधिकारी नहीं हूँ तथापि तुम्हारी कृपा की प्रतीक्षा करता हूँ। रसिकजन कहते हैं कि तुम अत्यन्त कृपामयी हो, मुझे ऐसा विश्वास है।

६४

तू कैसी मातु हमार, निज शिशु कहँ दीन बिसार,
दासी माया सुत मार, सुनु अलबेली सरकार।
तू तो करुणा अवतार, सब पर कर कृपा अपार,
पुनि कत निष्ठुरता धार, सुनु अलबेली सरकार।
तू पतितन ही कर प्यार, तू पतितन की पतवार,
हौं पतितन को सरदार, सुनु अलबेली सरकार।

बिनु कारण तू दे प्यार, अस कह सब रसिक पुकार,
कत बार हमारिहिं बार, सुनु अलबेली सरकार।
तू निराधार आधार, हम निराधार सुकुमार,
अब तो सुधि लेहु हमार, सुनु सुनु 'कृपालु' सरकार।

भावार्थ—भक्त श्रीराधा को उलाहना देता है– तुम कैसी माँ हो जो अपने पुत्र को भूल गई हो। हे अलबेली स्वामिनी! तुम्हारी दासी माया तुम्हारे अपने ही पुत्र को सता रही है। हे करुणा की अवतार स्वरूपिणी राधे! सभी जीवों पर तुम्हारी असीम कृपा निरन्तर बरस रही है फिर मेरे लिये निष्ठुरता क्यों धारण की है। हे स्वामिनी! तुम तो पतितजनों को ही अपनाती हो। पतितों के लिये तो तुम्हारा ही अवलम्ब है। मैं तो पतितों का शिरोमणि हूँ फिर मुझे अपनाने में विलम्ब क्यों कर रही हो? तुम्हारे रसिक जन पुकार कर कह रहे हैं कि तुम अकारण ही प्रेम और कृपा प्रदान करती हो फिर हमारी बारी आने पर विलम्ब क्यों कर रही हो! हे राधे! तुम निराश्रयों के लिये आश्रय स्वरूपा हो। हे सुकुमारी! हम भी निरवलम्ब हैं। हे कृपामयी! अब तो हमारी दशा पर ध्यान दो।

६५

बामा बना दे मोहिं श्यामा, श्यामा मेरी श्यामा।
दिव्य धाम बरसानो श्यामा,
जनमूँ तहँ बनि बामा, श्यामा मेरी श्यामा।
पावूँ नित नव सेवा श्यामा,
सँग रहि तव ब्रज बामा, श्यामा मेरी श्यामा।
देउँ बुहारी सँग ब्रज बामा,
रास करहु जहँ श्यामा, श्यामा मेरी श्यामा।
मर कर भी न तजूँ तव धामा,
कृपा करहु अस श्यामा, श्यामा मेरी श्यामा।
लीला हित वृन्दावन धामा,
चलूँ संग तव श्यामा, श्यामा मेरी श्यामा।
तव रुचि महँ राखौं रुचि श्यामा,
जिमि सिगरी ब्रज बामा, श्यामा मेरी श्यामा।
हौं नहिं चह वैकुंठहुँ धामा,
गोलोकहुँ नहिं श्यामा, श्यामा मेरी श्यामा।
हौं 'कृपालु' चह सेवा श्यामा,
निशिदिन आठौं यामा, श्यामा मेरी श्यामा।

भावार्थ—भक्त श्रीराधा से याचना करता है-हे श्रीराधे!

मुझे भी ब्रजगोपी बना देना। तुम्हारे दिव्य बरसाने धाम में गोपी बनकर जन्म लूँ। अन्य ब्रजगोपियों के साथ रहते हुए मुझे तुम्हारी नित्य नवीन सेवायें प्राप्त होती रहें। जिस स्थान पर तुम रासविलास करो उस स्थान को मैं झाड़ बुहार कर स्वच्छ रखूँ। हे श्यामा! ऐसी कृपा करो जिससे कि मैं मृत्यु के उपरान्त भी तुम्हारे धाम का परित्याग न करूँ। जब तुम लीला-विहार के हेतु वृन्दावन पधारो तब तुम्हारे अनुगत होकर तुम्हारे पीछे पीछे चलूँ। जिस प्रकार समस्त ब्रजगोपियाँ तुम्हारी रुचि में ही अपनी रुचि रखती हैं-मैं भी अपनी इच्छा को तुम्हारी इच्छा में जोड़ दूँ। हे राधे! मुझे वैकुण्ठ गोलोक धाम को प्राप्त करने की इच्छा नहीं है। मैं तो आठों पहर तुम्हारी सेवा में ही रहना चाहती हूँ।

६६

मेरी तो हैं जीवन राधे, राधे राधे राधे।
काउ के हैं जग महँ धन बल राधे,
मम निर्धन बल राधे, राधे राधे राधे।

काउ बल कर्म ज्ञान को राधे,
मम निर्बल बल राधे, राधे राधे राधे।
सब बल समल जगत के राधे,
तव बल निर्मल राधे, राधे राधे राधे।
इक दिन सब बल तजि दें राधे,
तव बल नित सँग राधे, राधे राधे राधे।
सब बल दुख परिणामी राधे,
तव बल सुखमय राधे, राधे राधे राधे।
सब बल मायिक नीरस राधे,
तव बल रस प्रद राधे, राधे राधे राधे।
सब बल में भय ही भय राधे,
तव बल निर्भय राधे, राधे राधे राधे।
सब बल मायिक गुणमय राधे,
तव बल निर्गुण राधे, राधे राधे राधे।
सब बल तो हैं सीमित राधे,
बल असीम तव राधे, राधे राधे राधे।
सब बल अंश तिहारे राधे,
तव बल अंशी राधे, राधे राधे राधे।
तज्यो 'कृपालु' अंश बल राधे,
गहि अंशी बल राधे, राधे राधे राधे॥

भावार्थ—भक्त अपनी भावना प्रकट करते हुए कहता है–श्री राधा ही मेरी जीवन-स्वरूपा हैं। संसार में किसी को धन का बल है परन्तु मुझ निर्धन का बल तो राधा ही हैं। किसी को कर्म एवं किसी को ज्ञान का बल है, मुझ निर्बल की बल-स्वरूप तो श्रीराधा ही हैं। संसार के समस्त बल मल से पूर्ण हैं, तुम्हारा बल ही निर्मल है। संसार के सभी बल– धन, परिवार मित्र आदि एक दिन जीव का परित्याग कर देते हैं, तुम्हारा बल ही सदा साथ रहता है। सभी बल परिणाम में दुखप्रद हैं, तुम्हारा बल ही सुख प्रदान करने वाला है। मायिक सभी बल अत्यन्त ही नीरस हैं, तुम्हारा ही बल रस प्रदाता है। संसार के सभी बल भय से युक्त हैं। सांसारिक बल माया के गुणों से युक्त हैं, तुम्हारा बल ही दिव्य है। अन्य सभी बल सीमित हैं। तुम्हारा बल ही असीम है। समस्त बल तुम्हारे ही अंश है, तुम्हारा बल उनका अंशी है। हे राधे! मैंने तो आंशिक बलों का त्यागकर तुम्हारे अंशी स्वरूप बल का आश्रय लिया है।

६७

मैं तेरी तू मेरी, मेरी राधे मेरी।
मैं हूँ राधे तेरी चेरी,
तू है स्वामिनि मेरी, मेरी राधे मेरी।
मो पै कृपा भई नित तेरी,
मानी नहिं बुधि मेरी, मेरी राधे मेरी।
बनी रही विषयन की चेरी,
ऐसी दुर्मति मेरी, मेरी राधे मेरी।
योनि लक्ष चौरासी तेरी,
भई दुर्दशा मेरी, मेरी राधे मेरी।
यामें कारण माया तेरी,
मारी मति सोइ मेरी, मेरी राधे मेरी।
शक्ति महामाया है तेरी,
शक्ति परम लघु मेरी, मेरी राधे मेरी।
बनि असहाय पाय दुख चेरी,
लखहु अबहुँ ढिग मेरी, मेरी राधे मेरी।
सब जग कह हौं हौं सखि तेरी,
दशा जान तू मेरी, मेरी राधे मेरी।

पावूँ कृपा नेकु जो तेरी,
बिगरी बनि जाय मेरी, मेरी राधे मेरी।
लई 'कृपालु' शरण अब तेरी,
कबहुँ बने तू मेरी, मेरी राधे मेरी॥

भावार्थ—हे श्रीराधे! मैं एकमात्र तुम्हारी ही हूँ। तुम ही एकमात्र मेरी हो। राधे! मैं तुम्हारी दासी हूँ, तुम मेरी स्वामिनी हो। राधे! तुमने सदैव ही मुझ पर कृपा की किन्तु मेरी मायिक बुद्धि ने कभी तुम्हारी कृपा का आभार नहीं माना। मेरी दुर्बुद्धि की यह दशा है कि निरन्तर विषयों में ही रची पची रही। इसी कारण चौरासी लाख योनियों में मेरी अत्यन्त दुर्दशा हुई। इसका कारण तुम्हारी माया ही है। इस माया ने ही मेरी बुद्धि को नष्ट किया है। हे राधे! तुम्हारी माया अत्यन्त शक्तिमती है उसके समक्ष मेरी शक्ति तो कुछ भी अर्थ नहीं रखती। तुम्हारी दासी अत्यन्त असहाय होकर दुख पा रही है। अब तो कृपा कर मेरी ओर दृष्टिपात करो। सम्पूर्ण संसार यही कहता है कि मैं तुम्हारी सखी हूँ किंतु मेरी दयनीय दशा को तो तुम ही जानती हो। हे राधे! यदि किसी भी प्रकार से तुम्हारी

किंचित् कृपा-दृष्टि हो जावे तो मेरी सदा सदा की बिगड़ी बन जावे। 'कृपालु' कहते हैं कि मैंने तो अब तुम्हारी ही शरण ग्रहण की है। कभी तो तुम मेरी भी बनोगी।

६८

मोहिं अपनी करु राधे, राधे मेरी राधे।
रहूँ धाम बरसाने राधे,
अरु वृंदावन राधे, राधे मेरी राधे।
लखूँ तिहारी लीला राधे,
निशि दिन छिन छिन राधे, राधे मेरी राधे।
तुम या तुम्हरी दासी राधे,
जो सेवा दे राधे, राधे मेरी राधे।
करूँ सोइ सेवा नित राधे,
है बड़भागिनि राधे, राधे मेरी राधे।
नित चाहूँ तेरो सुख राधे,
निज सुख चाह न राधे, राधे मेरी राधे।

चह हौं टहल महल की राधे,
बनी टहलिनी राधे, राधे मेरी राधे।
तेरी ही रुचि को हौं राधे,
मानूँ निज रुचि राधे, राधे मेरी राधे।
तुम ही मम 'कृपालु' थीं राधे,
तुम ही रहिहौ राधे, राधे मेरी राधे॥

भावार्थ—भक्त कहता है-हे राधे! मुझे भी किसी प्रकार से अपनी बना लो। मैं तुम्हारे नित्य धाम बरसाने और वृन्दावन में वास करूँ। तुम्हारी दिव्य लीलाओं का दर्शन मुझे क्षण-क्षण होता रहे। तुम या तुम्हारी दासियाँ मुझे जो सेवा प्रदान करें सदा मैं उस सेवा को करती रहूँ। सेवा पाकर अपने भाग्य की सराहना करूँ। मैं निरन्तर तुम्हारे सुख की ही कामना करूँ। अपने सुख की लेशमात्र भी कामना मेरे हृदय में शेष न रहे। अपने महल की दासी बनाकर मुझे महल की टहल प्रदान करो। हे श्रीराधे! ऐसी कृपा करो जिससे कि तुम्हारी रुचि ही मेरी रुचि बन जावे। हे श्रीराधे! मेरी तो एकमात्र तुम ही थी एवं सदा सदा तुम ही रहोगी।

६९

मोहिं सोच तव श्यामा, श्यामा मेरी श्यामा।
कृपा करति बिनु कारण श्यामा,
कह तुम्हरे जन श्यामा, श्यामा मेरी श्यामा।
हमरिहिं बेर बेर क्यों श्यामा,
इहै सोच मन श्यामा, श्यामा मेरी श्यामा।
सब मोहिं कहत जगद्गुरु श्यामा,
तुम जानत जस श्यामा, श्यामा मेरी श्यामा।
हौं न जगत को गुरु हौं श्यामा,
जगत मोर गुरु श्यामा, श्यामा मेरी श्यामा।
गावूँ नाउँ तिहारोइ श्यामा,
ध्यावूँ जग सुख श्यामा, श्यामा मेरी श्यामा।
भक्ति होय मन ही ते श्यामा,
यह जानत हौं श्यामा, श्यामा मेरी श्यामा।
पर उपदेश कुशल हौं श्यामा,
निज हित कुशल न श्यामा, श्यामा मेरी श्यामा।
याते तव अपयश हो श्यामा,
यह पछितावा श्यामा, श्यामा मेरी श्यामा।
अब 'कृपालु' मोहूँ कहँ श्यामा,
देहु प्रेम निज श्यामा, श्यामा मेरी श्यामा॥

भावार्थ—हे श्रीराधे! मुझे अपनी चिन्ता नहीं है मुझे तो तुम्हारी चिन्ता है। संसार मुझे तुम्हारा समझता है और मेरी दशा तो अत्यन्त ही दयनीय है अतः मेरे कारण कहीं तुम्हारा अपयश न हो। तुम्हारे भक्त जन कहते हैं कि तुम बिना कारण ही कृपा करती हो। परन्तु मेरे साथ देर क्यों हो रही है मुझे यही आश्चर्य है। संसार मुझे जगद्गुरु कहता है परन्तु वास्तविक दशा तो तुम ही जानती हो। मैं जगत का गुरु नहीं हूँ अपितु जगत ही मेरा गुरु है। मैं मुख से तो तुम्हारा नाम गाता हूँ किंतु संसार के सुखों का चिंतन करता हूँ। यद्यपि मैं यह जानता हूँ कि भक्ति मन से ही की जाती है। हे श्री राधे! मैं दूसरों को हितोपदेश करने में तो कुशल हूँ परन्तु अपना हित-साधन करने में चतुर नहीं बन सका। मेरी ऐसी जीवन-चर्चा से तुम्हारा अपयश होगा यही ग्लानि मुझे चिंतित कर रही है। हे श्रीराधे! अब तो एक ही उपाय है—तुम तुझे अपना प्रेम प्रदान करो।

७०

हमरिहुँ सुधि लो राधे, राधे राधे राधे।
किये पाप अगनित हौं राधे,
जनमि जनमि जग राधे, राधे राधे राधे।
अंत न पैहौ पापन राधे,
काल अनंतहुँ राधे, राधे राधे राधे।
याते न्याय करहु जनि राधे,
करहु कृपा अब राधे, राधे राधे राधे।
न्याय करत समदर्शिहुँ राधे,
कृपा रूप तुम राधे, राधे राधे राधे।
जग महँ भक्त वत्सला राधे,
नाम न प्रिय तव राधे, राधे राधे राधे।
नाम पतित पावनि तव राधे,
सब कहँ प्रिय लग राधे, राधे राधे राधे।
सब जानत मोहिं तेरोइ राधे,
झूठ मूठ कहँ राधे, राधे राधे राधे।
अब तू झूठ मूठ को राधे,
साँचु बना दे राधे, राधे राधे राधे।
तू तो बिनुहिं मोल दे राधे,
सुधा प्रेम रस राधे, राधे राधे राधे।

मोहिं अपनो कछु सोच न राधे,
सोच तोर मोहिं राधे, राधे राधे राधे।
तव 'कृपालु' अपयश सुनि राधे,
सहि न जात मोहिं राधे, राधे राधे राधे॥

भावार्थ—भक्त कहता है–हे श्रीराधे! मेरी दशा पर भी विचार करो। मैंने संसार में जन्म धारण कर असंख्य पाप किये। यदि तुम मेरी तरफ देखोगी तो अनन्त काल तक भी मेरे पापों का अन्त नहीं होगा। अब न्याय करने का विचार त्याग दो। केवल कृपा ही करो। न्याय तो समदर्शी श्रीकृष्ण भी करते हैं परन्तु तुम तो कृपा का ही साकार रूप हो। इस संसार में तुम्हारा 'भक्त वत्सला' नाम इतना प्रिय नहीं है जितना 'पतितपावनी'। अतः मुझे पावन बना दो। अभी तक तो सब झूठ में ही मुझे तुम्हारा समझते हैं, तुम अपनी कृपा से इस झूठ को सच करके दिखा दो। हे राधे! अमूल्य प्रेमामृत को तुम बिना, कोई मूल्य लिये ही बाँटती हो। मुझे अपने लिये, किसी प्रकार की चिंता नहीं है—मैं तो पतित हूँ ही, अपनी शक्ति से तो मैं पावन बन नहीं सकता। चिन्ता तो मुझे तुम्हारी है। संसार में मेरे द्वारा तुम्हारा अपयश होगा। संसार कहेगा–यह राधा का

दास है और इसकी इतनी शोचनीय दशा–आश्चर्य! तुम्हारे प्रति जो आक्षेप होंगे, वे मुझसे सहन नहीं होंगे।

७१

मम स्वामिनि श्यामा जू, मम जीवनि श्यामा जू।
मम भामिनि श्यामा जू, जय जय जय श्यामा जू॥
मम माता श्यामा जू, मम दाता श्यामा जू।
मम त्राता श्यामा जू, जय जय जय श्यामा जू॥
मम शासक श्यामा जू, मम पालक श्यामा जू।
मम प्रेरक श्यामा जू, जय जय जय श्यामा जू॥
मम मन महँ श्यामा जू, मम नैनन श्यामा जू।
मम प्रानन श्यामा जू, जय जय जय श्यामा जू॥
भीतर भी श्यामा जू, बाहर भी श्यामा जू।
दसहूँ दिसि श्यामा जू, जय जय जय श्यामा जू॥
गावूँ गुन श्यामा जू, ध्यावूँ छवि श्यामा जू।
लावूँ उर श्यामा जू, जय जय जय श्यामा जू॥
दीनन की श्यामा जू, पतितन की श्यामा जू।
अधमन की श्यामा जू, जय जय जय श्यामा जू॥

रसखानी श्यामा जू, सुखदानी श्यामा जू।
ब्रजरानी श्यामा जू, हैं 'कृपालु' श्यामा जू॥

भावार्थ—भक्त अपने भाव प्रकट करते हुए कहता है। मेरी एकमात्र स्वामिनी श्रीराधा ही हैं। मेरी स्वामिनी श्रीराधा ही मेरी जीवन प्रदायिनी हैं। श्रीकृष्ण-भामिनी श्रीराधा की सदैव ही जय हो। श्रीराधा ही मेरी माँ हैं। मेरे लिये दानी शिरोमणि भी श्रीराधा ही हैं। मेरी रक्षा करने में भी श्री राधा सदा तत्पर रहती हैं। ऐसी मेरी स्वामिनी की सदैव ही विजय हो। मुझ पर शासन करने वाली भी एक मात्र श्रीराधा ही हैं। मेरा पालन पोषण भी उनकी कृपा पर ही निर्भर है। मेरे मन बुद्धि आदि को तत्कर्म करने की प्रेरणा भी श्रीराधा द्वारा ही प्राप्त होती है। ऐसी श्रीराधा सदैव विजयिनी बनें। मेरे मन में एकमात्र श्रीराधा का ही साम्राज्य है। मेरे नेत्रों में भी श्रीराधा की ही मनोहारिणी छवि छाई है। मेरे प्राणों पर भी श्री राधा का ही आधिपत्य है। ऐसी मेरी श्रीराधा सदा सर्वदा जय को प्राप्त हों। मेरे भीतर भी मेरी स्वामिनी ही विराजमान हैं। शरीर के बाहर भी एकमात्र श्रीराधा ही हैं। दसों दिशाओं में सर्वव्यापिनी श्री राधा ही मुझे दृष्टिगत हों। मैं सदा सर्वदा अपनी इष्ट देवी श्री राधा का ही गुणगान करता रहूँ। श्रीराधा

की छवि मेरे हृदय में छाई रहे। नेत्रों में उनका ही ध्यान रहे। त्रिभुवन में दीन-जनों पर दया-दृष्टि करने वाली एकमात्र मेरी श्री राधा ही हैं। पतितों का उद्धार करने में वे कभी विलम्ब नहीं करतीं। मेरे जैसे अधमों को भी उनकी दया का ही आश्रय है। ऐसी मेरी स्वामिनी श्यामा सदा श्रीकृष्ण द्वारा पूजित हों। एकमात्र श्रीराधा ही रस की अम्बुधि हैं सभी प्राणियों को सच्चा सुख देने वाली भी एकमात्र श्रीकृष्ण प्रिया राधा ही हैं। ब्रजमंडल की अधीश्वरी श्री राधा अत्यन्त ही कृपामयी हैं।

७२

कृपा करु कृपा करु कृपा करु राधे,
कहा घटि जाय तोरा कृपा करु राधे।
तेरा तो है तन मन प्राण कृपा राधे,
तू तो इक कृपा को ही दूजा रूप राधे।
तेरा तो है एक काम कृपा कृपा राधे,
कृपा बिनु तू तो रहि नहिं सक राधे।
जग जाने जल मीन जीवन राधे,
ऐसे ही कृपा तेरा जीवन राधे।

यों तो सुर नर सब कृपा करें राधे,
किंतु उनकी कृपा सकारण राधे।
तू तो है अकारण कृपामयी राधे,
दीन जन पर ही तू कृपा करे राधे।
तेरी कृपा ते ही विधि रचें जग राधे,
तेरी कृपा ते ही हरि पालें जग राधे।
तेरी कृपा ते ही शिव नासें जग राधे,
तेरी कृपा बिनु पत्ता हिले नहिं राधे।
तेरी कृपा बिनु ब्रह्म न्यायी रहे राधे,
तेरी कृपा ते 'कृपालु' बने ब्रह्म राधे॥

भावार्थ—हे कृपामयी राधे! मेरे ऊपर भी तो कृपा करो। मुझ पर कृपा करने से तुम्हारे कृपा के भंडार में कोई कमी नहीं आयेगी अपितु तुम्हारे यश का ही विस्तार होगा। हे राधे! तुम्हारा तन, मन, प्राण सब कृपा द्वारा ही निर्मित है। तुम तो कृपा का ही एक दूसरा स्वरूप हो। राधे! कृपा करने के अतिरिक्त अन्य कोई कार्य तुम नहीं कर सकतीं। कृपा किये बिना तुमसे रहा भी नहीं जाता। जिस प्रकार संसार में मछली जल से ही जीवित रहती है उसी प्रकार कृपा ही तुम्हारा जीवन है। अर्थात् तुमने जीवन-

धारण ही कृपा करने के लिये किया है। संसार में सुर नर मुनि भी कृपा करते हुए देखे जाते हैं परन्तु वे बिना कारण के कृपा नहीं कर सकते।

सुर नर मुनि सबकी यह रीति, स्वारथ लागि करहिं सब प्रीती। सम्पूर्ण विश्व में अकारण कृपा करने वाली तो एकमात्र तुम ही हो। संसार में सब बने बने के ही साथी हैं परन्तु तुम्हारी कृपा के पात्र तो विशेषत: दीन-जन ही हैं। श्रीराधे! तुम्हारी कृपा से ही ब्रह्मा सृष्टि की रचना करते हैं। तुम्हारी कृपा से ही विष्णु जगत का पालन करने में समर्थ होते हैं। तुम्हारी कृपा से ही शिव संसार का संहार करते हैं। हे श्रीराधे! तुम्हारी कृपा के बिना वृक्ष का पत्ता भी हिल नहीं सकता। श्रीराधे! ब्रह्म श्री कृष्ण केवल न्याय ही करते हैं परन्तु तुम्हारी कृपा को प्राप्त कर वे भी कृपालु बन सके।

७३

मेरा तन मन धन प्राण तेरा राधे,
मेरा मैं भी नहिं पुनि कहु तोहिं का दे।

तेरा सुत होके मैं भिखारी बना राधे,
माता सर्व समरथ तभू ध्यान ना दे।
माना मैं कुपूत कपटी कुटिल राधे,
किन्तु पुनि जाऊँ कित तू ही बता दे।
मैं तो पतितन सिरमौर प्यारी राधे,
मेरे सम कोउ हो पतित तो बता दे।
तू तो है पतितपावनि रानी राधे,
कत मोय पावन किय न बता दे।
तेरे द्वार के भिखारी हरि हर राधे,
मेरी है बिसात कहा तू ही बता दे।
भीख माँगना भी मोहिं आवे नहिं राधे,
और कछु ना दे मोहिं माँगना सिखा दे।
जग सब साथी समरथ के हैं राधे,
तेरे बिनु दीनबंधु कौन है बता दे।
लख चौरासी द्वार माँग्यो भीख राधे,
तेरा द्वार जानूँ नहिं तू ही जना दे।
तेरे सब सुत तो हैं खरे खरे राधे,
मुझ खोटे को तो खरे संग चला दे।
तेरा द्वार तजि अब जाऊँ नहिं राधे,
चाहे तू 'कृपालु' मो पै चक्र चला दे।

भावार्थ—भक्त कवि श्रीराधा के प्रति अपने भाव प्रकट करते हुए कहते हैं–हे राधे! मेरा तन, मन, धन, प्राण (सर्वस्व) एकमात्र तुम्हारा ही है। जब मेरा कहलाने वाला मैं भी अपना नहीं है तब भला मैं तुम्हें भेंट में क्या प्रदान करूँ राधे! तुम्हारा पुत्र होकर मैं संसार में भीख माँग रहा हूँ। तुम मेरी सर्वसमर्थ माँ हो कर भी मेरी दशा पर ध्यान नहीं देती हो। इसका कारण क्या है? राधे! मैं स्वीकार करता हूँ कि मैं तुम्हारा कपटी एवं कुटिल कुपुत्र हूँ फिर भी मेरे लिये तुम्हारे सिवा कोई अन्य आश्रय नहीं है। मैं किससे अपनी व्यथा कहूँ? श्रीराधे! मैं भली भाँति जानता हूँ कि मैं पतित-जनों का शिरोमणि हूँ। मेरी समता करने वाला कोई दूसरा पापी हो तो तुम ही उसका नाम बता दो। हे पतितपावनी राधे! तुमने मुझे अभी तक पवित्र क्यों नहीं किया? राधे! जब ब्रह्मा, विष्णु एवं शिव तक तुम्हारे द्वार पर याचना करते हैं, तब मैं यदि तुमसे कृपा की भिक्षा चाहूँ तो इसमें आश्चर्य ही क्या है? मैं किस गणना में हूँ। हे राधे! मैं तो भीख माँगना भी नहीं जानता अन्यथा अब तक तुम्हारी कृपा मुझे प्राप्त हो गई होती अत: अब तुम केवल मुझे भिक्षा

माँगने की शिक्षा दो। राधे! संसार में सभी समर्थ का साथ देते हैं। दीनों पर दया करने वाली तो एकमात्र तुम ही हो। हे राधे! चौरासी लाख शरीर धारण कर मैंने विभिन्न द्वारों पर तो भिक्षा माँगी परन्तु तुम्हारे द्वार से मैं अपरिचित हूँ। तुम ही कृपा करके मुझे अपना द्वार दिखा दो। हे राधे! तुम्हारे सभी पुत्र सर्वगुण सम्पन्न हैं। मुझ गुणहीन को भी उनमें ही मिला लो। राधे! मैंने भी प्रतिज्ञा कर ली है कि तुम्हारा द्वार त्याग कर अन्यत्र नहीं जाऊँगा भले ही तुम मुझ पर चक्र से प्रहार करो।

७४

तू ही मेरी है रँगीली महल वारी।
नहिं छोडूँ पाछा तेरा प्यारी सुकुमारी।
रसिकों ने बताया तेरी इक प्यारी।
भोरी भारी बरसाने वारी सुकुमारी।
तू ही मेरी गति मति रति सुकुमारी।
बैकुंठहुँ सुख नहिं चह प्यारी।
मोहिं दे दे वर ऐसा जासों सुकुमारी।

दउँ नित ही बुहारी गहवर प्यारी।
थकि जाओ जब रास महँ सुकुमारी।
करुँ व्यजन दबाऊँ चरनन प्यारी।
हो जो तेरी अनबन सँग बनवारी।
नये नये चुटकुले ते हँसाउँ प्यारी।
जेहि डगर चलन चह सुकुमारी।
तेहि डगर बुहारी देती रहुँ प्यारी।
जो भी सेवा तेरी गोपी कहें सुकुमारी।
दौरि दौरि के विभोर हो के करुँ प्यारी।
तेरे रोम रोम ब्रज रस चुवे प्यारी।
पियें नित ब्रजनारी अरु बनवारी।
निज ब्रज रस मोको भी पिला दे प्यारी।
यद्यपि है 'कृपालु' नहिं अधिकारी।

भावार्थ—हे महलों में वास करने वाली सुकुमारी रँगीली राधे! मेरी एकमात्र अवलम्ब स्वरूपा तुम ही तो हो। हे सुकुमारी भोली भाली राधे! तुम्हारे रसिकों द्वारा ही मुझे यह ज्ञात हुआ कि मेरी तो एकमात्र तुम ही हो। हे बरसाने ग्राम वासिनी राधे! मेरी एकमात्र आश्रय स्वरूपा तुम ही हो। तुम ही मेरी बुद्धि को प्रेरणा प्रदान करती हो।

तुम ही श्रीकृष्ण-प्रेम प्रदात्री हो। राधे! मैं तुमसे वैकुण्ठ के सुख की याचना कदापि नहीं करती। हे सुकुमारी राधे! मैं तो यही वर माँगती हूँ–तुम ऐसी कृपा करो जिससे तुम्हारी लीला स्थलियों को स्वच्छ रखूँ। गह्वर वन में प्रतिदिन सोहनी सेवा करूँ। रास करते-करते जब तुम्हारा सुकुमार शरीर श्रान्त हो जावे तब मैं अपने हाथों से व्यजन करूँ। तुम्हारे कोमल चरणों का संवाहन कर थकान मिटा दूँ। जब कभी प्रियतम के साथ रस-क्रीड़ा में तुम प्रतिकूलता धारण करो तब नवीन-नवीन हास्य रस पूर्ण वार्ताओं द्वारा तुम्हारा मनोरंजन करूँ। हे प्यारी राधे! जिस-जिस मार्ग पर तुम्हारे चरण-तल पड़ें उसे बुहारी द्वारा स्वच्छ, करती रहूँ। तुम्हारी दासियों द्वारा जो भी सेवा-कार्य मुझे प्राप्त हो उसे आलस्य-रहित होकर प्रेमोन्मत्तता पूर्वक पूर्ण करूँ। हे राधे! तुम्हारे प्रत्येक रोम से ब्रज-रस की वर्षा होती रहती है, ब्रजगोपियाँ तथा श्रीकृष्ण उसका पान करते रहते हैं। हे मेरी प्यारी राधे! मुझे भी किसी प्रकार अपने ब्रजरस का पान करा दो। मैं अधिकारी तो नहीं हूँ परन्तु तुम कृपा द्वारा ऐसा करने में समर्थ हो।

७५

जिया नहिं जाय अब तुम बिनु राधे,
कहाँ जाउँ कासौं कहूँ, तू ही बता दे।
तू तो सत चित आनँदघन राधे,
तोहिं जाने माने पाये कैसे बता दे।
माया ने भुलाया मेरा दासत्व राधे,
यामें मेरा दोष कहा तू ही बता दे।
मैं तो हूँ अबोध नवजात शिशु राधे,
तू तो करुणामयी प्रेम अगाधे।
रसिकन समुझायो तू ही मम राधे,
माने नहिं मन याय तू ही मनवा दे।
तू तो निज नाम में भी रह नित राधे,
यह मम उर विश्वास दिला दे।
भुक्ति मुक्ति वैकुण्ठ माँगूँ नहिं राधे,
निज दासी दासी की ही दासी बना दे।
तेरे सुख को ही सुख मानूँ नित राधे,
ऐसी ही मेरी चित्तवृत्ति बना दे।
मेरी सब इन्द्रिय मन बुधि राधे,
तेरी नित सेवा माँगें ऐसी बना दे।

मेरी ओर लखो जनि दयामयी राधे,
तू तो है 'कृपालु' बिनु हेतु कृपा दे।

भावार्थ—भक्त श्रीराधा के असह्य विरह को न सह सकने से व्यथित होकर कहता है—हे श्रीराधे! अब तो तुम्हारे बिना एक क्षण के लिये भी जीवन धारण करना मेरे लिये अत्यन्त कठिन हो गया है। मैं कहाँ जाऊँ? किससे अपनी पीड़ा कहूँ? यह भी तुम ही बता दो। राधे! तुम्हारा स्वरूप सत चित आनंदघनमय है। अतः मैं तुम्हें जानने में असमर्थ हूँ। बिना जाने माना कैसे जाय एवं बिना माने तुम्हें कोई प्राप्त भी नहीं कर सकता। राधे! मैं तुम्हारा सनातन दास हूँ परन्तु माया-वश मैं अपने वास्तविक स्वरूप को भूल गया। मैंने स्वयं को शरीर मान लिया अतः संसार की दासता करने लगा। यह दोष मेरा नहीं तुम्हारी माया का है। हे राधे! मैं तुम्हारा अबोध नवजात शिशु हूँ, असमर्थ हूँ। हे करुणामयी! तुम तो प्रेम की अगाध समुद्र ही हो अतः अपने पुत्र की स्वयं ही रक्षा करो। तुम्हारे रसिक भक्तों द्वारा मुझे यह ज्ञात हुआ कि एकमात्र तुम ही मेरी हो। मेरा हठी मन इस सत्य पर विश्वास नहीं करता तुम

ही कृपा द्वारा मन में विश्वास जमा दो। हे राधे! तुम्हारे नाम के मध्य भी तुम्हारा नित्य निवास है। मेरे हृदय में ऐसी दृढ़ प्रतीति तुम ही अपनी शक्ति से करवा दो। राधे! मैं तुमसे ब्रह्मलोक पर्यन्त के सुख, वैकुण्ठ एवं मुक्ति का भी सुख नहीं चाहती। तुम यदि अपनी किसी दासी की भी दासी मुझे बना दोगी तो मैं संतुष्ट हो जाऊँगी, राधे! मैं सदा तुम्हारे सुख में अपना सुख प्रतीत करूँ ऐसी मेरी चित्तवृत्ति कब बनेगी? राधे! मेरी समस्त इन्द्रियाँ, मन एवं बुद्धि निरन्तर तुम्हारी सेवा याचना करती रहें। हे दयामयी! मेरी तरफ न देखो। तुम अकारण कृपा करती हो अतः मुझ पर भी कृपा करो।

७६

प्रेम अगाधे राधे, राधे राधे राधे।
अब तो हमरिहुँ सुधि लो राधे,
माना मैं पतित अति राधे, राधे राधे राधे।
अधमउधारिनि तुम इक राधे,
और ठौर नहिं राधे, राधे राधे राधे।

वनचरि चरित निंद्य अति राधे,
तिनहुँन सखि किय राधे, राधे राधे राधे।
दीनन अपनावति तुम राधे,
दीन हीन हौं राधे, राधे राधे राधे।
मनुज दनुज अरु देवन राधे,
प्रीति स्वार्थ युत राधे, राधे राधे राधे।
सब समर्थ के साथी राधे,
तुमहिं अगति गति राधे, राधे राधे राधे।
किय उपकार अमित तुम राधे,
माना नहिं मैंने राधे, राधे राधे राधे।
काहुहिं बल काहुहिं जग राधे,
मम निर्बल बल राधे, राधे राधे राधे।
सब चह लेना लेना राधे,
तुम चह देना राधे, राधे राधे राधे।
सब कर कृपा सकारण राधे,
तुम बिनु कारण राधे, राधे राधे राधे।
मुक्ति न चह चह बंधन राधे,
तव 'कृपालु' पद राधे, राधे राधे राधे।

भावार्थ—हे प्रेम की अगाध अम्बुधि श्री राधे! अब

तो हमारी भी सुधि लो। मैं मानता हूँ कि मैं अत्यन्त पतित हूँ परन्तु तुम भी तो अधमों का उद्धार करने वाली हो। तुम्हारे अतिरिक्त अन्य कोई भी मेरा उद्धार नहीं कर सकता। मेरे लिये अन्यत्र कहीं भी स्थान नहीं है। संसार की दृष्टि से ब्रजगोपियों का चरित्र निंदनीय ही था (श्री कृष्ण के साथ उनका सम्बन्ध अमर्यादित था। श्रीकृष्ण उनके उपपति थे।) तुमने उन्हें अपनी प्रिय सखियों के रूप में स्वीकार किया। राधे! तुम तो दीन-जनों को ही अपनाती हो। मैं भी तो अत्यन्त ही दीन-हीन हूँ। मनुष्य, देवगण और असुर सभी अपने स्वार्थ के कारण ही किसी से प्रेम करते हैं।

संसार में सभी समर्थ का ही साथ देते हैं। एक तुम ही ऐसी हो जो अगति की गति रूपा हो। अर्थात् जिसे कहीं कोई आश्रय प्राप्त नहीं होता उसे आश्रय प्रदान करती हो। हे राधे! यद्यपि तुमने मेरे साथ असंख्य उपकार किये हैं किंतु मैं इतना कृतघ्न हूँ कि मैंने कभी तुम्हारा कोई आभार नहीं माना। राधे! किसी को संसार का बल है परन्तु मुझ निर्बल की बल तो तुम ही हो। संसार में सब केवल लेना ही लेना चाहते हैं परन्तु एक तुम ही ऐसी हो जो देना ही

देना जानती हो। सभी की कृपा किसी कारण से ही होती है परन्तु एक तुम ही हो जो बिना कारण के ही कृपा करती हो। हे राधे! मुझे मुक्ति नहीं चाहिये। मैं तो तुम्हारे चरण-कमलों का बन्धन ही चाहता हूँ।

७७

राधे राधे राधे राधे राधे राधे
राधे राधे राधे राधे राधे राधे
भुक्ति मुक्ति ना दे राधे प्रेम सुधा दे।
निज दासी दासी दासी दासी बना दे।
राधे निज महल की टहल दिला दे।
ब्रज रस की इक बूँद पिला दे।
काउ गोपी ते गोपी प्रेम दिला दे।
तेरा नाम लै के रोऊँ ऐसी बना दे।
तेरा गुन गाऊँ नित ऐसी बना दे।
तेरी छवि ध्याऊँ नित ऐसी बना दे।
निज रुचि महँ रुचि मेरी बना दे।
जित देखूँ तू ही दीखे ऐसी बना दे।

तेरे बिनु जीऊँ नहिं ऐसी बना दे।
बरसाने वारी भोरी भारी प्यारी राधे।
श्री वृषभानुदुलारी प्यारी राधे।
भली हूँ बुरी हूँ जो हूँ तेरी ही हूँ राधे।
नथ बेसर वारी प्यारी राधे।
ऊँचे महल अटा वारी राधे।
तू ही इक मेरी थी है रहेगी भी राधे।
मैं ना भूलूँ तोहिं तू ना भूल मोहिं राधे।
माना मैं बुरी हूँ अति हूँ तो तेरी राधे।
मेरी तो है तू ही गति मति रति राधे।
पतितन और ठौर हो तो बता दे।
होत कुपूत पूत जग राधे।
माता भी कुमाता कोउ भइ हो बता दे।
रसिक रँगीली गुन गर्वीली राधे।
ब्रज रस बरसाने वारी प्यारी राधे।
तेरे सब खरे-खरे सेवक राधे।
मुझ खोटी को खरों के संग चला दे।
अच्छों की तो पूजा होय बुरों ते ही राधे।
कोउ हो 'कृपालु' सों जो बुरा तो बता दे।

भावार्थ—हे श्री राधे! मैं आपसे ब्रह्मलोक पर्यन्त के नाशवान सुख एवं पाँचों प्रकार की मुक्तियों की कामना नहीं करता। मैं तो केवल निष्काम प्रेम ही चाहता हूँ। अपनी दासी की दासी की दासी की दासी ही मुझे बना दीजिए। श्रीराधे! मुझे अपने निज महल की सेवा प्रदान करना। ब्रज-रस का एक बिन्दु ही मुझे प्रदान करना। तुम किसी गोपी से मुझे गोपी-प्रेम दिला देना। मैं तुम्हारा नाम लेकर आँसू बहाया करूँ। मुझे ऐसा कब बनाओगी? निरन्तर तुम्हारा ही गुण-गान करती रहूँ। तुम्हारी छवि को ही हृदय में धारण कर लूँ। हे राधे! तुम अपनी रुचि में ही मेरी रुचि बना दो। मैं जिधर भी दृष्टि डालूँ तुम्हें ही देखूँ। तुम्हारे बिना मेरा जीवन जीवन न रहे। हे बरसाना धाम में निवास करने वाली वृषभानुनन्दिनी! मैं अच्छा हूँ अथवा बुरा हूँ, जैसा भी हूँ तुम्हारा ही तो हूँ। नासिका में नथ एवं बुलाक धारण करने वाली ऊँचे महलों में रहने वाली राधे! एकमात्र तुम ही मेरी थी, हो एवं सदा रहोगी। मैं तुम्हें कभी न भूलूँ और तुम भी मुझे कभी न भूलो। यद्यपि मैं जानता हूँ कि मैं अत्यन्त बुरा हूँ किंतु हूँ तो तुम्हारा ही। राधे! मेरी तो

गति तुम तक ही सीमित है। तुम ही मेरी बुद्धि को प्रेरित करने वाली हो तथा तुम ही मुझे श्रीकृष्ण विषयक रति प्रदान करोगी। तुम्हें छोड़कर यदि पतित-जनों के लिये कहीं अन्यत्र स्थान हो तो तुम्हीं बता दो। जगत में कुपुत्र तो देखे गये हैं किंतु माता तो कुमाता नहीं होती। हे रसिक-शेखर के प्रेम रंग में रंगी हुई, दिव्य-गुण-गणों के कारण गर्वीली बनी हुई राधे! तुम ब्रजरस की वर्षा करने वाली हो। तुम्हारी सेवा करने वाले सभी भक्त-जन तो अत्यन्त गुणवान हैं। मुझ गुणहीन को भी उनके मध्य स्थान दे दो। राधे! यदि बुरे न हों तो अच्छों का सम्मान कौन करेगा? मुझसे बुरा तुम्हें कहीं भी प्राप्त नहीं होगा।

७८

राधे राधे गोविन्द राधे, राधे राधे राधे।
तुम भी नहिं भूलो मोहिं पल छिन आधे,
मैं भी न भूलूँ तोहिं राधे, राधे राधे राधे।
तुम बिनु जिउँ नहिं इक छिन राधे,
ऐसी बना दे मोहिं राधे, राधे राधे राधे।

भली हूँ बुरी हूँ जो हूँ तेरी ही हूँ राधे,
प्यार करो या मारो राधे, राधे राधे राधे।
पतित जनन हित तोहिं तजि राधे,
और ठौर हो तो बता दे, राधे राधे राधे।
तू ही तो है मेरी गति मति रति राधे,
तेरे सिवा कोइ नहिं राधे, राधे राधे राधे।
तेरे तो हैं अगनित भक्त जन राधे,
मेरी तो है इक तू ही राधे, राधे राधे राधे।
खरे खरे को निभाते सब जग राधे,
मुझ खोटे को निभा दे राधे, राधे राधे राधे।
भुक्ति मुक्ति बैकुण्ठ नहिं माँगूँ राधे,
ब्रज रस बूँद पिला दे, राधे राधे राधे।
मेरे उर पुर में ही रहे नित राधे,
उसका किराया चुका दे, राधे राधे राधे।
मुझ से पतित यदि होते नहिं राधे,
तेरे द्वार आता कौन राधे, राधे राधे राधे।
गुरु ने जनाया मैंने जाना तोहिं राधे,
अब नहिं छोड़ूँ पाछा राधे, राधे राधे राधे।
तुमको पतित-पावनि लखि राधे,
किये मनमाने पाप राधे, राधे राधे राधे।

तेरी माया ने भुलाया विधि बुधि राधे,
मैं तो अति दीन हीन राधे, राधे राधे राधे।
करि को उठाया, गिरि को उठाया राधे,
इनते भी क्या मैं भारी राधे, राधे राधे राधे।
मेरा तन-मन-धन सब तेरा राधे,
जब सब तेरा तोहिं का दे, राधे राधे राधे।
तेरे ऋण उऋण न होइ सक राधे,
अगनित जनमहुँ राधे, राधे राधे राधे।
तुम बिनु हेतु सनेहिनि राधे,
साधन हेतु हटा दे, राधे राधे राधे।
तुझ सी न दाता कोउ दयामयी राधे,
मुझ सा भिखारी नहिं राधे, राधे राधे राधे।
तेरे नाम में हैं तेरी शक्ति सब राधे,
अस विश्वास दिला दे, राधे राधे राधे।
तेरी कृपा बिनु तोहिं जाना कौन राधे,
एकहुँ नाम बता दे, राधे राधे राधे।
मैं तो भूला तेरी मायावश तोहिं राधे,
तूने क्यों भुलाया मोहिँ राधे, राधे राधे राधे।
पूत तो कुपूत होय जग में भी राधे,
माता कुमाता न राधे, राधे राधे राधे।

तेरा सुत द्वार द्वार माँगे भीख राधे,
तेरी भी लाज जाय राधे, राधे राधे राधे।
तू तो व्यापक सब जग महँ राधे,
कहुँ टुक झलक दिखा दे, राधे राधे राधे।
तेरे मेरे बीच में बाधा माया राधे,
माया को आँखि दिखा दे, राधे राधे राधे।
मेरा पर्दा माया तेरा योगमाया राधे,
दोनों ही पर्दा हटा दे, राधे राधे राधे।
मेरा सब कछु तेरा दिया हुआ राधे,
तु ही कहु हम तोहिं का दे, राधे राधे राधे।
यदि न बनाये मोहिं निज दासी राधे,
दासी की दासी बना दे, राधे राधे राधे।
महल टहल यदि न दे मोहिं राधे,
द्वार पहरुआ बना दे, राधे राधे राधे।
जनमहुँ पुनि पुनि तेरे ब्रज राधे,
करूँ नित राधे राधे राधे, राधे राधे राधे।
तू तो ब्रजरस मूरति मेरी राधे,
मोहिं इक बूँद पिला दे, राधे राधे राधे।
जाके डर डरे डर सोउ डरे राधे,
ऐसी रक्षक मेरी राधे, राधे राधे राधे।

माता के उदर मारे सुत पग राधे,
रोष न माँ उर राधे, राधे राधे राधे।
जल बिनु मीन न रहि सक राधे,
ऐसे तुम बिनु हम राधे, राधे राधे राधे।
जग शिशु माता के भरोसे रहे राधे,
हम हैं भरोसे तेरे राधे, राधे राधे राधे।
जाके बल वाको पूछे सब जग राधे,
निर्बल की तू ही प्यारी राधे, राधे राधे राधे।
तनु बिनु प्राण न रहि सक राधे,
ऐसे तुम बिनु हम राधे, राधे राधे राधे।
मेरा मन तोसों छत्तिस जनु राधे,
तिरसठ वाय बना दे, राधे राधे राधे।
मैं तो तेरा इक दुधमुख शिशु राधे,
अच्छा बुरा जानूँ नहिं राधे, राधे राधे राधे।
तू ही मेरी थी है तू ही रहेगी भी राधे,
तेरा ही कहा हुआ है राधे, राधे राधे राधे।
नव शिशु भी न जाने माँ को जग राधे,
कूड़ेदान फेंके नहिं राधे, राधे राधे राधे।
तू ही मेरी मैं भी तेरी सदा ते ही राधे,
पुनि यह दूरी क्यों बता दे, राधे राधे राधे।

तुझमें मैं मुझमें तू नित रहे राधे,
पुनि दर्शन काहे ना दे, राधे राधे राधे।
आया बड़ी आशा लै के तेरे ब्रज राधे,
चिन्मय ब्रज दिखला दे, राधे राधे राधे।
मैं तो हठीला अति तव सुत राधे,
छोड़ूं नहिं पाछा तेरा राधे, राधे राधे राधे।
राधे राधे गाऊँ नित ध्याऊँ नित राधे,
पुनि चाहे नरक दिला दे, राधे राधे राधे।
माना तू कहेगी प्रेम मैं ना दऊँ राधे,
गोपी सों ही प्रेम दिला दे, राधे राधे राधे।
तेरी भौंह लखि डरे मायापति राधे,
माया को भी भौंह दिखा दे, राधे राधे राधे।
गुरु ने जनाया जाना तू ही मेरी राधे,
माना नहिं तू ही मनवा दे, राधे राधे राधे।
अँगुठा पियत बीते युग युग राधे,
ब्रज रस अब तो पिला दे, राधे राधे राधे।
मिलन का सुख नहिं माँगूँ तोसों राधे,
उर विरहाग लगा दे, राधे राधे राधे।
यह वर माँगूँ वरदायिनि राधे,
माँगूँ नहिं कभु कछु राधे, राधे राधे राधे।

ध्रुव जनु मैं भी तोहिं जानूँ नहिं राधे,
कर धरि शीश जना दे, राधे राधे राधे।
मोह निशा में सोया तेरा सुत राधे,
भूखा प्यासा अब तो जगा दे, राधे राधे राधे।
तोहिं तजि बैकुण्ठहुँ ना दे राधे,
तोहिँ सँग नरक दिला दे, राधे राधे राधे।
तू तो ब्रज रस अम्बुधि प्यारी राधे,
मोहुँ इक बूँद पिला दे, राधे राधे राधे।
ध्यावुँ नित युगल चरण तव राधे,
गाउँ नित राधे राधे राधे, राधे राधे राधे।
तेरा सुख बनि जाय मेरा सुख राधे,
ऐसी मेरी सुमति बना दे, राधे राधे राधे।
श्रुति कह तू ही मेरी आत्मा राधे,
तुम बिनु तन शव राधे, राधे राधे राधे।
अगनित अधमन अपनाया राधे,
अपना 'कृपालु' को भी राधे, राधे राधे राधे।

भावार्थ—हे राधे! तुम मुझे आधे पल को भी न भुलाना। ऐसी कृपा करो कि मैं भी कभी आधे क्षण को भी तुम्हें न भुलाऊँ। हे राधे! तुमसे रहित होकर मैं क्षण भर भी जीवन धारण न करूँ मुझे ऐसी बना दो। मैं भली

हूँ या बुरी जैसी भी हूँ, तुम्हारी ही हूँ अब तुम मुझे प्यार करो, अथवा मारो। हे राधे! पतितों के लिये तुम्हारे अतिरिक्त कोई अन्य स्थान नहीं है। तुम ही मेरी गति, बुद्धि प्रदायिनी एवं श्रीकृष्ण प्रेम का वितरण करने वाली हो। तुम्हारे अतिरिक्त मेरा और कोई भी नहीं है। हे राधे! तुम्हारे तो असंख्य भक्त हैं परन्तु मुझे शरण देने वाली तो एकमात्र तुम ही हो। गुणवानों को तो संसार में सभी आश्रय देते हैं परन्तु मेरे जैसे गुणहीन को तो एकमात्र तुम ही निभानेवाली हो। मैं तुमसे ब्रह्मलोक पर्यन्त के सुख भोग नहीं माँगता। वैकुण्ठ का सुख भी मुझे नहीं चाहिये। यदि दे सको तो ब्रज-रस की एक बूँद का ही दान करो। तुम तो सदा मेरे हृदय में ही निवास करती हो मेरे हृदय रूपी घर का किराया चुका दो। श्रीराधे यदि मेरे जैसे पतित संसार में न होते तो तुम्हारे द्वार पर भला कौन आता? गुरु द्वारा मुझे तुम्हारा ज्ञान प्राप्त हुआ, अब मैं तुम्हारा पीछा नहीं छोड़ूंगा। तुम्हें पतित पावनी देखकर ही मैंने मनमाने पाप किये हैं।

नाम पतित पावन सुनि, निर्भय ह्वै किये पाप।
यामें दोष बताउ मम, दोषी तो हैं आप॥

[भक्ति शतक]

तुम्हारी माया ने ब्रह्मा की बुद्धि को भी मोहित किया है मैं तो अत्यन्त ही दीन-हीन हूँ। तुमने हरि रूप धारण कर ग्राह से ग्रसित गजराज का उद्धार किया। श्रीकृष्ण रूप से गोवर्धन गिरि को कनिष्ठिका पर धारण किया क्या मेरा भार इनसे भी अधिक है जिसे तुम नहीं उठा सकोगी। मेरा तन, मन एवं धन सब तुम्हारा ही है। जब सब कुछ तुम्हारा ही है तो फिर मैं तुम्हें क्या दूँ? मैं कभी तुम्हारे ऋण से उऋण नहीं हो सकूँगा। असंख्य जन्म धारण कर भी तुम्हारे उपकारों का बदला मैं नहीं चुका सकता। राधे! तुम तो बिना कारण के ही प्रेम प्रदान करती हो फिर साधन का हेतु क्यों बनाया उसे समाप्त करो। हे दयामयी! तुम्हारी जैसी दानी कोई नहीं है और मेरा जैसा भिखारी भी तुम्हें अन्य कोई नहीं मिलेगा। तुम्हारे नाम में तुम्हारी सम्पूर्ण शक्तियाँ हैं मेरा यह विश्वास सदा दृढ़ रहे। हे श्रीराधे! तुम्हारी कृपा के बिना भला तुम्हें कौन जान सकता है। यदि किसी ने जाना है तो ऐसा एक भी नाम तुम मुझे बताओ। राधे! मैं तो मायाधीन था अतः तुम्हें भूल गया तो कोई आश्चर्य नहीं है परन्तु तुम तो माया की स्वामिनी

हो तुम मुझे क्यों भूल गई? राधे! पुत्र तो संसार में कुपुत्र होते हैं परन्तु माता तो कुमाता नहीं होती। तुम्हारा पुत्र होकर मैं द्वार द्वार भीख माँग रहा हूँ। इससे तो तुम्हारा भी अपयश होगा। तुम तो सर्वत्र व्यापक हो। किसी भी स्थान पर अपनी किंचित् झलक मुझे दिखा दो। तुम्हारे और मेरे मध्य में तुम्हारी माया ही बाधा है। इस माया को नेत्रों के संकेत से मेरे निकट से भगा दो। मेरे अन्तः करण पर माया का पर्दा पड़ा है। तुम्हारे पास योगमाया है।

नाहं प्रकाशः सर्वस्य योगमाया समावृतः।

[गीता]

इन दोनों ही आवरणों को हटाकर मुझे अपना साक्षात्कार कराओ। राधे! मेरे पास जो कुछ भी है सब तुम्हारा ही दिया हुआ है। भला मैं तुम्हें क्या दे सकता हूँ। यदि तुम मुझे अपना दासत्व प्रदान नहीं कर सकती हो तो अपनी दासी की दासी बना दो। यदि तुम मुझे अपने महल की सेवा न दे सको तो द्वार का प्रहरी ही बना लो। तुम्हारे ब्रज में बार बार जन्म लेकर मैं निरन्तर राधे राधे करूँ। तुम तो ब्रजरस की साकार प्रतिमा ही हो मुझे भी एक बूँद पिला

दो। जिस ब्रह्म के डर से डर भी डरता है वह श्रीराधा के भय से भयभीत रहता है, श्री राधा मेरी रक्षा करने वाली हैं। गर्भस्थ शिशु माँ के उदर में पैर मारता है, ऐसी माँ इस को अपराध मानकर क्रोध नहीं करती। जिस प्रकार जल के बिना मछली जीवित नहीं रह सकती, इसी प्रकार से हम भी तुम्हारे बिना जीवन धारण नहीं कर सकेंगे। बलवान को संसार में सभी पूछते हैं, मुझ जैसी निर्बल की तो एकमात्र तुम ही हो।

सब साधन संपन्न कहँ, पूछत सब संसार।
साधन हीन प्रपन्न कहँ, पूछत नन्दकुमार॥

[भक्ति-शतक]

राधे! बिना प्राण के शरीर नहीं रहता है, इसी प्रकार से हम भी तुम्हारे बिना जीवित नहीं रह सकेंगे। हे राधे! मेरा मन तुमसे विमुख होकर छत्तीस के अंक की भाँति हो गया है, इसे अपनी अनुकूलता प्रदान कर तिरसठ के अंक की भाँति बना लो। मैं तुम्हारा नवजात अबोध शिशु हूँ। अच्छा बुरा कुछ भी नहीं जानता। तुम ही मेरी थी, हो एवं सदा रहोगी। ऐसा वेद में तुमने ही कहा है। संसार में तुरन्त

का पैदा हुआ बच्चा माँ को नहीं जानता है। किंतु माँ क्या बच्चे को कूड़ेदान में फेंक देती है। राधे! एकमात्र तुम ही मेरी हो। मैं भी सदा से तुम्हारी ही हूँ। फिर मेरे और तुम्हारे बीच में यह दूरी क्यों है? मैं सदा तुममें रहता हूँ एवं तुम सदा मुझमें रहती हो, फिर मुझे तुम्हारा दर्शन क्यों नहीं होता। हे राधे! मैं तुम्हारे ब्रज में बड़ी आशा से आया हूँ, तुम मुझे अपने दिव्य ब्रजधाम के दर्शन कराओ। मैं तुम्हारा अत्यन्त हठीला पुत्र हूँ तुम्हारा पीछा नहीं छोड़ूगा। सदा राधे राधे नाम को गाऊँ सदा तुम्हारा ध्यान करूँ फिर चाहे मुझे नरक में ही क्यों न जाना पड़े। यदि तुम यह कहती हो कि मुझे अपना प्रेम नहीं दोगी तो अपनी किसी गोपी से दिलवा दो। राधे! तुम्हारी भृकुटि को देखकर तो मायापति भी भयभीत होता है, फिर इस माया का क्या साहस है जो मेरा कुछ बिगाड़ सके। एक बार इसे टेढ़ी भृकुटि करके डरा दो।

गुरु द्वारा मुझे यह ज्ञान दिया गया कि तुम ही मेरी हो परन्तु मैंने कभी इस सत्य को दृढ़तापूर्वक माना नहीं अब तुम ही मनवा दो। मुझे अँगूठा पीते पीते ही (सांसारिक

मिथ्या सुख भोग करते हुए) युग पर युग व्यतीत हो गये। अब तो ब्रज रस पिला दो। मैं तुमसे तुम्हारा मिलन नहीं चाहता मेरे हृदय में तो विरह की अग्नि ही प्रज्ज्वलित कर दो। हे वरदायिनी! मैं तुमसे यही वर माँगता हूँ कि मुझे तुमसे कभी कुछ माँगना न पड़े। ध्रुव की भाँति मैं भी तुम्हें नहीं जानता (पाँच वर्ष का बालक)ध्रुव भगवान की स्तुति करना नहीं जानता था। श्रीहरि ने अपना शंख छुआकर उसकी वाणी को प्रस्फुटित क्रर दिया। तुम भी अपना कर कमल मेरे सिर पर रखकर अपना ज्ञान प्रदान करो। हे राधे! तुम्हारा पुत्र अज्ञान की महा अंधकारमयी रात्रि में सोया हुआ है, मैं तुम्हारे प्रेम का ही भूखा हूँ। मुझे अपना ज्ञान प्रदान करो। अपना वियोग देकर तुम यदि मुझे वैकुंठ भी प्रदान करो तो मुझे नहीं चाहिये। तुम्हारे साथ यदि नरक में भी मुझे रहना पड़े तो स्वीकार है। हे राधे! तुम तो ब्रजरस की अम्बुधि ही हो मुझे भी एक बूँद ब्रज रस पिला दो। मैं निरन्तर तुम्हारे युगल चरणों का ही ध्यान करूँ एवं राधे राधे नाम का गायन करूँ। हे राधे! मुझे ऐसी श्रेष्ठ बुद्धि प्रदान करो जिससे तुम्हारा सुख ही मेरा

सुख बन जाय। वेद कहता है-तुम ही मेरी आत्मा हो आत्मा के बिना तो शरीर शव के समान ही होता है। अतः तुमसे रहित होकर मैं मृतक के समान ही हूँ। तुमने असंख्य अधम जीवों को अपनी शरणागति प्रदान की है, मुझे भी अब अपना बना लो।

७९

तू ही मेरी तू ही मेरी तू ही मेरी राधे,
मैं भी तेरी मैं भी तेरी मैं भी तेरी राधे।
तू ही मेरी थी भी है भी रहेगी भी राधे,
मैं भी तेरी थी भी हूँ भी रहूँगी भी राधे।
सदा सों विमुख रहि मैं तो तोसों राधे,
याते भयो मति को विपर्यय राधे।
मति के विपर्यय ते ही प्यारी राधे,
मैं तो तोरी नित्य दासी भूली यह राधे।
यह करतूति तेरी माया की है राधे,
मरम बतायो यह रसिकन राधे।

याको फल कल नहिं पायो पल राधे,
पायो दुख अगनित नित प्रति राधे।
काम क्रोध लोभ आदि मायाभट राधे,
बहुत सतायो सहि नहिं जाय राधे।
गुरु ने बताया याय औषधि राधे,
बस एक तेरी सन्मुखता राधे।
तेरी सन्मुखता हित मेरी राधे,
गुरुवर की शरणागति राधे।
गुरु ही बतायेगा साधन राधे,
गुरु ही मिलायेगा तुम सन राधे।
गुरु को जो माने आत्मा इष्ट राधे,
वापै तू 'कृपालु' बनि कृपा करे राधे।

भावार्थ—हे राधे! एकमात्र तुम ही मेरी हो और मैं भी एकमात्र तुम्हारी ही हूँ। तुम ही मेरी थी हो एवं रहोगी। मैं भी तुम्हारी ही थी, हूँ एवं सदा रहूँगी। मैं माया के कारण तुमसे विमुख हो गई, अतः मेरी बुद्धि भ्रम से युक्त हो गई। भ्रम के कारण मैं अपने दासत्व को भूल गई। यह सब तुम्हारी माया के कारण ही हुआ। रसिकों ने ही इस रहस्य को खोला। अपने स्वरूप को भूल जाने के कारण

मुझे एक क्षण को भी कहीं शांति नहीं मिली। सदा ही मुझे अनेक प्रकार के दुख मिलते रहे। माया के बड़े-बड़े सरदारों काम, क्रोध, लोभ आदि ने मुझे बहुत कष्ट दिये, अब मेरी सहन शक्ति जवाब दे चुकी है। गुरु ने इसकी औषधि तुम्हारी सन्मुखता बताई। तुम्हारी सन्मुखता प्राप्त करने के लिये गुरु की शरण ग्रहण करनी पड़ेगी। साधन गुरु ही बतायेगा। गुरु ही तुम्हारा मिलान करायेगा। गुरु को जो अपनी आत्मा और अपना इष्टदेव मानता है, उसी पर तुम अपनी कृपा करती हो।

८०

अस मनमोहिनि राधे, राधे राधे राधे।
जो सब जग मन मोहन राधे,
मदन कहत तेहिँ राधे, राधे राधे राधे।
तिन मदनहुँ मोहे जिन राधे,
तिन कह मोहन राधे, राधे राधे राधे।
तिनहुँन मोहिं लिये तुम राधे,
धनि धनि मोहिनि राधे, राधे राधे राधे।

रहि न सकत पिय तुम बिनु राधे,
इक पल कहँ कहुँ राधे, राधे राधे राधे।
खोजत कुंज कुंज तोहिँ राधे,
कहि हा राधे राधे, राधे राधे राधे।
पद गहि सखिन कहत पिय राधे,
मोहिं मिला दे राधे, राधे राधे राधे।
परखत नित रह तित जित राधे,
चलन चहति तू राधे, राधे राधे राधे।
गावत मुरलिहिं तव गुन राधे,
मन ते सुमिरत राधे, राधे राधे राधे।
माँगत नित 'कृपालु' पिय राधे,
कृपा कोर तव राधे, राधे राधे राधे॥

भावार्थ—मेरी राधा ऐसी मनमोहिनी हैं। जो सम्पूर्ण विश्व के मन को मोहित कर लेता है, उसे कामदेव कहते हैं उस कामदेव को भी जिसने मोहित किया वह श्रीकृष्ण हैं। जिस राधा ने उन श्रीकृष्ण को भी मोहित कर लिया वे धन्य हैं।

हे राधे! प्रियतम कृष्ण तुम्हारे बिना एक क्षण के लिये भी किसी स्थान पर नहीं ठहरते। नेत्रों से ओझल होते ही

वे प्रत्येक कुंज में हा राधे! कहकर तुम्हारी खोज करते हैं। सखियों के चरण पकड़कर वे उनसे अनुनय करते हैं कि मुझे राधा का दर्शन करा दो। जिधर भी तुम चलना चाहती हो उसी दिशा को देखते रहते हैं। मुरली में तुम्हारा गुणगान करते हैं एवं मन से तुम्हारा ही स्मरण करते हैं। हे राधे! प्रियतम निरन्तर तुम्हारी कृपा-कोर की प्रतीक्षा करते रहते हैं।

८१

अवढर दानी राधे, ब्रज रस खानी राधे।
ब्रज महरानी राधे, भज मन राधे राधे॥
भज ब्रह्मा नित राधे, भज विष्णुहुँ नित राधे।
भज शंकर नित राधे, भज मन राधे राधे॥
भज सनकादिक राधे, भज जनकादिक राधे।
भज नारदादि राधे, भज मन राधे राधे॥
भज ब्रह्म श्याम राधे, भज ब्रज नारिन राधे।
भज उमा रमा राधे, भज मन राधे राधे॥
मोहति रति छवि राधे, मोहति छवि छवि राधे।
मोहति निज छवि राधे, भज मन 'कृपालु' राधे॥

भावार्थ—श्री राधा दान करने में कभी सोच विचार नहीं करतीं वे ब्रज-रस की खान हैं। श्रीराधा ब्रज की महारानी हैं। हे मेरे मन! तू निरन्तर राधा राधा नाम का ही गायन कर। ब्रह्मा, विष्णु एवं शिव भी निरन्तर राधा नाम का ही स्मरण करते हैं। सनकादि परमहंस, जनक जैसे ब्रह्मज्ञानी एवं नारद जैसे भक्त भी निरन्तर राधा नाम का स्मरण करते हैं। साकार ब्रह्म स्वरूप श्रीकृष्ण, ब्रजगोपियों एवं पार्वती तथा महालक्ष्मी भी श्रीराधा की उपासना करती हैं। श्री राधा की दिव्य रूप-माधुरी रति को तो मोहित करती ही है, साक्षात् छवि भी राधा की छवि पर मोहित हो जाती है। श्रीराधा भी स्वयं अपनी शोभा पर मोहित हो जाती हैं। 'कृपालु' कहते हैं कि हे मेरे मन! तू भी निरन्तर श्रीराधा का ही स्मरण कर।

८२

ऐसी हैं मम श्यामा, श्यामा मेरी श्यामा।
जैसी नहिं कहुँ भई न बामा,
ह्वैहैं नहिं सम श्यामा, श्यामा मेरी श्यामा।

जैसी रूप माधुरी श्यामा,
तैसी नहिं कोउ बामा, श्यामा मेरी श्यामा।
सुंदरि रत्न जगत रति बामा,
सोउ मोहीं लखि श्यामा, श्यामा मेरी श्यामा।
उमा रमा ब्रह्माणी बामा,
मोहीं तोहिं लखि श्यामा, श्यामा मेरी श्यामा।
ब्रज महँ जेतिक सुंदरि बामा,
सब मोही लखि श्यामा, श्यामा मेरी श्यामा।
मोहे मोहनहूँ लखि श्यामा,
जेहि कह पूरन कामा, श्यामा मेरी श्यामा।
ब्रज रस चुये रोम प्रति श्यामा,
पिये श्याम सँग बामा, श्यामा मेरी श्यामा।
गोरी हूँ ते गोरी श्यामा,
तेहि सम नहिं कोउ बामा, श्यामा मेरी श्यामा।
नारदादि मुनि लखि छवि श्यामा,
भये मुर्छित ब्रज धामा, श्यामा मेरी श्यामा।
लखिहौं हौं 'कृपालु' छवि श्यामा,
कबहुँ कृपा ब्रज बामा, श्यामा मेरी श्यामा॥

भावार्थ—मेरी श्री राधा के समान अभी तक कोई

स्त्री न हुई है न होगी। श्रीराधा के समान रूपवती अन्य कोई नारी नहीं। संसार में कामदेव की पत्नी रति ही सुन्दर स्त्रियों में श्रेष्ठ मानी जाती है, वह भी श्रीराधा को देखकर मोहित हो गई। पार्वती, लक्ष्मी एवं सावित्री भी श्रीराधा के रूप को देखकर मोहित हो गई। पूर्णकाम श्रीकृष्ण भी श्रीराधा को देखकर मोहित हो गये। श्रीराधा के दिव्य अंगों से निरन्तर ब्रजरस की वर्षा होती रहती है। श्यामसुन्दर एवं ब्रजोगपियाँ उस रस का पान करते हैं। श्रीराधा का गौरवर्ण गौरी से भी उज्ज्वल है। उनकी समानता करने वाली अन्य कोई स्त्री नहीं। नारद जब ब्रज में आये तो राधा के सौन्दर्य को देखकर मूर्छित हो गये। 'कृपालु' कहते हैं कि मैं भी कभी किसी ब्रजगोपी की कृपा से श्रीराधा की मनोहारिणी छवि का दर्शन करूँगा।

८३

नथवारी पर वारी, वारी वारी वारी।
बरसाने वारी अस प्यारी,
बनवारीहूँ वारी, वारी वारी वारी।

ब्रज रस चुये रोम प्रति प्यारी,
कोटि कोटि रति वारी, वारी वारी वारी।
जब निकले सरकार सवारी,
जय बोलें बनवारी, वारी वारी वारी।
अस प्यारी वृषभानुदुलारी,
चापत पग बनवारी, वारी वारी वारी।
निज सिर धर लै पद रज प्यारी,
ब्रह्म श्याम वनवारी, वारी वारी वारी।
प्यारी जू की छवि अस प्यारी,
जेहि लखि छविहूँ वारी, वारी वारी वारी।
जाकी अस्तुति कर श्रुति चारी,
सोइ नथ बेसर वारी, वारी वारी वारी।
लखि सोरह सिंगार बिहारी,
कह वारी हौं वारी, वारी वारी वारी।
गहवर वन पथ देत बुहारी,
छुपि छुपि नित बनवारी, वारी वारी वारी।
लखि लखि चरण चिह्न पथ प्यारी,
चूमत नित बनवारी, वारी वारी वारी।
विधि हरि हर 'कृपालु' लखि प्यारी,
तन मन प्रानन वारी, वारी वारी वारी॥

भावार्थ—नासिका में सुन्दर नथ धारण करने वाली श्रीराधा पर मैं अपना सर्वस्व न्यौछावर करता हूँ। बरसाने में वास करने वाली श्रीराधा की छवि पर श्रीकृष्ण भी स्वयं को निछावर करते हैं। श्रीराधा के रोम रोम से ब्रज-रस टपकता है। करोड़ों रति उन पर न्यौछावर की जा सकती हैं। जब सिंहासनासीन होकर श्रीराधा महल से बाहर निकलती हैं तब श्रीकृष्ण उनकी जय जयकार करते हैं। वृषभानुनन्दिनी श्रीराधा के सौभाग्य का क्या वर्णन किया जाय जिनके चरणों को अंक में धारण कर श्रीकृष्ण उनका संवाहन करते हैं। श्रीराधा के चरणों की पवित्र रज को ब्रह्म कृष्ण अपने मस्तक पर धारण करते हैं। राधा की अप्रतिम शोभा को देखकर साक्षात् शोभा को भी न्यौछावर किया जा सकता है।

नासिका में बुलाक धारण करने वाली श्रीराधा की स्तुति चारों वेद करते हैं। श्रीराधा के सोलह श्रृंगार को निहारकर श्रीकृष्ण बार-बार बलिहार जाते हैं। प्रतिदिन छिपकर श्रीकृष्ण गह्वर वन की बुहारी देते हैं। मार्ग में श्रीराधा के चरण-चिह्नों को देखकर उनका चुम्बन करते हैं। ब्रह्मा,

विष्णु एवं शिव भी श्रीराधा की रूप माधुरी को देखकर अपने तन मन प्राणों को न्यौछावर करते हैं।

८४

ब्रज रस अंबुधिं राधे, राधे मेरी राधे।
तेरी कृपा पाय रस राधे,
भये रसिक पिय राधे, राधे मेरी राधे।
मादन महाभाव तू राधे,
जेहि वश रह पिय राधे, राधे मेरी राधे।
तेरी कृपा रसिक सब राधे,
पाये ब्रजरस राधे, राधे मेरी राधे।
तेरी बिनु अनुकंपा राधे,
कोउ न पाव रस राधे, राधे मेरी राधे।
कमला ने अति तप किय राधे,
लह्यो न ब्रज रस राधे, राधे मेरी राधे।
ब्रजरस महिमा ऐसी राधे,
जेहि रस वश पिय राधे, राधे मेरी राधे।
पिय भूले भगवत्ता राधे,
तव ब्रज रस हित राधे, राधे मेरी राधे।

नाचे नेकु छाछ पर राधे,
पिय गोपिन ढिग राधे, राधे मेरी राधे।
परमहंस बनि तरुवर राधे,
खरे रहत ब्रज राधे, राधे मेरी राधे।
ब्रज रस सम बैकुंठहुँ राधे,
रस नहिं भावत राधे, राधे मेरी राधे।
ब्रज रस हौं 'कृपालु' चह राधे,
देहु कृपा करि राधे, राधे मेरी राधे॥

भावार्थ—हे ब्रजरस की सागर रूपा श्रीराधे! तुम्हारी कृपा प्राप्त कर ही श्यामसुन्दर रसिक शिरोमणि बने। राधे! तुम मादन महाभाव रूपा हो इसी कारण श्री कृष्ण सदा तुम्हारे वशीभूत रहते हैं। तुम्हारी कृपा से समस्त रसिकों को ब्रजरस की प्राप्ति हुई। बिना तुम्हारी कृपा के किसी को रस की एक बूँद भी प्राप्त नहीं हो सकती। महालक्ष्मी ने ब्रज में प्रवेश प्राप्त करने के लिये बहुत तप किया किंतु वे प्राप्त नहीं कर सकीं। ब्रजरस की ऐसी महिमा है कि श्रीकृष्ण भी इसी रस के वशीभूत सदैव रहते हैं। राधे! तुम्हारे ब्रजरस को प्राप्त करने हेतु श्रीकृष्ण अपनी भगवत्ता को भूलकर ब्रज वासियों की चाकरी करते रहे। किंचित्

छाछ का लोभ दिखाकर ब्रज-गोपियाँ श्रीकृष्ण को नाना प्रकार के नाच नचाती हैं। इसी रस को प्राप्त करने के लिये परमहंस-जन वृक्ष बनकर ब्रज में खड़े रहते हैं। ब्रज के समान रस तो बैकुंठ में भी नहीं है। हे राधे! मैं भी तुमसे ब्रजरस की याचना कर रहा हूँ, कृपा कर प्रदान करो।

८५

प्रेम सुधा निधि राधे, राधे मेरी राधे।
ऐसी रसिक रँगीली राधे,
गुन गर्वीली राधे, राधे मेरी राधे।
जेहि लखि रसिक रँगीलो राधे,
भूले सुधि बुधि राधे, राधे मेरी राधे।
गिरत मुरलि हरि कर ते राधे,
लखतहिँ छविनिधि राधे, राधे मेरी राधे।
गावत मुरलि नाम गुन राधे,
चैन न छिन बिनु राधे, राधे मेरी राधे।

मान करति जब कबहूँ राधे,
ब्रह्म मनावत राधे, राधे मेरी राधे।
रोवत कहि पुनि पुनि हा राधे,
चरण पकरि पिय राधे, राधे मेरी राधे।
पाव रास-रस पिय तब राधे,
कृपा करति जब राधे, राधे मेरी राधे।
मुकुट उतारि धरत पद राधे,
माँगत सेवा राधे, राधे मेरी राधे।
कर मनुहार सखिन ढिंग राधे,
दृग जल भरि हरि राधे, राधे मेरी राधे।
रहिहौं ऋणी सखी तव राधे,
दिखला दे छवि राधे, राधे मेरी राधे।
यह 'कृपालु' रस जानत राधे,
ब्रज रस रसिकहिं राधे, राधे मेरी राधे॥

भावार्थ—हे प्रेमामृत की सिंधु स्वरूपा श्रीराधे! तुम रसिक शेखर श्यामसुंदर के रँग में रँगी हुई हो। अपने दिव्य गुणों से गर्वीली बनी हुई राधे! तुम्हें देखकर रसिक रँगीले श्यामसुन्दर भी अपनी देह-सुध को विस्मृत कर देते हैं। श्रीकृष्ण की मुरली उनके हाथ से खिसक जाती

है। मुरली में तुम्हारे नाम एवं गुणों को गाते रहते हैं। उन्हें एक क्षण को भी तुम्हारे बिना अच्छा नहीं लगता। जब कभी तुम मानिनी बनकर प्रियतम से मान करती हो तो ब्रह्म श्रीकृष्ण तुम्हारी मनुहार करते हैं। प्रियतम तुम्हारे चरणों को पकड़कर हे राधे! कहकर रो पड़ते हैं। राधे! श्रीकृष्ण रास-रस को तभी प्राप्त कर सकते हैं, जब तुम कृपा कर उन्हें प्रदान करती हो। वे अपना मुकुट उतारकर तुम्हारे चरणों में रख देते हैं। तुम्हारी सेवा प्राप्त करने की लालसा प्रकट करते हैं। नेत्रों में जल भरकर श्रीहरि सखियों से अनुनय-विनय करते रहते हैं। तुम्हारा दर्शन प्राप्त करने के लिये श्रीकृष्ण सखियों के ऋणी बन जाते हैं। ब्रजरस के रसिक ही इस रस को समझ सकते हैं।

८६

भोरी भारी प्यारी, मोहे मन बनवारी।
अगनित रति दउँ वारी, अस बरसाने वारी॥
जब कबहूँ नथवारी, निकले ब्रज असवारी।
जय बोलें बनवारी, अस बरसाने वारी॥

बैठें जब सुकुमारी, सिंहासन पर प्यारी।
पग चापैं बनवारी, अस बरसाने वारी॥
जब करें मान प्यारी, दृग जल भरि बनवारी।
कर पुनि पुनि मनुहारी, अस बरसाने वारी॥
लखि लखि छवि सुकुमारी, भूलें सुधि बनवारी।
पुनि पुनि कह बलिहारी, अस मम 'कृपालु' प्यारी॥

भावार्थ—भोली भाली राधा श्रीकृष्ण के मन को मोहित करने वाली हैं। बरसाने वाली श्रीराधा पर असंख्य रति निछावर की जा सकती हैं। नसिका में नथ धारण करने वाली राधा की जब ब्रज में सवारी निकलती है तब वन में विचरण करने वाले श्रीकृष्ण उनकी जय जयकार करते हैं। जब सुकुमारी राधा सिंहासन पर विराजमान होती हैं तब श्रीकृष्ण उनके चरणों को दबाते हैं।। जब कभी मानिनी राधा प्रियतम से मान ठानती हैं तब नेत्रों में जल भरकर श्रीकृष्ण बार-बार उन्हें मनाते हैं। सुकुमारी राधा की छवि को देखकर श्रीकृष्ण अपनी सुधबुध भूल ज़ाते हैं। श्री राधा पर वे बार-बार बलिहार जाते हैं 'कृपालु' कहते हैं कि मेरी श्रीराधा ऐसी गुन गर्वीली हैं।

८७

रसहुँ सरस रस प्यारी, प्यारी प्यारी प्यारी।
कहत 'रसो वै सः' श्रुति चारी,
रस स्वरूप बनवारी, प्यारी प्यारी प्यारी।
सोई भिक्षुक बनि बनवारी,
चह ब्रज रस ढिग प्यारी, प्यारी प्यारी प्यारी।
लिय अगनित अवतार मुरारी,
रहे असुर संहारी, प्यारी प्यारी प्यारी।
ब्रज रस पाय रसिक बनवारी,
बनि गये रासबिहारी, प्यारी प्यारी प्यारी।
लह्यो रास-रस तब बनवारी,
कियो कृपा जब प्यारी, प्यारी प्यारी प्यारी।
राधे नाम जपत बनवारी,
ध्यावत छवि नित प्यारी, प्यारी प्यारी प्यारी।
श्रुति कह शक्तिमान बनवारी,
शक्ति ह्लादिनी प्यारी, प्यारी प्यारी प्यारी।
महाभावरूपिणि सुकुमारी,
मादनाख्य रति वारी, प्यारी प्यारी प्यारी।

मादन रस न पाव बनवारी,
याते अनुगत प्यारी, प्यारी प्यारी प्यारी।
रस को दे 'कृपालु' रस प्यारी,
बलिहारी बलिहारी, प्यारी प्यारी प्यारी॥

भावार्थ—रस-स्वरूप श्रीकृष्ण से भी अधिक रसमयी श्रीराधा हैं। चारों वेद ब्रह्म श्रीकृष्ण को रस स्वरूप बनाते हैं। वे ही रस-स्वरूप श्रीकृष्ण भिखारी बनकर श्रीराधा के निकट ब्रजरस की याचना करते हैं। असंख्य अवतार धारण कर श्रीकृष्ण ने केवल राक्षसों का नाश ही किया। श्रीराधा से ब्रजरस प्राप्त कर वे रास-बिहारी की उपाधि से विभूषित हो गये। यह रास-रस श्रीकृष्ण को तब ही प्राप्त हुआ जब उन पर श्रीराधा की कृपा हुई। श्रीकृष्ण निरन्तर श्रीराधा के नाम का जप करते हैं एवं राधा की ही छवि का ध्यान करते हैं। वेद कहता है कि श्रीकृष्ण शक्तिमान हैं। उन्हीं की ह्लादिनी शक्ति श्रीराधा हैं। श्रीराधा मादन महाभाव की अधिष्ठात्री हैं। श्रीकृष्ण को मादन रस प्राप्त नहीं है इसीलिए वे सदा राधा के अनुचर बने रहते हैं। 'कृपालु' कहते हैं कि रस रूप कृष्ण को रस प्रदान करने वाली राधा पर मैं बलिहार जाता हूँ।

८८

रूप अगाधे राधे, राधे मेरी राधे।
कनक मुकुट सोहे सिर राधे,
मुकुट मणिन दुति राधे, राधे मेरी राधे।
चमचम चमक चन्द्रिका, राधे,
पुनि लर मुक्तन राधे, राधे मेरी राधे।
बिंदी भाल लाल भल राधे,
कर्णफूल श्रुति राधे, राधे मेरी राधे।
कजरारे दृग काजर राधे,
भोरी चितवनि राधे, राधे मेरी राधे।
नासा नथ बेसर दुति राधे,
मृदु मुसुकनि मुख राधे, राधे मेरी राधे।
कर कंकन मुँदरिन दुति राधे,
करतल मेंहदी राधे, राधे मेरी राधे।
नील वसन कंचुकि छवि राधे,
लर मोतिन उर राधे, राधे मेरी राधे।
कनकन किंकिनि पायल राधे,
अँगुरिन बिछुवनि राधे, राधे मेरी राधे।

चरण कमल दस नख मणि राधे,
पग जावक लग राधे, राधे मेरी राधे।
छवि 'कृपालु' मोहति मन राधे,
मोहनहूँ को राधे, राधे मेरी राधे॥

भावार्थ—हे रूप की सिंधु श्रीराधे! तुम्हारे मस्तक पर स्वर्ण का मुकुट शोभा पाता है। उस मुकुट में मणियों का प्रकाश है। चन्द्रिका चमचमा रही है। चन्द्रिका पर मोतियों की लड़ शोभित है। मस्तक पर लाल रँग की सुन्दर बिंदी है। कानों में कर्णफूल शोभा पा रहे हैं। कजरारे नेत्रों में काजल लगाया गया है। नेत्रों की चितवनि अत्यन्त भोली है। नासिका में नथ एवं बुलाक चमक रही है। मुख पर मन्द मुस्कान है। हाथों में कंकण एवं अँगूठियाँ सुशोभित हैं। हस्त-कमल के निचले भाग में मेंहदी का लाल रंग बड़ा भला प्रतीत हो रहा है। नीले रंग का परिधान धारण किया है वक्षःस्थल पर कंचुकी है। हृदय पर मोतियों की मालायें है। कमर पर स्वर्ण-किंकिणी चरणों में पायल बज रही है। चरणों की उंगलियों में बिछुये धारण किये हैं। चरण-कमलों के दस नख मणि के समान चमक रहे हैं। चरणों में अरुण मिहावर लगाया गया है। श्रीराधा की

यह सुंदर श्रृंगार माधुरी मोहन कृष्ण के भी मन को मोहित कर लेती है।

८९

सदा सुहागिनि श्यामा, श्यामा मेरी श्यामा।
शीश मुकुट मणि मंडित श्यामा,
चुनरी चमकति श्यामा, श्यामा मेरी श्यामा।
चमचम चमक चन्द्रिका श्यामा,
दुति लर मोतिन श्यामा, श्यामा मेरी श्यामा।
सरस रसीले नैनन श्यामा,
आँजे अंजन श्यामा, श्यामा मेरी श्यामा।
कर्णफूल चमकत श्रुति श्यामा,
नथ बेसर दुति श्यामा, श्यामा मेरी श्यामा।
लखि चितवनि मुसुकनि पिय श्यामा,
मुर्छित छिति गिर श्यामा, श्यामा मेरी श्यामा।
उर कंचुकि कटि लहँगा श्यामा,
मणिन माल गल श्यामा, श्यामा मेरी श्यामा।
कनकन कंकन किंकिनि श्यामा,
कर चूरिन दुति श्यामा, श्यामा मेरी श्यामा।

रतन जटित पग पायल श्यामा,
अँगुरिन बिछुवनि श्यामा, श्यामा मेरी श्यामा।
लखि सोरह सिँगार पिय श्यामा,
कह बलिहारी श्यामा, श्यामा मेरी श्यामा।
शिवहूँ बने शिवानी श्यामा,
आये सखि बिच श्यामा, श्यामा मेरी श्यामा।
लखत 'कृपालु' शिवानी श्यामा,
हँसति शिवानी श्यामा, श्यामा मेरी श्यामा॥

भावार्थ—मेरी श्रीराधा सदा सौभाग्य शालिनी हैं। सिर पर मणि जटित मुकुट शोभा पा रहा है। चुनरी भी चमक रही है। चन्द्रिका चमचमा रही है उस पर मोतियों की लड़ भी चमक रही है। अत्यन्त सरस रसपूर्ण नेत्रों में अंजन लगाया है। कानों में कर्णफूल चमक रहे हैं। नासिका में नथ एवं बुलाक की चमक है। श्रीराधा की दृष्टि एवं मुस्कान के माधुर्य को सह न सकने के कारण श्रीकृष्ण मूर्छित होकर पृथ्वी पर गिर जाते हैं। वक्षस्थल पर कंचुकी एवं कटि पर लहंगा है। गले में मणियों की मालायें हैं स्वर्ण के कंकण एवं किंकिणी की दुति झलमला रही है। हाथों में चूड़ियों की चमक है। रत्न जड़ित पायल चरणों

में सुशोभित है। चरणों की उंगलियों में बिछुए हैं। सोलह श्रृंगार युक्त श्री राधा की इस छवि को देखकर प्रियतम कृष्ण बलिहार जाते हैं। भगवान शिव भी गोपी का रूप धारण कर श्रीराधा की सखियों में सम्मिलित हो गये। 'कृपालु' कहते हैं कि गोपी रूपधारी शिव को देखकर शिवानी पार्वती हँस पड़ी।

९०

भोरी भोरी राधा, गोरी गोरी राधा।
पिय चित चोरी राधा, वो री मोरी राधा॥
सिर शीश फूल राधा, भल चूनरि सिर राधा।
माथे बिन्दी राधा, वो री मोरी राधा॥
कानन कुंडल राधा, नासा बेसर राधा।
नथ मोतिन लर राधा, वो री मोरी राधा॥
दोउ कर कंकन राधा, कर सोह चुरी राधा।
मणिमय पहुँची राधा, वोरी मोरी राधा॥
गल मुक्त माल राधा, दुलरी तिलरी राधा।
उर कंचुकि छवि राधा, वो री मोरी राधा॥

कटि मणि किंकिणि राधा, नीलांबर छवि राधा।
चरनन नूपुर राधा, वो री मोरी राधा॥
कर मेंहदी छवि राधा, पग जावक भल राधा।
पग बिछुवनि छवि राधा, वो री मोरी राधा॥
पिय जपत नाम राधा, पिय गावत गुन राधा।
पिय ध्यावत छवि राधा, वो री मोरी राधा॥
हैं प्रेम रूप राधा, हैं रूप रूप राधा।
हैं राधा सम राधा, वो री मोरी राधा॥
पिय चापत पग राधा, पिय रिझवत नित राधा।
पिय रोम रोम राधा, वो री 'कृपालु' राधा॥

भावार्थ—मेरी राधा अत्यन्त भोली भाली गौरवर्ण की एवं प्रियतम के चित्त को चुराने वाली हैं। श्रीराधा के सिर पर शीशफूल एवं चुनरी सुशोभित है। ललाट पर लाल बिंदी है। राधा के कानों में कुंडल एवं नासिका में बेसर है। नथ में मोतियों की लड़ है। राधा के दोनों हाथों में कंकण हैं चूड़ियाँ हैं तथा मणि-मंडित पहुँची भी हैं। राधा के गले में मोतियों की मालायें हैं, दुलरी एवं तिलरी हैं। हृदय पर कंचुकी छवि पा रही है। कमर पर मणियों से युक्त किंकिणी है। नीले रंग का परिधान है। चरणों में नूपुर

ध्वनित हो रहे हैं। कर-तल मेंहदी से अरुण हो रहे हैं। चरणों में सुन्दर मिहावर लगा है। उंगलियों में बिछुए शोभा पा रहे हैं। प्रियतम कृष्ण राधा का ही नाम जपते हैं। मुरली में राधा का ही गुणगान करते हैं। नेत्रों में राधा की ही छवि धारण करते हैं। राधा प्रेम एवं रूप का साक्षात् स्वरूप ही हैं। राधा के समान राधा ही हैं। प्रियतम कृष्ण राधा के चरणों को दबाते हैं। निरन्तर राधा को ही रिझाते रहते हैं। प्रियतम के रोम-रोम में राधा समाई हुई हैं। मेरी श्रीराधा ऐसी गरिमामयी हैं।

९१

बलिहार गौर सरकार, जेहि चाकर नंद कुमार।
विधि हरि हर कर जयकार, सोइ मम वृषभानुदुलार॥
आनँदघन कीर्तिकुमार, आनँदघन तन सुकुमार।
तनु दामिनि दुति अनुहार, सोइ मम वृषभानुदुलार॥
जेहि स्वागत कर रिझवार, लखि पुनि पुनि कह बलिहार।
पायो न पार श्रुति चार, सोइ मम वृषभानुदुलार॥

जेहि सँग कोटिन ब्रज नार, सेवत नित भानुदुलार।
जेहि छवि पर छवि बलिहार, सोइ मम वृषभानुदुलार॥
जेहि पग धर सिर रिझवार, रिझवत नित नंदकुमार।
बनि मनिहारिनि लिलिहार, सोइ मम वृषभानुदुलार॥
धरि अगनित तनु रिझवार, नहिं पायो जाको पार।
जेहि डर-डर नंदकुमार, सोइ मम वृषभानुदुलार॥
जेहि पग चापत रिझवार, धर मुकुट चरण सुकुमार।
जेहि आरति श्याम उतार, सोइ मम वृषभानुदुलार॥
आगे चल भानुदुलार, उनके पाछे ब्रज नार।
उनके पाछे रिझवार, सोइ मम वृषभानुदुलार॥
जेहि कृपा चहत रिझवार, लहि महल टहल बलिहार।
मुर्छित लखि छवि सुकुमार, सोइ मम वृषभानुदुलार॥
जेहि तनु बह ब्रज रस धार, जेहि छाया पर रति वार।
जो प्रेम रूप रस सार, सोइ मम 'कृपालु' सुकुमार॥

भावार्थ—गौरवर्ण वाली श्रीराधा पर मैं बलिहार जाता हूँ। श्रीकृष्ण इनकी दासता करते हैं। ब्रह्मा, विष्णु एवं शिव जिसकी सदैव ही जय जयकार करते हैं-वे ही वृषभानु दुलारी मेरी स्वामिनी हैं। आनँदघन स्वरूप कीर्ति कुमारी का सुकुमार शरीर भी आनन्दघनमय ही है। इनके शरीर

शरीर का वर्ण बिजली की चमक की ही भाँति है। श्रीकृष्ण जिनका स्वागत करने को तत्पर रहते हैं। जिन्हें देखकर वे बार-बार बलिहार जाते हैं चारों वेद जिनकी महिमा का अन्त नहीं जान सके, वे ही वृषभानुनन्दिनी मेरी स्वामिनी हैं। जिनके साथ-साथ सदैव कोटि-कोटि ब्रजगोपियाँ रहती हैं। ये निरन्तर इनकी सेवा में रत रहती हैं। जिसकी छवि पर छवि भी बलिहार जाती है। वे ही श्रीराधा मेरी स्वामिनी हैं। जिनके चरणों में श्रीकृष्ण भी अपना मस्तक रखते हैं श्रीकृष्ण निरन्तर जिन्हें रिझाते रहते हैं। श्रीराधा को प्रसन्न करने हेतु श्रीहरि कभी तो मनिहारिनि बनते हैं, कभी लिलिहारिनि। असंख्य रूप धारण कर भी श्रीकृष्ण ने जिनकी लीला का अन्त नहीं पाया वे ही वृषभानुनन्दिनी मेरी स्वामिनी हैं। जिसके भय से श्रीकृष्ण भी भयभीत होते हैं।

श्यामसुंदर जिनके चरणों को दबाते रहते हैं। जिनके सुकुमार चरणों में अपना मुकुट रखकर श्यामसुंदर आरती उतारते हैं वे ही श्रीराधा मेरी स्वामिनी हैं। आगे-आगे श्रीराधा चलती हैं, उनके पीछे ब्रजगोपियाँ तत्पश्चात् श्रीकृष्ण चलते

हैं, ऐसी वृषभानुनन्दिनी मेरी स्वामिनी हैं। महलों में सेवा-रत रहकर श्रीकृष्ण जिनकी कृपा की लालसा रखते हैं। जिनकी रूप माधुरी से आकर्षित मूर्छित श्रीकृष्ण पृथ्वी पर गिर पड़ते हैं, वे ही श्रीराधा मेरी स्वामिनी हैं। जिनके शरीर से निरन्तर ब्रजरस की धारा प्रवाहित होती रहती है। जिनके सुन्दर शरीर की छाया पर ही रति को न्यौछावर किया जा सकता है जो प्रेम रूप एवं रस की सार-स्वरूपा हैं वे ही सुकुमारी राधा मेरी स्वामिनी हैं।

९२

रसिकन जीवन राधा, गोपी जन धन राधा।
जीवन जीवन राधा, राधा राधा राधा॥
अवढर दानी राधा, ब्रज रसखानी राधा।
ब्रज महरानी राधा, राधा राधा राधा॥
हैं प्रेम धनी राधा, हैं रूप धनी राधा।
हैं कृपा धनी राधा, राधा राधा राधा॥
हैं दीनबन्धु राधा, पतितन पावनि राधा।
करुणा कारिणि राधा, राधा राधा राधा॥

हैं महाभाव राधा, हैं आह्लादिनि राधा।
हैं वरदायिनि राधा, राधा राधा राधा॥
हैं गजगामिनि राधा, छवि अभिरामिनि राधा।
श्यामहुँ स्वामिनि राधा, राधा राधा राधा॥
हरि गावत गुन राधा, हरि ध्यावत छवि राधा।
हरि सेवत नित राधा, राधा राधा राधा॥
हरि चापत पग राधा, हरि तकत भृकुटि राधा।
हरि रिझवत नित राधा, राधा राधा राधा॥
हैं पूर्ण ब्रह्म राधा, हरि आराधित राधा।
हरि प्राणेश्वरि राधा, राधा 'कृपालु' राधा॥

भावार्थ—श्रीराधा रसिकों की जीवन स्वरूपा हैं। गोपीजनों की सर्वस्व हैं। सम्पूर्ण जीवों को भी जीवन प्रदान करनेवाली है। उदार हृदया राधा दान देते समय कभी पात्रता का विचार नहीं करतीं। श्रीराधा ब्रजरस की खान हैं। श्री राधा ही ब्रजमंडल की महारानी हैं। श्रीराधा प्रेम, रूप एवं कृपा रूपी धन से धनी हैं। श्रीराधा दीनों पर ही विशेष रूप से कृपा करती हैं। पतितों को पावन करने वाली श्रीराधा ही हैं। श्री राधा अत्यन्त ही करुणामयी हैं। श्री राधा महाभाव स्वरूपिणी हैं। श्रीकृष्ण की आह्लादिनी

शक्ति हैं। जीवों पर द्रवित होकर वर देने वाली श्रीराधा ही हैं। श्रीराधा मतवाले गजराज की सी गति वाली हैं। उनकी छवि अत्यन्त ही मनोहारिणी है। श्रीराधा श्रीकृष्ण की भी स्वामिनी हैं। श्रीकृष्ण निरन्तर श्रीराधा के गुणों का गान करते हैं। श्रीराधा की ही छवि का ध्यान करते हैं। निरन्तर श्रीराधा की सेवा में रत रहते हैं। श्रीकृष्ण श्रीराधा के चरणों का संवाहन करते हैं श्रीराधा की भृकुटि को ही ताकते रहते हैं। श्रीकृष्ण अनेक प्रकार से श्रीराधा को प्रसन्न करने की चेष्टा करते हैं। श्रीराधा ब्रह्मस्वरूपा हैं, श्रीराधा श्रीहरि द्वारा आराधित हैं।

कहाँ तक कहूँ श्रीराधा तो श्रीकृष्ण के प्राणों की अधिष्ठात्री देवी ही हैं।

९३

मम अलबेली सरकार, मम श्री वृषभानु दुलार।
मम प्रेम रूप रस सार, तव महिमा अपरंपार॥
तुम स्वामिनि नंद कुमार, तुम मादन रस साकार।
तुम करुणा की भंडार, तव महिमा अपरंपार॥

तुम पतितन सुनत पुकार, तुम दीनन की रखवार।
तुम अधम उधारन हार, तव महिमा अपरंपार॥
तुम ही जग सर्जनि हार, तुम ही जग पालनि हार।
तुम ही कर जग संहार, तव महिमा अपरंपार॥
तव ध्यान धरत रिझवार, गुन गावत नंदकुमार।
तव कर हरि जय जय कार, तव महिमा अपरंपार॥
तव पग चापत रिझवार, तव छवि लखि छवि बलिहार।
तव आरति श्याम उतार, तव महिमा अपरंपार॥
तुम महाभाव साकार, तुम आत्मा नंदकुमार।
तुम प्राण प्राण ब्रजनार, तव महिमा अपरंपार॥
तुम पर अगनित रति वार, तुम पर गिरिधर बलिहार।
तुम पर वारी ब्रजनार, तव महिमा अपरंपार॥
तुम शरणागत रखवार, तुम ब्रज रस बाँटनि हार।
तुम बिनु कारण कर प्यार, तुम पर 'कृपालु' बलिहार॥

भावार्थ—हे मेरी अलबेली वृषभानुदुलारी! तुम प्रेम, रूप एवं रस की सार सर्वस्व स्वरूपा हो। तुम्हारी महिमा का कोई अन्त नहीं पा सकता। तुम श्रीकृष्ण की स्वामिनी हो। मादन-रस की साकार प्रतिमा हो। तुम अत्यन्त ही करुणामयी हो। तुम अनन्त महिमामयी हो। तुम पतित-

बलि बिछुवनि छवि छविदार, बलि पद नख मणि रिझवार।
बलि तनु बह ब्रज रस धार, बलि बलि 'कृपालु' सरकार॥

भावार्थ—अलबेली सरकार श्रीराधा पर मैं बलिहार जाता हूँ। भोली भाली भानुनन्दिनी पर मैं बलिहार जाता हूँ। श्रीराधा के सोलह शृंगार पर मैं बलिहार जाता हूँ। सुकुमारी राधा की सदा ही विजय हो। सिर के शीशफूल की बलिहारी है। सुमनों से सुसज्जित वेणी की बलिहारी है। जरी से युक्त किनारी वाली चुनरी की बलिहारी है। सुकुमारी राधा जय को प्राप्त हों। ललाट की लाल बिन्दी की बलिहारी है। कानों के कर्णफूल की बलिहारी है कजरारे नेत्रों में डाले हुए काजल की भी बलिहारी है। सुकुमारी राधा की सदा ही जय हो। जिनकी जादू भरी चितवन को देखकर नंदनन्दन मूर्छित हो जाते हैं। मुस्कान का जादू तो और भी विलक्षण है सुकुमारी राधा की सदा ही जय हो। नासिका की बेसर की बलिहारी है। अत्यन्त सुन्दर नथ की बलिहारी है। मोतियों की सुन्दर लड़ की बलिहारी है सुकुमारी राधा की जय हो। मणियों के कंकणों की बलिहारी है सुन्दर चूड़ियों की बलिहारी है। हाथ की उंगलियों की

अँगूठियों की बलिहारी है। सुकुमारी राधा की जय हो। छवि से युक्त मणि-जटित पहुँचियों की बलिहारी है। भुजाओं के बाजूबन्द की शोभा की बलिहारी है। करतल की सुन्दर संवारी हुई मेंहदी की बलिहारी है। सुकुमारी राधा की सदा ही जय हो। हृदय पर झूलते हुए भाँति-भाँति की मणियों के हार की बलिहारी है। दुलरी, तिलरी की बलिहारी है। वक्षस्थल पर धारण की हुई छवि से युक्त कंचुकी की बलिहारी है। सुकुमारी राधा की सदा ही जय हो। अंगों पर धारण किये हुए नीले वस्त्र की बलिहारी है। सुन्दर मणियों से जड़ी हुई किंकिणी की बलिहारी है। चरणों की पायल की झनकार की बलिहारी है। सुंदर बिछुओं की छवि की बलिहारी है। चरणों के नख-मणियों की बलिहारी है। श्रीराधा के उस दिव्य वपु की बलिहारी है जिससे ब्रजरस की धारा निरन्तर प्रवाहित होती रहती है। कृपामयी श्रीराधा की बलिहारी है।

९५

मेरी बरसाने वारी प्यारी, प्यारी प्यारी प्यारी।
प्राननप्यारेहुँ प्राननप्यारी,
मेरी वृषभानुदुलारी, प्यारी प्यारी प्यारी।
जब जब निकले प्यारी सवारी,
पिय बोलें जय जय प्यारी, प्यारी प्यारी प्यारी।
जहँ जहँ चरन धरत निज प्यारी,
तहँ तहँ सिर बनवारी, प्यारी प्यारी प्यारी।
जब चह रास करन बनवारी,
मुकुट धरत पग प्यारी, प्यारी प्यारी प्यारी।
लखि सोरह सिँगार सुकुमारी,
कह बलिहार बिहारी, प्यारी प्यारी प्यारी।
प्यारी पाछे गोप कुमारी,
तिन पाछे बनवारी, प्यारी प्यारी प्यारी।
जब जब रूठति भानुदुलारी,
धरत वेष पिय प्यारी, प्यारी प्यारी प्यारी।
जेहि डर डरत ब्रह्म बनवारी,
सोइ 'कृपालु' मम प्यारी, प्यारी प्यारी प्यारी।

भावार्थ—मेरी बरसाने वाली वृषभानुनन्दिनी प्राण प्यारे कृष्ण को प्राणाधिक प्रिय हैं। जब श्रीराधा की सवारी निकलती है तब श्रीकृष्ण जय जयकार करते हैं। श्रीराधा जहाँ जहाँ चरण रखती हैं वहाँ वहाँ श्रीकृष्ण अपना मुकुट युक्त मस्तक रखते हैं। श्रीकृष्ण की जब रास करने की इच्छा होती है तो श्रीराधा के चरणों में अपना मुकुट रखते हैं। सुकुमारी राधा का सोलह शृंगार देखकर श्रीकृष्ण बलिहार जाते हैं। श्रीराधा के पीछे ब्रजगोपियाँ चलती हैं एवं उनके पीछे-पीछे श्रीकृष्ण चलते हैं। जब-जब श्रीराधा रूठती हैं तब-तब सखी वेष धारण कर प्रिया की समीपता प्राप्त करते हैं। ब्रह्म श्रीकृष्ण जिसके भय से भयभीत रहते हैं वही राधा मेरी स्वामिनी हैं।

९६

मेरी प्यारी जू रँगीली महल वारी।
वारी वारी जाऊँ वारी बरसाने वारी।
प्यारी प्यारी अति भोरी भारी सुकुमारी।
वारी बनवारी जापै अस छवि प्यारी।

जब चलैं सजि ब्रजनारी सँग प्यारी।
कह बलिहारी बलिहारी बनवारी।
जब कुंज सेज पौढ़ैं प्यारी।
चापैं पग ललितादिक नारी।
तब ललचावैं लखि बनवारी।
सोचैं चापन कहँ पग प्यारी।
टेढ़ो मुख करि सब ब्रजनारी।
दिखराव अँगूठा बनवारी।
पुनि पुनि कर जोरैं बनवारी।
तब कृपामयी सब ब्रजनारी।
पिय को बुलाय लें ब्रजनारी।
चापैं 'कृपालु' पिय पग प्यारी॥

भावार्थ—महलों वाली, रँगीली बरसाने-वाली राधा पर मैं बलिहार जाता हूँ। सुकुमारी राधा अत्यन्त ही भोली भाली हैं। उनकी छवि इतनी मनोहारिणी है कि श्यामसुन्दर भी उन पर अपना सर्वस्व निछावर करते हैं। सोलह श्रृंगार धारणकर ब्रजगोपियों के साथ जब श्रीराधा चलती हैं नंदनंदन उस समय बलिहार बलिहार कह उठते हैं सखियों द्वारा सुसज्जित सेज पर जब

श्रीराधा शयन करती हैं, ललिता आदि सखियों को चरण दबाते देखकर लाल ललचाते हैं। वे भी श्रीराधा के चरण दबाने की लालसा करते हैं। श्रीराधा की सखियाँ उस समय टेढ़ा मुख कर उन्हें अँगूठा दिखाकर खिझाती हैं। श्यामसुन्दर पुनः पुनः हाथ जोड़कर सखियों से प्रार्थना करते हैं, तब कृपामयी ब्रजगोपियाँ उन्हें अन्तःपुर में बुलाकर अपनी सखी राधा की चरण-सेवा उन्हें प्रदान करती हैं।

९७

वारी वारी वारी छवि राधे, राधे राधे राधे।
सत चित आनँदघन तन राधे,
कनक मुकुट सिर राधे, राधे राधे राधे।
चंपक वरनि गौर तनु राधे,
मोहति मोहन राधे, राधे राधे राधे।
सिर झिलमिल चूनरि छवि राधे,
शीशफूल भल राधे, राधे राधे राधे।

घुँघुरारी वर वेणी राधे,
सुघर चंद्रिका राधे, राधे राधे राधे।
कानन कर्णफूल भल राधे,
माथे बिंदी राधे, राधे राधे राधे।
अति मतवारे नैनन राधे,
मधुर बिलोकनि राधे, राधे राधे राधे।
नथ बेसर नासा भल राधे,
मृदु मुसुकनि मुख राधे, राधे राधे राधे।
गर दुलरी तिलरी लर राधे,
हार मणिन छवि राधे, राधे राधे राधे।
नील बसन कर कंकन राधे,
चूरिन चमकति राधे, राधे राधे राधे।
कर अँगुरिन मुँदरिन दुति राधे,
मेंहदी करतल राधे, राधे राधे राधे।
कटि किंकिनि पग पायल राधे,
अँगुरिन बिछुवनि राधे, राधे राधे राधे।
अरुण मिहावरि चरनन राधे,
लजत हंस गति राधे, राधे राधे राधे।
रोम रोम चुये ब्रजरस राधे,
पियें रसिकजन राधे, राधे राधे राधे।

करहु कृपालु कृपा अब राधे,
तुम 'कृपालु' पर राधे, राधे राधे राधे।

भावार्थ—श्रीराधे! तुम्हारी छवि पर मैं बलिहार जाता हूँ। तुम्हारा शरीर सच्चिदानंद घनमय है। सिर पर स्वर्ण का मुकुट शोभित है। चम्पक पुष्प के समान अपने गौर-वर्ण के तन से मन-मोहन कृष्ण के मन को भी मोहित कर लेती हो। सिर पर चुनरी झिलमिला रही है। शीशफूल की शोभा न्यारी ही है। सुन्दर घुँघराली वेणी है। चन्द्रिका की छवि न्यारी है। कानों में कर्णफूल एवं माथे पर बिन्दी है। मतवाले नेत्रों की चितवनि बाँकी ही है। नथ एवं बेसर नासिका में शोभा पा रही है। मुख पर मधुर मुस्कान है। गले में दुलरी एवं तिलरी की लड़ तथा मणियों के हार शोभा पा रहे हैं। नीला वस्त्र अंगों पर छविमान है। हाथों में कंकण एवं चूड़ियों की चमक है। हाथ में अँगूठियों की चमक एवं करतल में मेंहदी लगी है। कटि में किंकिणी एवं पैरों में पायल तथा उंगलियों में बिछुए शोभा पा रहे हैं। लाल मिहावर चरणों में लगाया गया है मतवाली चाल हंस को लज्जित करती है। श्रीराधा के रोम-रोम से ब्रजरस

टपकता रहता है। जिसे भक्तगण पान करते हैं। हे कृपामयी राधे। अब तो 'कृपालु' पर भी कृपा करो।

९८

चलो आली देखें लाली झुलन बहार,
झूलें झूला लाली झुलवहिं रिझवार।
झूला डर्‍यो गहवर कुंज मझार,
रिमझिम रिमझिम परत फुहार।
गावें मिलि ब्रजनार राग मलार,
बाजे वीणा वेणु ढप ढोल इकसार।
कूके पिक नाचे मोर पंख पसार,
फूलें फूल चंपा जुही बेला कचनार।
बिच बिच बोलें अलि मिलि बलिहार,
बरसावे कुसुम कदंबनि डार।
जड़ तरुगन तन पुलक अपार,
चेतन खग मृग जड़ अनुहार।
श्यामा श्याम बाम सुधिं देह बिसार,
लखत 'कृपालु' शिव गोपी तनु धार।

भावार्थ—एक सखी दूसरी सखी से कहती है–हे सखी! चलो श्रीराधा का झूलन उत्सव देखें। श्रीराधा झूला झूल रही हैं और कृष्ण झुला रहे हैं। गह्वर-वन की किसी कुंज में वृक्ष की डाल पर झूला पड़ा है। वर्षा की फुहारें पड़ रही हैं। ब्रज-गोपियाँ मल्हार राग गा रही हैं। वीणा, वेणु ढप एवं ढोल आदि वाद्य एक स्वर से बज रहे हैं। कोयल कुहू कुहू की ध्वनि कर रही है। मयूर पंख फैलाकर नृत्य कर रहा है। चम्पा, जुही, बेला एवं कचनार के फूल-फूल रहे हैं। बीच-बीच में सखियाँ मिलकर 'बलिहार' 'बलिहार' बोल उठती हैं। कदम्ब के वृक्ष की डाल से पुष्पों की वर्षा सी हो रही है। जड़ वृक्षों के शरीर में भी रोमांच छा रहा है।

झूले के दृश्य को देखकर जो चेतन पक्षी एवं मृग थे, वे जड़ की भाँति स्तब्ध रह गये। स्वयं श्यामा-श्याम एवं उनकी सखियाँ भी शरीर की सुध-बुध भूल गये। योगी राज शिव इस अद्भुत लीला को गोपी रूप धारण कर देख रहे हैं।

९९

हाय मोरा पिया बिनु जिया घबराय,
रहि नहिं जाय, काऊ कहि नहिं जाय।
जब ते लखी मैं सखि छवि बलभाय,
तब ते न इक पल कल कहुँ पाय।
कहा करूँ कहाँ जावुँ कोउ तो बताय,
जित देखुँ तित सोइ सुरति लखाय।
तन धन परिजन सुख नहिं भाय,
भरि भरि दृग अँसुवन झरि लाय।
दिन महँ छिन छिन विरह सताय,
करवट बदलत रैन बिताय।
पुनि पुनि उठत हूक हिय हाय,
जिउँ नहिं मरूँ नहिं तलफुँ सदाय।
काउ सों कहन की भी बात नहिं आय,
काउ सों कहूँ तो होय और हँसाय।
रोम रोम साँवरी सुरति रहि छाय,
और और आवै सुधि जो बिसराय।
मन नहिं मानै गइ हारि समुझाय,
तू ही बताय कछु याय उपाय।

एक बार, आय सोइ छवि दिखराय,
जाके तू 'कृपालु' समुझाय ढिग वाय।

भावार्थ—कोई विरहिणी अपनी सखी से कह रही है–प्रियतम के बिना मेरा हृदय व्याकुल हो रहा है। मैं उनके बिना रह नहीं पाती। इस प्रेम-पीड़ा को किसी से कह भी नहीं सकती। जब से मैंने श्रीकृष्ण का दर्शन किया है, मेरी यह दशा हो गई है। मुझे कौन बताये कि मैं क्या करूँ? कहाँ जाऊँ? जिधर भी दृष्टि डालती हूँ, वही छवि दिखाई देती है। शरीर का सुख मुझे सुहाता नहीं। धन एवं परिवारी-जन भी मुझे नहीं अच्छे लगते। बार-बार नेत्रों में जल भर आता है। दिन तो विरह की व्यथा सहते हुए व्यतीत होता है, रात्रि करवट बदलते हुए समाप्त हो जाती है। हृदय में हूक सी उठती है। न तो मैं जीवित हूँ, न मृतक ही हूँ। अपनी इस दशा को किसी से कह भी नहीं सकती। यदि किसी से कहूँगी तो सुनकर लोग मेरी हँसी ही उड़ायेंगे। मेरे रोम-रोम में श्यामसुन्दर की छवि समा गई है। भुलाना चाहती हूँ और भी स्मरण होता है। इस मन को समझाकर थक गई किंतु यह मेरी नहीं सुनता। हे

सखी! तुम श्यामसुन्दर को समझाना कि वे केवल एक बार मेरे निकट आकर अपनी वही छवि मुझे पुनः दिखा दें।

१००

एक बात पूछूँ प्यारी साँची बतराय,
मैं तो तोरी साँची सखी मोते न छुपाय।
आजु काल तेरो हाल अटपट आय,
कभु मौन धारे तोहिं दीखे न सुनाय।
कभु लखे इकटक टकटकी लाय,
कभु जनु योगी बनि ध्यान लगाय।
कभु तोरा तनु काँपे कभु बिलखाय,
कभु तोरे रोम रोम पुलक लखाय।
कभु दृग आनँद जल बरसाय,
कभु रोये कभु हँसे कभु बलि जाय।
कभु करे मान कभु आपुहीं मनाय,
कभु गिरे भू पै कहि मुख हाय हाय।
प्यारी कह तोहिं सखि कैसे समुझाय,
प्रेम रोग ऐसो तू न समुझि सकाय।

स्वाद न बताये जैसे गूंगा गुड़ खाय,
ऐसे सहि जाय प्रेम कहि नहिं जाय।
मोते तू बताय चाहे मोते न बताय,
जान्यो री 'कृपालु' गयो भाय बलभाय।

भावार्थ—श्रीराधा की किसी सखी ने उनसे प्रश्न किया—हे राधे! मैं तुमसे एक बात जानना चाहती हूँ। सच बताना। मैं तो तुम्हारी अन्तरंग सखी हूँ मुझसे कुछ न छिपाना। तुम्हारी कुछ विचित्र ही दशा दिखाई देती है। कभी तो तुम बिलकुल मौन धारण कर लेती हो। ऐसा प्रतीत होता है कि न कुछ देखती हो न सुनती हो। कभी टकटकी बाँधकर देखती ही रहती हो। कभी योगी की भाँति ध्यान लगाती हो। कभी तुम्हारा शरीर काँपने लगता है तो कभी व्याकुल होकर बिलखती हो। कभी तुम्हारा रोम-रोम रोमांचित हो उठता है। कभी नेत्रों से आनन्द-जल की वर्षा होती है। कभी रोती हो, कभी हँसती हो, कभी बलिहार जाती हो। कभी मान करती हो तो कभी स्वयं ही मनाती हो। कभी मुख से हाय हाय कर पृथ्वी पर गिर जाती हो। श्रीराधा ने उत्तर दिया—हे सखी! मैं तुझे